अक्टूबर 2019 - मार्च 2020
वर्ष - 18 अंक - 1

सुगन्ध

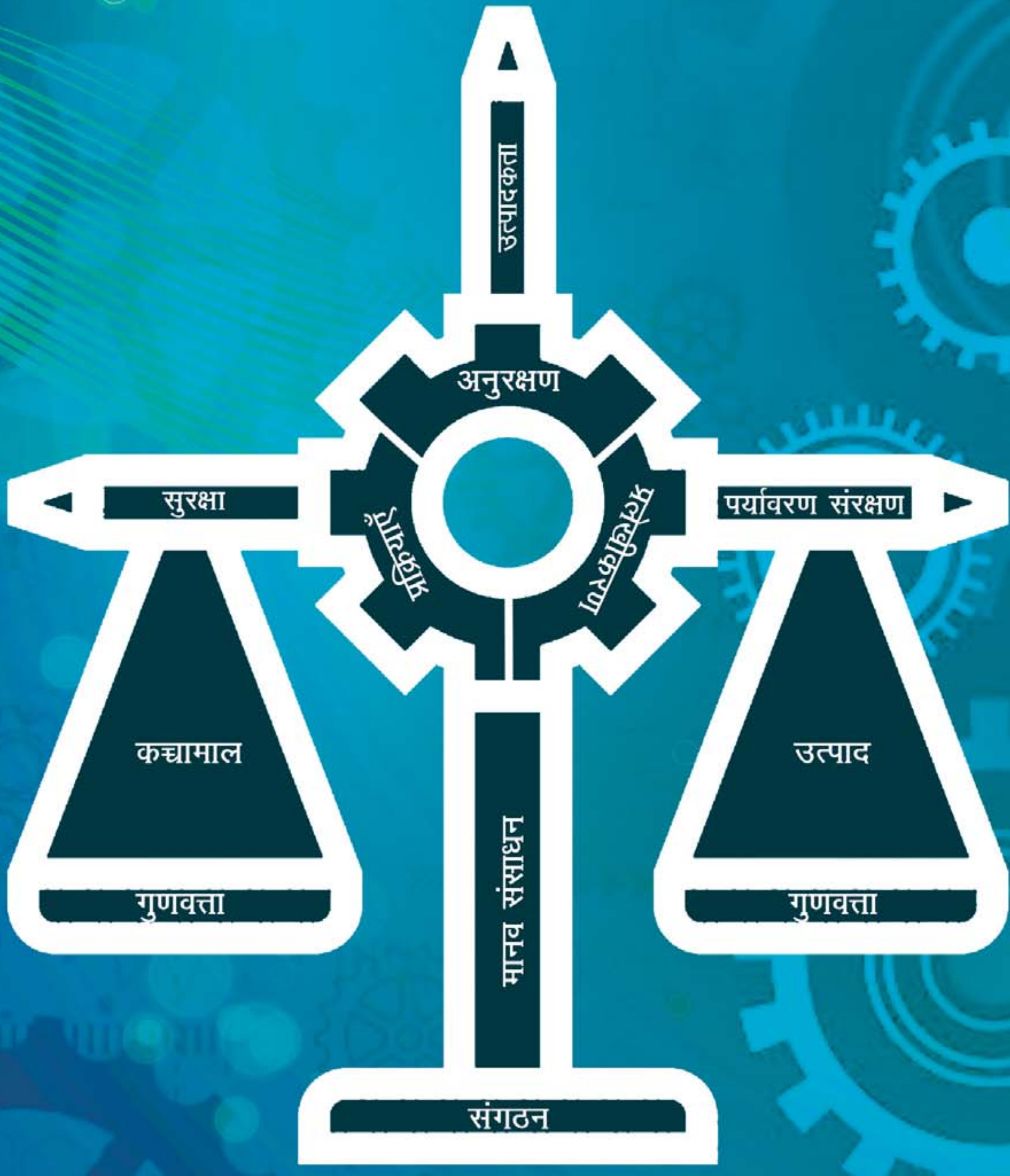

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड
की गृह-पत्रिका

गणतंत्र दिवस समारोह 2020 में मार्चपास्ट की सलामी लेते हुए
अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री पी के रथ

राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण पुरस्कार 2019 के तहत प्रथम पुरस्कार ग्रहण करते हुए
अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री पी के रथ

अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक
राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड
विशाखपट्टणम

संदेश

अनुशासन हमारी असफलताओं और सफलताओं की गाथाओं को सृजित करने का मुख्य कारक होता है। अतः तकनीकी अनुशासन जैसे विशेष प्रश्न पर विमर्श करना एक बहुत ही सकारात्मक पहल है। यह औद्योगिक संगठनों में काम करने वाले सभी लोगों के लिए एक प्रेरणादायी विषय है। जानकर हर्षित हूँ कि हमारे संगठन के राजभाषा विभाग द्वारा नियमित रूप से प्रकाशित होने वाली गृह-पत्रिका 'सुगंध' का मार्च, 2020 अंक 'इस्पात उद्योग के परिप्रेक्ष्य में तकनीकी अनुशासन - क्यों और कैसे' विषय को समर्पित है।

मेरा मानना है कि अपने कार्यक्षेत्र की परितः परिस्थितियों एवं उपलब्ध संसाधन एवं तकनीकों की जानकारी के नियमतः अनुपालन से बेहतर तकनीकी अनुशासन बनाए रखा जा सकता है, जो किसी भी संगठन के लिए सर्वथा लाभदायी है। ऐसे समसामयिक मुद्दे पर विशेषांक प्रकाशित करना प्रशंसनीय है। आशा है, पूर्व की भाँति यह अंक भी पठनीय व संग्रहणीय होगा।

इस प्रयास हेतु राजभाषा विभाग को बधाई एवं शुभकामनाएँ।

(प्रदोष कुमार रथ)

दिनांकः 28.03.2020

निदेशक (कार्मिक)
राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड
विशाखपट्टणम

संदेश

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड-विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र की हिंदी गृह-पत्रिका 'सुगंध' का नवीनतम अंक पूर्व की भाँति परंपरागत रूप से इस बार भी तकनीकी विषय पर प्रकाशित हो रहा है। इस अंक का विषय 'इस्पात उद्योग में तकनीकी अनुशासन - क्यों और कैसे' वर्तमान में तो प्रासंगिक है ही, आगे भी रहेगा। परंतु यह इसलिए अभी और महत्वपूर्ण हो गया है, क्योंकि अभी इस्पात उद्योग बहुत ही कठिन चुनौतियों के दौर से गुजर रहा है और लागत से लेकर लाभदायिकता तक के मुद्दे इस उद्योग की प्रमुख कार्यनीतियों के हिस्सा हैं।

तकनीकी साहित्य के विकास में संगठन का राजभाषा विभाग हमेशा से सकारात्मक कार्य करता रहा है। इस प्रकार के विषयों पर आधारित प्रकाशन से 'सुगंध' की गरिमा और स्वीकार्यता बढ़ेगी। मुझे आशा है कि इस प्रयास से राजभाषा हिंदी के क्षेत्र का विस्तार होगा और तकनीकी विषयों से जुड़ी पठनीय सामग्री दूर-दराज के क्षेत्रों तक सरल हिंदी में उपलब्ध हो सकेगी।

इस प्रयास के लिए मैं राजभाषा विभाग की प्रशंसा करता हूँ और सुगंध के निरंतर विकास की कामना करता हूँ।

(किशोर चंद्र दास)

दिनांकः 28.03.2020

अपने खोखलेपन को जीतना होगा.....

अक्सर इतिहास को हम बीती बातों के रूप में स्वीकार करते हैं। यह कुछ हद तक सच भी है, इतिहास बीतता जरूर है, लेकिन वह सदा के लिए बीत जाए, यह जरूरी नहीं। वह हममें उमड़ता-घुमड़ता रहता है और उससे नित-प्रतिदिन साक्षात्कार करना और अपने आप से विमर्श करना होता है। कहने का मतलब हमारी गुलामी के लगभग हजार साल अभी बीते नहीं हैं, बल्कि हममें खप-पच गए हैं। ऐसा भी नहीं है कि हम उससे उबरने का प्रयास नहीं करते, बल्कि उबरते-उबरते अपनी गुलामी की बुनी जंजीरों में पुनः उलझ जाते हैं। यही कारण है कि आज तक हम एक स्वतंत्र चिंतन आधारित राष्ट्र नहीं बन पाए।

इसका कारण यह है कि जब दुनिया मानवीय मूल्यों वाले राष्ट्र के लिए संघर्ष कर रही थी, उस समय हम विखंडित समाज और कबिलाई संस्कृति के पोषक बने हुए थे। जब दुनिया विज्ञान की परतों को खोलते हुए ठोस वैज्ञानिकता की ओर अग्रसर हो रही थी, तब हम अंधविश्वास और पाखंड के सब्जबाग में विचरण कर रहे थे और अपने अतीत की दया, करुणा, सौहार्द्र पर आधारित अध्यात्म, लोकहितकारी शिक्षा, समाजोपयोगी चिंतन, ज्ञान-विज्ञान आधारित जीवनशैली की आहुतियाँ दे रहे थे या यूँ कहें कि उन्हें भुना-भुना कर खा रहे थे। साथ ही अपनी गलतियों को छुपाने के लिए पश्चिमी सभ्यता को भोग-विलासी बताकर अपने आप को एक कोटरे में बंद भी कर लिया था। लेकिन अब नींद से जागने के बाद वही पश्चिम हमारे लिए विकास का मापदंड बना हुआ है।

यहाँ यह कहना आवश्यक है कि कोई समाज व व्यक्ति यदि रचनात्मकता अथवा सृजन से दूर होता है तो वह जंगली सी असुरक्षाओं और हिंसात्मक दौर का अंश बन जाता है, जिससे उस समाज में शोषक प्रवृत्तियों का बोलबाला हो जाता है और वह समाज हमेशा अपने अंतःकलह से ग्रस्त रहता है।

अंग्रेजी हुकूमत से आजाद होते ही हम पंडित नेहरू जैसे युगद्रष्टा की अगुवाई में अनेक अंतर्विरोधों के बाद भी औद्योगिकीकरण और आधुनिकता की ओर बढ़ने लगे थे। लेकिन माँग और आपूर्ति की खाई बड़ी होने के कारण हम धीरे-धीरे 'आयात' आधारित विकास की ओर बढ़ने एवं आयात को ही विकास मानने लगे और इस आयात के चक्कर में हम आसान रास्तों पर चलने के आदी तथा कर्जदार एवं परजीवी बनने लगे। इस संस्कृति ने हमसे वस्तुओं और प्रौद्योगिकी के साथ-साथ भाषा का भी आयात कराया और उस विकास से कदम-ताल करने के चक्कर में हमने अपनी भाषा आधारित शिक्षा व्यवस्था को दरकिनार कर दिया। परिणामतः धीरे-धीरे हमारी शिक्षा व्यवस्था अंग्रेजीमय हो गई और साधन-संपन्न लोग अंग्रेज बनते चले गए।

आज हमारी नई पीढ़ी हमें कोसने लगी है। वह अपनी महत्वाकांक्षाओं को पश्चिम से ऊपर ले जाना चाहती है। देश के भीतर अवसरों के अभाव ने वह अमेरीका सहित न जाने कितने राष्ट्रों के निर्माण में सहयोग दे रही है। उसके सपनों के भारत में विज्ञान की ऊँचाइयाँ और चिंतन में समृद्ध व सशक्त भारत की परिकल्पना होने के बावजूद भी उसके लिए स्वतंत्र विचारों वाले अवसरों के भारी अभाव का खोखलापन है।

हमें इस खोखलेपन को जीतना ही होगा, तभी हम एक पूर्ण संप्रभुता-संपन्न राष्ट्र की ओर आगे बढ़ सकेंगे। जब हम अपने भीतर झाँकते हैं तो भाषायी स्तर पर अपनी राजभाषा को बहुत बेहतर स्थिति में नहीं पाते हैं और शिक्षा, साहित्य, विज्ञान, तकनीक आदि के क्षेत्र में यह स्थिति दिन-प्रतिदिन और भी निराशाजनक बनती जा रही है। हालाँकि संचार, मनोरंजन, वैश्विक संबंध आदि के क्षेत्र में तो हिंदी ने अभूतपूर्व विकास किया है, लेकिन यह मात्र बाह्य अलंकरण सा प्रतीत होता है। हमें अपनी राजभाषा को इस अलंकरण की स्थिति से बचाने और उसकी जड़ों को गहराई तक मजबूत करने के लिए अभी बहुत कुछ करना है। हिंदी और भारतीयता को अक्षुण्ण बनाने हेतु हिंदी को ज्ञान-विज्ञान, प्रयोगशाला और अनुसंधान की भाषा बनाना आवश्यक है। वैज्ञानिक अभिव्यक्ति और चिंतन की भाषा के रूप में इसे विकसित करना होगा। एक राष्ट्र के रूप में हमें हिंदी को विश्वविद्यालय स्तर पर प्रौद्योगिकी व वैज्ञानिक पठन-पाठन का माध्यम बनाना होगा। उसके सर्वांगीण विकास के लिए उसे जनमानस की चेतना एवं हृदयंगम भाव में स्थापित करना होगा, जो निरंतर दुर्गम व श्रमसाध्य बनता जा रहा है।

सुगंध का यह अंक 'इस्पात उद्योग में तकनीकी अनुशासन' विषय को समर्पित है। इसके पीछे उद्देश्य यह है कि विज्ञान व तकनीक से जुड़े विषयों पर यथासंभव चर्चा हो एवं नई पीढ़ी को अधुनातन प्रौद्योगिकी से अवगत कराया जा सके तथा सुधी पाठकों को विषय से संबंधित अपनी सीमा में रहकर कुछ जानकारी मुहैय्या कराई जा सके।

संपादक

विषयसूची

सृजनात्मक स्तंभ

लेख

तकनीकी अनुशासन: लेखापरीक्षा के संदर्भ में	सी ए अजित कुमार गोंड	7
आटोमोबाइल उद्योग एवं इस्पात की गुणवत्ता	श्री विक्रम सिंह	11
तकनीकी अनुशासन: इस्पात उद्योग के संदर्भ में	श्री वी अप्पाजी कुमार	14
इस्पात उद्योग में तकनीकी अनुशासन ...	सुश्री प्रियंका श्रीवास	17
स्वयं की सुरक्षा भी एक तकनीकी अनुशासन	श्री श्याम नारायण श्रीवास्तव	20
तकनीकी अनुशासन: इस्पात उद्योग ...	श्रीमती अयंतिया राय	23
कोविड-19, एक दृष्टिकोण	डॉ माटूरी श्रीनिवास व अन्य	27
गांधी दर्शन में महिला सशक्तीकरण	श्री सुभाष सेतिया	46
जुगलबंदी होली और वसंत की (व्यंग्य)	श्री पूरन सरमा	58
गधा गाथा	श्री सुधीर निगम	62

कहानी

बहाना (लघुकथा)	श्री ऋषिमोहन श्रीवास्तव	22
हाइली ऑब्जेक्शनेबुल मैटर	श्री चित्रेश	42
ईमानदारी बेईमानी से बड़ी (लघुकथा)	श्री ऋषिमोहन श्रीवास्तव	45
मेरे गौरव हैं वे (लघुकथा)	श्री ऋषिमोहन श्रीवास्तव	48
उस घर की आँखों से	श्री रमेश शर्मा	49
कर्ज	डॉ अमिता दुबे	59
समय चक्र	श्रीमती प्रियंका पाठक	65

बाल-सुगन्ध

स्वरोजगार हेतु सामर्थ्य विकास	सुश्री वी दर्शिनी	56
प्रदूषण नियंत्रण में वैयक्तिक भूमिका	सुश्री आकृति इशिका	57

कविता

कुँअर जावेद की गजलें	52-53
डॉ मदन सैनी की कविताएँ	54-55

मानक स्तंभ

गतिविधियाँ	33-40
संगीत सरिता	41
वी एस पी के बढ़ते कदम	
कोक ओवेन बैटरी-5	31-32
अध्यात्म	
दया	51
आओ भाषा सीखें	67
जरा गौर करें	69

'सुगन्ध'

आर आई एन एल की त्रैमासिक गृह-पत्रिका

वर्ष-18 अंक-1 अक्टूबर, 2019-मार्च, 2020

संपादक

ललन कुमार

उप-संपादक

वी सुगुणा

गोपाल

प्रकाशन सहयोग

एम वी पडाल

जी आर ए नायुडु

डॉ जे के एन नाथन

संपादकीय कार्यालय

राजभाषा विभाग

कमरा सं.245, पहला तल

मुख्य प्रशासनिक भवन

विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र

विशाखपट्टणम-530031

दूरभाष व फैक्स: 0891-2518471

मोबाइल: 9989317329 & 9989888457

ई-मेल: vspsugandh@gmail.com, vspsugandh@rediffmail.com

'सुगन्ध' में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं एवं उनके प्रति 'विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र प्रबंधन' जिम्मेदार नहीं है।

'सुगंध' पत्रिका हमारे संगठन के वेबसाइट 'www.vizagsteel.com' के 'Publications' लिंक में भी उपलब्ध है।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक

संगठन की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें 21 दिसंबर, 2019 और 18 मार्च, 2020 को संपन्न हुई, जिनमें पिछली तिमाहियों के दौरान राजभाषा के प्रभावी कार्यान्वयन हेतु संचालित विविध गतिविधियों का विवरण समिति के समक्ष प्रस्तुत किया गया। अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री पी के रथ ने कहा कि ई-ऑफीस में हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग हेतु आवश्यक कदम उठाये जायें। साथ ही बैठक में यह भी निर्णय लिया गया कि फोर्ज्ड व्हील संयंत्र को शामिल करते हुए इस्पात मंत्रालय में लगाये गये आर आई एन एल के बैनर द्विभाषी बनाये जायें। बैठकों में निदेशकगण, कार्यपालक निदेशक गण तथा महाप्रबंधक गण उपस्थित थे। बैठकों का संचालन समिति के सदस्य-सचिव एवं महाप्रबंधक (राजभाषा) व प्रशासन प्रभारी श्री ललन कुमार ने किया।

तकनीकी अनुशासन: लेखापरीक्षा के संदर्भ में

- सी ए अजित कुमार गोंड -

लेखापरीक्षा - अर्थ एवं स्वरूप:

ऑक्सफोर्ड शब्दकोश के अनुसार लेखापरीक्षा का अर्थ 'किसी संस्थान के लेखा तथा खातों का किसी स्वतंत्र व्यक्ति/संस्था द्वारा आधिकारिक निरीक्षण है।' यानि किसी संस्थान ने अपना कार्य निर्धारित मानकों के अनुरूप संपन्न किया है या नहीं, इसकी स्वतंत्र जाँच ही लेखापरीक्षा कहलाती है। निर्धारित मानक नियामक, अनिवार्य अथवा संस्तुति आधारित हो सकते हैं, जिनके अनुपालन का दायित्व संबद्ध संस्थान का होता है, जिसे लेखापरीक्षक अपनी जाँच के दौरान सुनिश्चित करता है। लेखापरीक्षा की निष्पक्षता को सुनिश्चित करने के लिए अनिवार्य है कि लेखापरीक्षक एक कोई स्वतंत्र व्यक्ति अथवा संस्था हो।

यद्यपि लेखापरीक्षा के विभिन्न प्रारूप व प्रकार हैं, तथापि आवश्यकता के आधार पर लेखापरीक्षा का वर्गीकरण निम्नलिखित अनुसार किया जा सकता है:

1. संविधि के अनुसार अनिवार्य।
2. प्रबंधन द्वारा वांछित।

भारतवर्ष में संविधि के अनुसार अनिवार्य लेखापरीक्षा की सूची के अंतर्गत वैधानिक लेखापरीक्षा (कंपनी अधिनियम 2013), कर लेखापरीक्षा (आयकर अधिनियम 1961), समवर्ती लेखापरीक्षा (भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा दिशानिर्देशित), माल व सेवा कर लेखापरीक्षा, लागत लेखापरीक्षा, आंतरिक लेखापरीक्षा इत्यादि शामिल हैं। लेखापरीक्षा सरकारी, निजी, सामूहिक संस्थानों व उद्योगों के आकार के अनुसार अथवा उनसे संबंधित अधिनियम की अपेक्षाओं के अनुरूप अनिवार्य कर दी गई है। चूंकि संविधि के अनुसार अनिवार्य लेखापरीक्षा भारत सरकार के विभिन्न विभागों, नियामकों, संस्थानों, बैंकों आदि में अंशधारकों तथा जनहित में आयोजित की जाती है, इसलिए इन लेखापरीक्षाओं को अधिनियमों द्वारा अनुशासित किया जाता है। संविधि द्वारा अनिवार्य लेखापरीक्षाओं के अलावा प्रबंधन द्वारा उद्योग की स्थिति की समीक्षा हेतु समय-समय पर विभिन्न लेखापरीक्षाओं जैसे तकनीकी लेखा परीक्षा, ऊर्जा लेखापरीक्षा, प्रबंधन लेखापरीक्षा, सुरक्षा लेखापरीक्षा इत्यादि का आयोजन किया जाता है।

लेखापरीक्षा का उद्देश्य:

कोई भी लेखापरीक्षा किसी निर्दिष्ट उद्देश्य से की जाती है। जैसे वैधानिक लेखापरीक्षा कंपनी रजिस्ट्रार में दर्ज सभी कंपनियों के लिए अनिवार्य है तथा लेखापरीक्षक को अपनी लेखापरीक्षा के माध्यम से यह सुनिश्चित करना होता है कि कंपनियों के वित्तीय विवरण से उनके मामलों की 'सही और निष्पक्ष' स्थिति स्पष्ट हो तथा कंपनियों द्वारा कंपनी अधिनियम 2013 की धारा 133 के तहत केंद्र सरकार के अधिसूचित लेखांकन मानकों का अनुपालन हो। निगमित मामले मंत्रालय द्वारा अब तक ऐसे 38 भारतीय लेखांकन मानक अधिसूचित किये जा चुके हैं।

इसी प्रकार आयकर अधिनियम 1961 की धारा 44 ए बी के तहत कर लेखापरीक्षक को यह सुनिश्चित करना होता है कि करदाता द्वारा खाताओं व अभिलेखों की पुस्तकें ठीक से रखी जाएँ, जिनसे सही मायने में करदाता की आय की जानकारी हो। केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड द्वारा निर्दिष्ट करदाताओं के अनुपालनार्थ, आयकर अधिनियम 1961 की धारा 145(2) के तहत 10 आयकर मानक अधिसूचित किये जा चुके हैं।

ऐसे ही लागत लेखापरीक्षा, सचिवीय लेखापरीक्षा, समवर्ती लेखापरीक्षा, सरकारी लेखापरीक्षा जैसी भिन्न-भिन्न लेखापरीक्षाएँ विभिन्न अधिनियमों के अंतर्गत, अधिनियमों अथवा मानकों के अनुपालनार्थ कराई जाती हैं।

लेखापरीक्षा हेतु जिम्मेदार व्यक्ति:

सामान्यत: एक सनदी लेखाकार संविधि द्वारा अनिवार्य या निगमित व संबंधित कानून, प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष कर अधिनियमों में अंकित अधिकतम लेखापरीक्षाओं का संचालन करने में पारंगत होता है। इसलिए उन लेखापरीक्षाओं के संचालन हेतु अधिनियमों में केवल सनदी लेखाकार या सनदी लेखाकार संस्थाओं को निर्धारित किया गया है। कुछ विशेष लेखापरीक्षाओं, जैसे लागत लेखापरीक्षा के लिए लागत व प्रबंधन लेखाकार व सचिवीय लेखापरीक्षा के लिए वैसे ही पेशेवर लेखापरीक्षक निर्धारित किये गये हैं। सभी लेखापरीक्षकों की नियुक्ति से संबंधित नियम कंपनी अधिनियम 2013 में विस्तृत रूप से दिये गये हैं।

लेखापरीक्षा की रिपोर्ट:

किंगस्टन काटन मिल्स कंपनी (सन् 1896) के मामले में लार्ड जस्टिस लोप्स का दिया गया फैसला लेखापरीक्षा के इतिहास में एक ऐतिहासिक निर्णय माना जाता है। लार्ड जस्टिस लोप्स के अनुसार 'लेखापरीक्षक एक सजग प्रहरी है, न कि एक खोजी कुत्ता।' जस्टिस लोप्स के निर्णय ने लेखापरीक्षकों के हितों की रक्षा तो की, लेकिन साथ ही संस्थानों द्वारा निर्मित वित्तीय विवरणों में लेखापरीक्षक के भागीदार होने पर भी रोक लगा दी। अर्थात संस्थानों के कमजोर आंतरिक नियंत्रण व मानकों के अनुपालन को छोड़कर किसी अन्य प्रभावकारी मुद्दों की तरफ ध्यान आकर्षित कराना मात्र एक विकल्प बनकर रह गया, जिससे विगत कई वर्षों में कई नामी-गिरामी संस्थानों के वित्तीय विवरणों में लेखापरीक्षा होने के पश्चात भी धोखाधड़ी और अनियमितताओं के मामले सामने आए।

लेखापरीक्षकों को ज्यादा जिम्मेदार बनाने हेतु अधिनियमों में दिन-प्रतिदिन बदलाव किये गये। वित्तीय विवरण की अनियमितताओं को अनसुना करने के दोषी पाये जाने पर लेखापरीक्षकों के लिए कठोर दंड का प्रावधान भी है। इसी क्रम में सबसे बड़ा बदलाव 56 वर्ष पुराने कंपनी अधिनियम 1956 को कंपनी अधिनियम 2013 में तब्दील करना है। वर्तमान में विभिन्न अधिनियमों की धाराओं के अंतर्गत लेखापरीक्षकों को निम्नलिखित रिपोर्ट प्रस्तुत करने की आवश्यकता है।

1. कंपनी अधिनियम 2013 की धारा 143 के अनुसार निर्दिष्ट कंपनियों की वैधानिक लेखापरीक्षा रिपोर्ट निगमित कार्य मंत्रालय द्वारा जारी कंपनी लेखापरीक्षा रिपोर्ट आदेश 2016 (पूर्व में सी ए आर ओ 2003, सी ए आर ओ 2015 इत्यादि) के अनुरूप देना अनिवार्य है। वैधानिक लेखापरीक्षक को कंपनी अधिनियम 2013 की धारा 143(10) के अनुसार भारतीय सनदी लेखाकार संस्थान द्वारा अधिसूचित 46 लेखापरीक्षा मानकों का अनिवार्यत: अनुपालन करना होता है।
2. कर लेखापरीक्षकों को प्रपत्र 3 सी ए/3 सी बी व 3 सी डी में अनिवार्यत: लेखापरीक्षा रिपोर्ट देना होता है।
3. संविधान के अनुच्छेद 149-151 द्वारा प्रत्यायोजित शक्तियों के आधार पर भारत के नियंत्रक व महालेखापरीक्षक तथा भारतीय लेखापरीक्षा व लेखा विभाग की लेखापरीक्षाओं के अलावा कंपनी अधिनियम 2013 की धारा 146(6) के अनुसार भी सरकारी लेखापरीक्षक पूरक लेखापरीक्षा कर सकते हैं।
4. लागत लेखापरीक्षक द्वारा लागत लेखापरीक्षा रिपोर्ट नियम 2001 के तहत निर्धारित अनुबंध और प्रपत्र सहित रिपोर्ट के प्रारूप में रिपोर्ट दिया जाना अनिवार्य है।
5. सचिवीय लेखापरीक्षक, कंपनी अधिनियम 2013 की धारा 204 के अनुपालनार्थ निर्दिष्ट कंपनियों को सचिवीय लेखापरीक्षा रिपोर्ट जारी करता है।
6. आंतरिक लेखापरीक्षक, भारत के सनदी लेखाकार संस्थान द्वारा सुझाये गये मानकों के आधार पर आंतरिक लेखापरीक्षा की रिपोर्ट बनाता है।

आंतरिक लेखापरीक्षा:

भारत के सनदी लेखाकार संस्थान के अनुसार 'आंतरिक लेखापरीक्षा एक स्वतंत्र प्रबंधन कार्यविधि है, जिसमें एक इकाई में सुधारों हेतु सुझाव देना, उनमें वृद्धि व इकाई के रणनीतिक जोखिम प्रबंधन और आंतरिक नियंत्रण प्रणाली समेत इकाई के समग्र शासन तंत्र को मजबूत करने के दृष्टिगत इकाई के कामकाज का निरंतर और महत्वपूर्ण मूल्यांकन करना शामिल हैं। इस प्रकार आंतरिक लेखापरीक्षा के माध्यम से रिपोर्टिंग में पारदर्शिता का आश्वासन दिया जाता है।'

आंतरिक लेखापरीक्षक संस्थान द्वारा जारी अंतर्राष्ट्रीय पेशेवर अभ्यासों की रूपरेखा के अनुसार 'आंतरिक लेखापरीक्षा एक स्वतंत्र उद्देश्यपूर्ण आश्वासन और परामर्शदात्री गतिविधि है, जिसे संगठन के संचालन में सुधार व मूल्यसंवर्धन हेतु डिजाइन किया गया है।'

आंतरिक लेखापरीक्षा एक परिधिविहीन वृत्त समान है, जहाँ इसकी परिधि में सारी अन्य लेखापरीक्षाएँ समा सकती हैं। फिर भी लेखापरीक्षा की सीमा का अंत नहीं होगा, अर्थात सारी लेखापरीक्षाओं का मेल ही आंतरिक लेखापरीक्षा है। आंतरिक लेखापरीक्षा के अधिकार क्षेत्र असीमित हैं, लेकिन लार्ड जस्टिस लोप्स के निर्णय से बंधे हुए हैं।

आर आई एन एल में आंतरिक लेखापरीक्षा का अनुशासन:

व्यापार का वैश्वीकरण, लेनदेन की बढ़ती जटिलताओं और नए युग की सूचना प्रौद्योगिकी के बुनियादी ढाँचे ने व्यापार एवं वाणिज्य की अवधारणा में क्रांति ला दी है। हालांकि, इस बड़े उतार-चढ़ाव के समानांतर निगमित बोर्ड रूमों को एक और कारक सता रहा है - उसका नाम है 'जोखिम'। यह जोखिम मौद्रिक तरलता, धोखाधड़ी, प्रतिष्ठा, प्रतियोगिता या कोई अन्य रूप में हो सकते हैं। जोखिमों का सामना करने व उसके दुष्प्रभावों को कम करने हेतु प्रबंधन ने बेहतर आंतरिक नियंत्रणों का उपाय किया है। परिणामस्वरूप आंतरिक लेखापरीक्षा पेशेवरों ने भी परंपरागत 'अनुपालन' या 'लेन-देन' जैसी लेखापरीक्षा से हटकर अधिक गतिशील 'रिस्क बेस्ड ऑडिट', कंट्रोल असेसमेंट', कंट्रोल रेशनालाइजेशन' जैसे परिवर्तन किये हैं।

इससे पहले आंतरिक लेखापरीक्षा काफी हद तक स्वैच्छिक थी, और प्रबंधन द्वारा आवश्यकता के आधार पर आंतरिक लेखापरीक्षा आयोजित की जाती थी। हालाँकि अब व्यापार में बढ़ती जटिलताओं के साथ धोखाधड़ी और घोटालों से निपटने के लिए आंतरिक लेखापरीक्षा आवश्यक हो गई है। आंतरिक लेखापरीक्षा को अब

इतना महत्व मिल गया है कि नियामकों द्वारा सूचीबद्ध और अन्य निर्दिष्ट कंपनियों के लिए आंतरिक लेखापरीक्षा आयोजित करना अनिवार्य कर दिया गया है। आंतरिक लेखापरीक्षा ही एकमात्र ऐसी लेखापरीक्षा है, जो संविधि द्वारा अनिवार्य होने के साथ-साथ प्रबंधन द्वारा वांछनीय भी है।

आइए! संविधि की अनिवार्यता विस्तार से समझते हैं। कंपनी नियम लेखा, **2014** के नियम **13** के अनुसार आंतरिक लेखापरीक्षा की अनिवार्यता निम्न प्रकार से है:

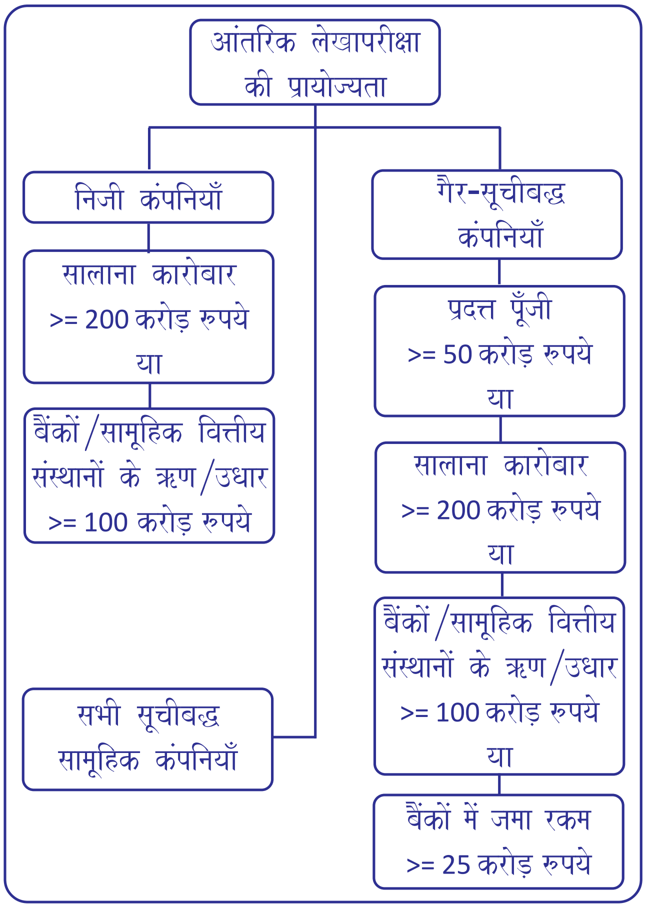

कंपनी अधिनियम **2013** की धारा **138** के अनुसार आंतरिक लेखापरीक्षक कोई सनदी लेखाकार, लागत लेखाकार या फिर बोर्ड द्वारा चयनित अन्य कोई पेशेवर भी हो सकते हैं। आंतरिक लेखापरीक्षक कंपनी के कर्मचारी भी हो सकते हैं। वैधानिक लेखापरीक्षक के मानकों की भांति भारतीय सनदी लेखाकार संस्थान ने आंतरिक लेखापरीक्षकों के अनुपालनार्थ **19** आंतरिक लेखापरीक्षा मानकों को अधिसूचित किया है।

आर आई एन एल में आंतरिक लेखापरीक्षा विभाग का प्रादुर्भाव सन् **1985** में हुआ था, जब कंपनी के ही कर्मचारियों द्वारा आंतरिक लेखापरीक्षा किया जाना शुरु हुआ। लेखापरीक्षकों में कंपनी अधिनियम के नियमानुसार सनदी लेखाकार, लागत लेखाकार, अभियांत्रिकी और प्रौद्योगिकी विषयों में पारंगत कर्मचारियों का चयन किया गया। वैधानिक लेखापरीक्षक के वार्षिक लेखांकन प्रस्तुत करने से पहले आंतरिक लेखापरीक्षकों द्वारा क्लियरेंस दिया जाता है। इस प्रकार आंतरिक लेखापरीक्षकों की पूर्व जाँच से वैधानिक लेखापरीक्षक या सरकारी लेखापरीक्षक को आर आई एन एल के लेखाओं व खातों में किसी विसंगति के मिलने की आशंका नगण्य रह जाती है।

कंपनी अधिनियम **2013** की धारा **177** के अनुसार प्रत्येक कंपनी में एक लेखापरीक्षा समिति का गठन आवश्यक है, जिसका प्राथमिक उद्देश्य वित्तीय रिपोर्टिंग प्रक्रिया, लेखापरीक्षा प्रक्रिया, कंपनी की आंतरिक नियंत्रण प्रणाली और कानूनों और विनियमों के अनुपालन का विवरण प्रदान करना होता है। इस क्रम में समय-समय पर आयोजित आर आई एन एल की लेखापरीक्षा समिति की बैठकों में आंतरिक लेखापरीक्षा में पाये गये महत्वपूर्ण मदों पर चर्चा की जाती है तथा संबंधित विभागाध्यक्षों को समय सीमा के अंदर उनके निपटान हेतु आवश्यक कदम उठाने के लिए दिशानिर्देश जारी किये जाते हैं।

आंतरिक लेखापरीक्षा सुचारू रूप से चलाने एवं लेखापरीक्षा की गुणवत्ता बनाये रखने हेतु लेखापरीक्षा समिति द्वारा समय-समय पर आवश्यक दिशानिर्देश जारी किये जाते हैं। आंतरिक लेखापरीक्षक को लेखापरीक्षा रिपोर्ट देते समय इन दिशानिर्देशों के अनुपालन को सत्यापित करना होता है। इसके अलावा नियमित अंतराल में जारी लेखापरीक्षाओं की समीक्षा तथा महत्वपूर्ण ऑडिट मदों पर चर्चा करने हेतु बैठकें आयोजित की जाती हैं। इन बैठकों में दिन-प्रतिदिन बदल रही लेखापरीक्षा तकनीकों तथा कानूनी ढाँचों में हो रहे बदलावों से लेखापरीक्षकों को अवगत कराया जाता है।

आर आई एन एल में आंतरिक लेखापरीक्षा प्रणाली पर नजर डालेंगे तो पायेंगे कि वित्तीय वर्ष **2018-19** में मात्र लेखापरीक्षकों के पैरा के आधार पर आर आई एन एल को लगभग **16.70** करोड रुपये का प्रत्यक्ष वित्तीय लाभ हुआ।

(**स्रोत:** वार्षिक प्रतिवेदन, आर आई एन एल, वित्त वर्ष **2018-19**, निदेशक उत्तरदायित्व विवरण।)

आर आई एन एल में आंतरिक लेखापरीक्षा की संचालन गतिविधि संक्षिप्त रूप से निम्नानुसार है:

- वार्षिक लेखापरीक्षा कार्यक्रम और लेखापरीक्षाओं की आवृत्ति/व्याप्ति का अनुमोदन वित्तीय वर्ष के आरंभ में लेखापरीक्षा समिति द्वारा दिया जाता है।
- विभागाध्यक्ष द्वारा उपयुक्त लेखापरीक्षकों का चयन करके उन्हें किसी एक विभाग/अनुभाग/शाखा की लेखापरीक्षा का कार्य आवंटित कर दिया जाता है।
- लेखापरीक्षक द्वारा कंपनी की विभिन्न प्रणालियों, कार्यपद्धतियों तथा नीतियों का परीक्षण एवं मूल्यांकन किया जाता है तथा उपयुक्त विकास व सुधार के सुझाव दिये जाते हैं।

- लेखापरीक्षक द्वारा लेखापरीक्षा के दौरान पाये गये मदों पर संबद्ध विभागाध्यक्ष से चर्चा की जाती है एवं आंतरिक लेखापरीक्षा मानकों के अनुपालन सहित विस्तृत लेखापरीक्षा रिपोर्ट तैयार की जाती है।
- लेखापरीक्षक की रिपोर्ट संबद्ध विभागाध्यक्ष के अनुमोदन पश्चात उस विभाग को आवश्यक कार्रवाई हेतु अग्रेषित कर दी जाती है।
- अग्रेषित आंतरिक लेखापरीक्षा मदों पर उचित कार्रवाई के पश्चात ही लेखापरीक्षा मदों का निपटारा किया जाता है।

तकनीकी अनुशासन के अभाव में उत्पन्न होनेवाली समस्याएँ :

हाल ही में धोखाधड़ी का एक बहुत सनसनीखेज मामला देखने में आया, जो पंजाब नेशनल बैंक से संबंधित था, जिसमें अभियुक्त ने अपने भागीदारों तथा बैंक के कुछ भ्रष्ट कर्मचारियों से साठ-गाँठ करके बैंक से फर्जी लेटर ऑफ अंडरटेकिंग जारी करवाया।

लेटर आफ अंडरटेकिंग (एल ओ यू) एक तरह की गारंटी होती है, जिसे एक बैंक दूसरे बैंक को जारी करता है। इसके आधार पर दूसरे बैंक, खाताधारक को पैसा मुहैय्या करा देते हैं। वित्तीय भाषा में कहा जाय तो एल ओ यू एक सुरक्षित संदेश प्रणाली है, जो स्विफ्ट के जरिए भेजा जाता है। स्विफ्ट, एक तरह का मैसेज भेजने और प्राप्त करने से संबंधित नेटवर्क है, जिसका उपयोग दुनिया भर के बैंकों और अन्य वित्तीय सेवा प्रदाता संस्थाओं द्वारा किया जाता है। स्विफ्ट के जरिए पैसे का स्थानांतरण संबंधी संदेश का वैल्यू बैंक द्वारा दूसरे पक्ष को जारी एक डिमांड ड्राफ्ट के बराबर होता है।

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि खाताधारक यदि ऋण चुकाने में चूक जाता है, तो एल ओ यू जारी करने वाले बैंक की यह जिम्मेदारी होती है कि वह संबंधित बैंक को बकायों का भुगतान करे। सामान्यत: एल ओ यू कोर बैंकिंग सिस्टम वाले बैंकों की लेखा प्रणाली के माध्यम से भेजा जाता है, जिससे ग्राहक की वहियों के साथ-साथ आवश्यक वहियों में भी यह लेन-देन दर्ज हो जाता है। परंतु उपर्युक्त मामले में लेखाप्रणाली को धता बताते हुए बैंक के भ्रष्ट अधिकारियों ने बैंक की कोर लेखा प्रणाली से बाहर एल ओ यू जारी किया, जिसका भुगतान प्राप्तकर्ता बैंक द्वारा लाभार्थी को कर दिया गया। लेखापरीक्षक यहीं पर मात खा गया। चूँकि लेखापरीक्षक बैंक द्वारा निर्मित लेखाओं व खातों की जाँच कर रहा था, अत: उसने यह मान लिया कि बैंक के सारे लेन-देन बैंक द्वारा निर्मित खातों में अंकित हैं। अब प्रश्न यह उठता है कि बैंक के दिशानिर्देशों के अनुसार किसी बैंक द्वारा जारी एल ओ यू की गणना क्या बैंक के किसी भी खाते या वही में नहीं होती? भारतीय रिजर्व बैंक के दिशानिर्देशों के अनुसार किसी बैंक द्वारा जारी किए गए एल ओ यू तब तक देनदारियों की सूची में नहीं आते, जब तक ग्राहक उनकी नियत तारीख पर भुगतान में चूक न कर दें। तब तक ऐसी देनदारियों को आकस्मिक देनदारियों की सूची में रखा जाता है। हालाँकि पंजाब नेशनल बैंक के आंतरिक और बाह्य प्रेषण को अभिलेखित करने वाले 'नोस्त्रो लेखा' (NOSTRO ACCOUNT) का एल ओ यू से भुगतान करने वाले बैंकों के खातों के साथ मिलान करके यह पता लगाया जा सकता था कि बैंक की कोर लेखा प्रणाली के बाहर भी एल ओ यू जारी हुए हैं। लेकिन यह मिलान लेखापरीक्षक के अधिकार क्षेत्र से बाहर था। नियामक निकाय के लोग वर्तमान में मामले की जाँच कर रहे हैं, जिसकी रिपोर्ट आनी अभी बाकी है।

सारांश :

यद्यपि लेखापरीक्षा की गुणवत्ता और उत्कृष्टता लेखापरीक्षक के अनुभव और कार्य-कौशल पर ही निर्भर करती है, तथापि नियामकों द्वारा तय मानकों के अनुपालन को दरकिनार नहीं किया जा सकता। अधिसूचित मानकों के अनुसार लेखापरीक्षक द्वारा जाँच के दौरान लेखाओं व खातों में पायी गयी विसंगतियों तथा अनियमितताओं को रिपोर्टिंग प्राधिकरण/प्रबंधन/अंशधारक/वित्तीय विवरणों के पाठकों के संज्ञान में लाना आवश्यक है। अन्यथा विभिन्न अधिनियमों के अंतर्गत लेखापरीक्षक पर अभियोग भी चलाया जा सकता है।

मानकों के अनुपालन को सुनिश्चित करने के साथ-साथ उनका प्रलेखन भी आवश्यक है। वैधानिक लेखापरीक्षा हेतु अधिसूचित मानक 'एस ए 230' तथा आंतरिक लेखापरीक्षा हेतु अधिसूचित मानक 'एस आई ए 330' के अनुसार लेखापरीक्षा में पाये गये मदों तथा लेखापरीक्षक द्वारा जाँच किये गये लेखाओं, खातों तथा साक्ष्यों का प्रलेखन अति आवश्यक है। धोखाधड़ी के मामलों में नियामकों द्वारा विसंगतियों की स्वतंत्र जाँच के दौरान लेखापरीक्षक द्वारा संधारित प्रलेखन ही मानकों व अधिनियमों के अनुरूप लेखापरीक्षक के कर्तव्यों के निष्पादन का साक्ष्य प्रस्तुत करता है।

उन्नत तकनीक और मशीनीकृत व्यापार में विसंगतियों अथवा अनियमितताओं को ढूंढ़ पाना अंधेरे में रास्ता तलाशने जैसा काम है, ऊपर से लेखापरीक्षा के सापेक्ष में अनभिज्ञता तथा इरादतन दुराचार में बहुत ही महीन अंतर माना जाता है। ऐसे में मानकों का सख्त अनुपालन ही लेखापरीक्षक के उत्कृष्ट कार्य निष्पादन के साथ-साथ हितों की रक्षा भी कर सकता है।

- उप प्रबंधक
आंतरिक लेखापरीक्षा व भंडार सत्यापन
राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड
विशाखपट्टणम-530031
मोबाइल: +91 8332959530

ऑटोमोबाइल उद्योग एवं इस्पात की गुणवत्ता

- श्री विक्रम सिंह -

कल्पना कीजिए, जब पहियों की खोज हुई होगी तब अपने आप में वह कितना बड़ा क्रांतिकारी आविष्कार रहा होगा? आज पहियों के बल पर ही दुनिया तेज गति से भाग रही है। अगर पहिया न हुआ होता तो शायद आज भी सब रुका हुआ होता। ऐसा माना जाता है कि सबसे पहले मिट्टी के पहिए बनाए गए होंगे, उसके बाद लकड़ी और लोहे या अन्य धातुओं के पहिए बनने शुरू हुए होंगे।

लौह व इस्पात की खोज के बाद भाप के इंजन का आविष्कार माना जाता है। इंजन की खोज के बाद पहियों की रफ्तार धीरे-धीरे इतनी तेज हो गयी है कि कभी-कभी उसके प्रभाव में मानवता भी कुचली जाती है। लेकिन मानव समाज का यह सबसे बड़ा विकास है कि वह महज चंद घंटों में ही धरती के एक छोर से दूसरी छोर पर पहुँचने लगा है।

इस्पात और पहियों के आविष्कार से ही साइकिल व मोटर साइकिल के निर्माण की परिकल्पना ने समाज के आम आदमी के पैरों को पंख लगा दिए हैं। उद्योगपतियों ने इन परिकल्पनाओं में अपना व मानव विकास के भविष्य की संभावनाओं को तलाशना शुरू कर दिया।

परंतु हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि पहियों के निर्माण से लेकर वैज्ञानिक परिकल्पनाओं को मूर्त रूप देने में इस्पात की बड़ी भूमिका होती है। बड़ी-बड़ी मशीनों एवं प्रतिष्ठानों के निर्माण में भारी मात्रा में इस्पात की खपत होती है। दुनिया के विशाल औद्योगिक व वैज्ञानिक परिवेश को मजबूती प्रदान करने में इस्पात ने बहुत बड़ी भूमिका निभाई है। इसीलिए जब भी किसी देश के विकास का आकलन किया जाता है, तो उस देश के द्वारा प्रतिव्यक्ति इस्पात की खपत का आकलन भी किया जाता है। अर्थात इस्पात की खपत किसी देश के विकास का द्योतक भी होती है।

भारत में जब हीरो कंपनी ने मोटर साइकिल निर्माण कार्य शुरू किया तो इस्पात का प्रयोग इसके कल-पुर्जे बनाने में ही नहीं हुआ, अपितु कारखाना निर्माण में भी भारी मात्रा में हुआ। साथ ही स्थापित मशीनों में भी भारी मात्रा में इस्पात का उपयोग हुआ। भारत आर्थिक रूप से मध्यमवर्गीय एवं नौजवानों का देश है। इसलिए हमारा देश दुपहिया वाहनों का विश्व में दूसरा सबसे बड़ा बाजार व उत्पादक है। पिछले वित्त वर्ष में हमारे देश ने कुल **21.18** मिलियन यूनिट दुपहिया वाहनों की बिक्री की है।

वैश्वीकरण से पूर्व भारत में राजदूत, एस्कार्ट एवं इनफील्ड जैसी कुछ गिनी-चुनी कंपनियाँ दुपहिया वाहनों के कारोबार में शामिल थीं। लेकिन डॉ मनमोहन सिंह के वित्तमंत्रित्व काल में जिस तरह से भारत के दुपहिया वाहनों के बाजार को खोल दिया गया और देशी-विदेशी संस्थाओं ने इसमें दिलचस्पी दिखाई, उससे भारत का बाजार बहुत आकर्षक हो गया। हालाँकि कारोबारियों की संख्या व प्रतिस्पर्धा में बढ़ोत्तरी का लाभ देश व समाज को मिला। साथ ही दुपहिया वाहन निर्माताओं को लागत में कमी लाने के प्रयास करने पड़े व अनेक अनुषंगी कारोबारियों को मौका देना पड़ा।

इन्हीं परिस्थितियों ने 'मुंजाल शोवा कंपनी' को शॉक अब्जार्वर बनाने का अवसर दिया। वैसे तो 'मुंजाल शोवा कंपनी' हीरो समूह के साथ मिलकर लगभग **45** वर्षों से कारोबार कर रही है और **1.3** बिलियन अमेरीकी डालर के विनिर्माण समूह का सदस्य है। **1985** के दौरान गुरुग्राम में स्थापित यह कंपनी जापान के शोवा कार्पोरेशन के वित्तीय व तकनीकी सहयोग से स्थापित हुई और अब इसकी अन्य इकाइयाँ मानेसर व हरिद्वार में भी हैं।

मोटर साइकिल के शॉक अब्जार्वर अथवा शॉकर जो बाइक की अगली व पिछली पहियों की धुरी से ऊपर की ओर फिट किए जाते हैं। मोटर साइकिल पर पड़ने वाले पूरे भार को ये अपने ऊपर लिये हुए होते हैं और चालक की मेरुदंड एवं कंधों की हिफाजत की पूरी जिम्मेदारी भी निभाते हैं। साथ ही खराब सड़क में बड़े-बड़े गड्ढों से तालमेल करते हुए चालक की सुरक्षा करते हैं।

'मुंजाल शोवा लिमिटेड' कंपनी में बनने वाले उच्च गुणवत्ता के टिकाऊ शॉकर की माँग भारत के अलावा जापान, जर्मनी और संयुक्त राज्य अमेरीका के प्रमुख ऑटोमोबाइल कंपनियों में भी है। इस कंपनी का ऑटो कंपोनेंट विनिर्माण बाजार में अपना एक मजबूत आधार स्थापित है। यह कंपनी मारुति सुजुकी के अपर सेगमेंट और निर्यात मॉडल की कारों, होंडा सिटी कार, हीरो होंडा मोटर साइकिल की पूरी श्रृंखला, कावासाकी की मोटर साइकिलों एवं काइनेटिक के कल-पुर्जे आदि बनाने का काम करती है। स्कूटर और हीरो रेंज की मिनी मोटर साइकिल और मोपेड और होंडा मोटर साइकिल एंड स्कूटर इंडिया प्राइवेट लिमिटेड के लिए भी यह फ्रंट व रियल डैंपर्स एवं होंडा सिल्स कार के लिए इसने स्ट्रैट्स विकसित किया है। कंपनी ने मारुति उद्योग लिमिटेड के लिए मॉडल सी और एस्टीम डीजल के लिए नए मॉडल स्ट्रैट्स और

विंडो बैलेंसर्स विकसित किया है। कंपनी ने हीरो एक्टिवा और होंडा के जॉय, डॉन, पैशन के नए मॉडलों के लिए फ्रंट फोर्क और रियर कुशन भी विकसित किया है। कंपनी ने मोटर साइकिल सेगमेंट में प्लेजर तथा होंडा मोटर साइकिल एंड स्कूटर इंडिया प्राइवेट लिमिटेड की शाइन मॉडल के लिए हाइटेक फ्रंट फोर्क और रियर कुशन भी विकसित किया है। इस प्रकार से कंपनी ने अपनी शॉकर की उत्पादन क्षमता को 12905300 नग से बढ़ाकर 15600000 नग और विंडो बैलेंसर की क्षमता 969000 नग से बढ़ाकर 1006500 नग कर लिया है।

यथा विदित है कि एक मोटर बाइक निर्माण में अनेक प्रकार के कल-पुर्जो का इस्तेमाल होता है, जो प्राय: इस्पात अथवा उससे संबंधित धातुओं से बने होते हैं। अत: इसमें कोई अतिशयोक्त नहीं है कि इस्पात की ऑटोमोबाइल उद्योग के विकास में अहम भूमिका है।

मैं अपनी बात को शॉकर के उत्पादन के इर्द-गिर्द रखना चाहता हूँ और शॉकर बनाने में इस्पात की गुणवत्ता व अपनाए जाने वाले तकनीकी अनुशासन तक ही सीमित रखना चाहता हूँ। पाठकों की जानकारी के लिए यह बताना जरूरी है कि एक शॉकर के निर्माण में ही हमें कई सारे कल-पुर्जो का इस्तेमाल करना होता है, जो प्राय: इस्पात के ही बने होते हैं। चाहे वह फ्रंट शॉकर हो या रियर शॉकर। और हाँ... हर कल-पुर्जे के निर्माण में इस्तेमाल होने वाले इस्पात की गुणवत्ता भी भिन्न होती है। जैसे कि फ्रंट शॉकर में एस ए ई 154 और एस ए ई 1536 ग्रेड के फोर्क पाइप एम एस स्टील का प्रयोग होता है, जिसकी रासायनिक गुणधर्मिता इस प्रकार होती है:

कार्बन %	0.39 - 0.47
सिलिकॉन %	0.15 - 0.35
मैंगनीज %	1.37-1.68
फॉस्फोरस %	0.0- 0.03 अधिकतम
यांत्रिक गुणधर्मिता	
टी एस	784.4 N/mm2
हार्डनेस	**24-32** एच आर सी

रियर शॉकर का मुख्य पाइप (एस टी के एम 11 एम) और पिस्टन रॉड (एस 40 सी) श्रेणी के एम एस (इस्पात) से बना होता है। सभी श्रेणियों के इस्पात की अपनी यांत्रिक व रासयनिक गुणता होती है।

मोटे तौर पर हरिद्वार की इकाई में एक दिन में लगभग 19800 फोर्क पाइप, 19800 पिस्टन रॉड, 19800 मुख्य पाइप उपयोग में लाए जाते हैं। एक फोर्क पाइप का वजन लगभग एक किलो ग्राम, पिस्टन रॉड का लगभग 90 ग्राम और मुख्य पाइप का लगभग 70 ग्राम होता है। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि एक वर्ष में कंपनी के सिर्फ एक संयंत्र में ही इस्पात की कितनी मात्रा की खपत होती है।

मुंजाल शोवा लिमिटेड अपने लिए इस्पात 'एस्सार स्टील्स' से खरीदता है। जैसाकि पूर्व में कहा जा चुका है कि कंपनी लगभग सभी दुपहिया एवं चार पहिया वाहनों के शॉकर का उत्पादन करती है। इसलिए भारी मात्रा में स्प्रिंग स्टील की अलग-अलग श्रेणियों का उपयोग भी यहाँ होता है, जैसे कि श्रेणी एस यू पी 7 एन, एस यू पी 7, एस ए ई 9254 आदि।

हालाँकि ऑटोमोबाइल उद्योग वर्तमान में आर्थिक मंदी के दौर से गुजर रहा है। सभी ऑटोमोबाइल कंपनियों ने अपने उत्पादन को घटा दिया है। यह मंदी पिछले एक-डेढ़ साल से ऑटोमोबाइल कंपनियों को बुरी तरह से प्रभावित किया है। टाटा मोटर्स, मारुति, सुजुकी एवं महिंद्रा जैसी बड़ी कंपनियों के शेयरों में भारी गिरावट आई है। यही हाल कुछ दोपहिया वाहन बनाने वाली कंपनियों का भी है।

ऑटोमोबाइल क्षेत्र में आई मंदी का असर इस्पात उत्पादन करने वाली कंपनियों पर भी हुआ होगा, क्योंकि इस्पात का एक बड़ा ग्राहक/उपभोक्ता ऑटोमोबाइल उद्योग भी है। इसका मुख्य कारण यह है कि सरकारी नीति के तहत वर्ष 2020 तक बीएस 4 इंजन की जगह अब बी एस 6 इंजन लाना है। शायद इस वजह से बाजार व ग्राहकों में उदासीनता है। ग्राहक बी एस 6 गाड़ी का इंतजार कर रहे हैं। फिलहाल बी एस 6 गाड़ियों का उत्पादन भी शुरू हो चुका है। मुंजाल शोवा लिमिटेड कंपनी भी बी एस 6 के

मानक वाले शॉकरों का उत्पादन करने जा रही है। बी एस 6 इंजन बी एस 4 इंजन की अपेक्षा सल्फर उत्सर्जन की मात्रा को 5 गुना कम करता है। बी एस 6 लागू होने के बाद डीजल वाहनों से 68% और पेट्रोल कारों से 25 % नाइट्रोजन ऑक्साइड का उत्सर्जन कम होगा और पर्यावरण प्रदूषित नहीं होगा।

मुंजाल शोवा लिमिटेड अपने हर उत्पाद की गुणवत्ता को बनाए रखने के लिए निर्धारित सभी तकनीकी अनुशासनों का अनुपालन करती है। कंपनी का मानना है कि अनुशासन के बिना सारी प्रक्रियाएँ व उत्पादन बेमानी हैं और इससे कंपनी के सभी कार्यकलाप अव्यवस्थित हो सकते हैं। हालाँकि अभी बी एस 6 मानक के वाहनों के लिए शॉकर बनाने में कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, जिनमें से तकनीकी अनुशासन भी एक है। कंपनी का ढाँचा बदल रहा है, उत्पाद बदल रहे हैं। कच्चेमाल की गुणवत्ता में बदलाव हो रहा है, कर्मचारियों को विशेष रूप से प्रशिक्षित करने की आवश्यकता आदि अनेक चुनौतियाँ हैं।

कंपनी को अपने उत्पाद की गुणवत्ता व डिजाइन में जो अहम बदलाव करना पड़ रहा है। वह भी एक तकनीकी अनुशासन से जुड़ा प्रश्न है। इसके लिए कई चुनौतियाँ सामने आ रही हैं। खैर, अच्छे इस्पात से ही अच्छे शॉकर तैयार होते हैं। इसके लिए हमें कई प्रक्रियाओं/कार्यविधियों से गुजरना पड़ता है और इसे पूरा करने के लिए हमें कई सावधानियाँ बरतनी पडती हैं। अर्थात तकनीकी अनुशासनों का पालन करना पड़ता है, जिसमें कल-पुर्जो की गुणवत्ता, असेंब्ली की सही प्रक्रिया व फाइनल जाँच में खरा उतरना आदि पर विशेष अनुशासित रहकर ध्यान देना होता है।

अनुशासन हमारे काम को आसान बनाता है और हमें निश्चित सफलता प्रदान करता है। अनुशासन, आम तौर पर दो प्रकार का होता है। पहला अभिप्रेरित अनुशासन, जिसमें हम दूसरों के द्वारा अनुशासन में रहना सीखते हैं और दूसरा आत्मजन्य अनुशासन, जो स्वयं हमारे मन में जागृत होता है। अनुशासन से तात्पर्य समयबद्धता से भी है, यानी कि मशीनों या उपकरणों का संचालन उनके मानक प्रचालन पद्धतियों (एस ओ पी-स्टैंडर्ड ऑपरेटिंग प्रोसीजर्स) के मुताबिक ही हो। उनके प्रचालन से जुड़ा व्यक्ति यदि अनुशासित है तथा मशीनों का निरोधक अनुरक्षण समयबद्ध अनुशासनयुक्त हो, तभी मशीन/उपकरण हमें वांछित प्रतिफल दे सकते हैं, अन्यथा नहीं। इन सब के बीच सी एल टी आई का अनुशासन भी आता है अैर इससे एक कदम आगे बढ़कर संपूर्ण उत्पादक अनुरक्षण (टी पी एम-टोटल प्रेडक्टिव मेंटेनेंस) की संकल्पना भी अब विकसित हो चुकी है।

संपूर्ण उत्पादक अनुरक्षण - एक परिचय:

संपूर्ण उत्पादक अनुरक्षण मशीनों के समुचित रखरखाव के लिए विकसित की गई एक प्रभावी अनुरक्षण प्रणाली है। इसके तहत समयांतराल एवं उत्पादन अनुसूची का ध्यान रखते हुए सभी प्रणालियों का समग्रता से अनुरक्षण किया जाता है। इससे कर्मचारी की संतुष्टि व मनोबल में वृद्धि होती है। साथ ही कंपनी की उत्पादकता, गुणवत्ता में सुधार होता है। उत्पादन लागत, प्रदायगी समय में सुधार आता है। कुल मिलाकर यह श्रेष्ठ उत्पादन एवं शून्य टूट फूट, त्रुटि, दुर्घटना, अपशिष्ट व उत्सर्जन, दुर्घटना आदि का सिद्धांत है। दरअसल यह एक जापानी पद्धति है और इसके 7 स्तंभ माने जाते हैं। यथा: स्वायत्त रखरखाव, योजनाबद्ध रखरखाव, गुणवत्ता पूर्ण रखरखाव, प्रारंभिक प्रबंधन एवं विकास प्रबंधन, प्रशिक्षण अैर शिक्षा में सुधार, सुरक्षा, स्वास्थ्य और पर्यावरण में सुधार आदि।

सन् 2002 में स्थापित मुंजाल शोवा लिमिटेड कंपनी को अपने अनुशासित व मुस्तैद गतिविधियों के लिए कई राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए हैं, जिनमें जापान से 2014 में टी पी एम उत्कृष्टता पुरस्कार, 2019 में गुरुग्राम में उत्कृष्टता हेतु प्रथम पुरस्कार आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

ऑटोमोबाइल व इस्पात क्षेत्र परस्पर एक दूसरे के पूरक हैं। ऑटोमोबाइल उद्योग की प्रगति में इस्पात उद्योग की प्रगति भी अंतर्निहित है। इसी प्रकार इस्पात उद्योग में अपनाए गए तकनीकी अनुशासन का प्रभाव भी ऑटोमोबाइल क्षेत्र व उसके उत्पादों पर पड़ना स्वाभाविक है। तकनीकी अनुशासन का महत्व तब और बढ़ जाता है जब उत्पाद सीधे जनता के सरोकारों से जुड़ता है एवं उससे मानव जीवन प्रभावित होता है।

शॉकर का उत्पादन एक ऐसा ही उत्पाद है, जिससे मानवीय जीवन के सरोकार जुड़े हैं। हमारे इस उत्पाद पर इस्पात की गुणवत्ता का भी प्रभाव पड़ता है। यदि इस्पात की गुणवत्ता में कोई कमी रह गई हो तो उसका प्रभाव हमारे उत्पाद शॉकर पर जरूर पड़ेगा। हालाँकि वर्तमान में भारत की अर्थव्यवस्था काफी अस्थिरता के दौर से गुजर रही है। इससे इस्पात और ऑटोमोबाइल दोनों क्षेत्र के उद्योग मंदी की मार झेल रहे हैं। आशा है शीघ्र ही हमारे उद्योग इन समस्याओं से उबरेंगे।

- बी-11, टिहरी विस्थापित कॉलोनी,
जवालापुर, हरिद्वार-249407
उत्तराखंड
मोबाइल: +9012275039

तकनीकी अनुशासन : इस्पात उद्योग के संदर्भ में

- श्री बी अप्पाजी कुमार -

जैसे मानव जीवन के लिए अनुशासन बहुत ही महत्वपूर्ण होता है, वैसे किसी उद्योग में भी तकनीकी अनुशासन महत्वपूर्ण होता है। उद्योगों में सही मापदंडों के साथ काम करने पर ही सफलता हासिल होती है। उद्योगों में दो तरह के अनुशासन की आवश्यकता होती है। एक अनुशासन काम करने व कराने वाले कर्मचारियों के व्यक्तिगत अनुशासन से संबंधित है, यानि समयानुसार कार्यस्थल पर आना, समय पर कार्य का निर्वाह करना आदि। दूसरा अनुशासन है तकनीकी अनुशासन।

यह तकनीकी अनुशासन बहुत ही खास है, क्योंकि व्यक्तिगत अनुशासन का उल्लंघन करने पर अपना नुकसान अधिक होता है। तकनीकी अनुशासन का उल्लंघन करने पर उसका दुष्प्रभाव सीधे उत्पादन, उत्पादकता, मशीनरी एवं प्रक्रियाओं पर पड़ता है। हमारी छोटी सी गलती से मशीनरी अस्थायी या फिर स्थायी रूप से खराब भी हो सकती है।

इस्पात उद्योग एक वृहद उद्योग होता है, जिसमें हजारों की संख्या में लोग तरह तरह की मशीनों पर काम करते हैं एवं लाखों टन इस्पात का उत्पादन करते हैं। ऐसे में तकनीकी अनुशासन के उल्लंघन की संभावना भी बनी रहती है। अत: सभी को इसे ध्यान में रखते हुए कार्य करना होता है। वस्तुत: तकनीकी अनुशासन का मतलब सर्वोत्तम तरीकों व सुरक्षा नियमों के साथ कार्य निर्वहण करना होता है।

वर्तमान प्रतिस्पर्द्धात्मक युग में अपना अस्तित्व बनाये रखना सभी उद्योगों के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती बनी हुई है। अपने कार्यों में दक्षता हासिल करना और कम लागत से उत्पादन करना हर इस्पात उद्योग का मुख्य उद्देश्य होता है। इससे उत्पादन तो बढ़ता ही है, साथ ही दुर्घटनाएँ भी नहीं होतीं। तकनीकी अनुशासन का पालन किये बगैर यह संभव नहीं है। हालाँकि इसके भी तकनीकी अनुशासन और तकनीकी दक्षता दो अलग अलग पहलू होते हैं। दोनों को एक नहीं समझना चाहिए। लेकिन फिर भी यह सच है कि तकनीकी दक्षता तकनीकी अनुशासन पर निर्भर करती है।

तकनीकी अनुशासन को कुछ इस तरह परिभाषित किया जा सकता है, 'संयंत्र के प्रति कर्मचारी द्वारा किये जाने वाले हर कार्य को सही पद्धति से पहली बार और हर बार करना ही तकनीकी अनुशासन है।' अपने कार्य में पूर्णदक्षता हासिल करने के लिए यह अत्यंत आवश्यक होता है।

तकनीकी अनुशासन यंत्रों के लिए भी बहुत ही महत्वपूर्ण होता है। हर मशीनरी अथवा यंत्र को उसके लिए बनाये गए डिजाइन अथवा मापदंड के हिसाब से ही प्रचालित करना होता है। अगर उस यंत्र की क्षमता से अधिक लोड डाला जाये तो बहुत बड़ी दुर्घटना हो सकती है। ये मौलिक नियम इस्पात उद्योग के हरेक यंत्र, उपस्कर और मशीनरी पर समान रूप से लागू होते हैं। जिस प्रकार किसी कर्मचारी से आठ घंटे से अधिक काम कराया जाये तो उसकी कार्य दक्षता घट जाती है और कर्मचारी की सेहत पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है। ठीक उसी तरह मशीनरी और यंत्र भी ओवर लोडिंग की वजह से थक जाते हैं और उनके खराब होने की संभावना बढ़ जाती है।

उदाहरण के लिए हम रोलिंग मिल्स के री-हीटिंग फर्नेस को लेते हैं। री-हीटिंग फर्नेस का मुख्य कार्य यह होता है कि बिल्लेट्स यानि कि इस्पात के 125×125 एम एम वाले 10 मीटर लंबे आकार के इस्पात की बल्लियों को गर्म कर उसे सामान्य तापमान से 1180 डिग्री सेल्सियस के उच्च तापमान पर ले जाया जाए, ताकि उसे रोलिंग कर इस्पात के सरिया बनाया जा सके। इस री-हीटिंग फर्नेस के अंदरूनी हिस्से में सिलिका ईंटों की परत चढ़ी होती है। सिलिका ईंटों की ये परतें फर्नेस के बाहरी (इस्पात से बने) ढाँचे को उच्च तापमान से बचाती हैं। यही नहीं इन ईंटों को जोड़ने के लिए सीमेंट जैसे एक खास पदार्थ का इस्तेमाल किया जाता है, जिसमें उच्च तापमान को सहने की क्षमता होती है। लेकिन ये जो सिलिका की ईंटें होती हैं, वे बहुत ही खास स्वभाव की होती हैं। ये बहुत ही उच्च तापमान को सहने की क्षमता रखती हैं। लेकिन इस बात का बिलकुल ध्यान रखना चाहिए कि फर्नेस में गैस का दहन कर जब उसका तापमान बढ़ाया जाता है, तब ये तापमान एकाएक नहीं बढ़ाया जाता है, बल्कि धीरे-धीरे 25 डिग्री सेल्सियस प्रति घंटे की रफ्तार से बढ़ाया जाता है। जैसे ही इसका तापमान 700 डिग्री के पार जाता है, तापमान बढ़ाने की दर में थोड़ी तेजी लाई जाती है। जब फर्नेस का तापमान 1000 डिग्री के ऊपर आ जाता है, इसकी दर में और तेजी लाई जाती है। इस प्रकार इस पूरी प्रक्रिया में कुल 72 घंटे यानि 3 दिन तक लग जाते हैं। अगर इस प्रक्रिया का पालन नहीं करेंगे और उत्पादन शीघ्र शुरू करने के लिए तापमान को तेजी से बढ़ाने की कोशिश करेंगे तो यह तकनीकी अनुशासन के खिलाफ होगा। ऐसा करने पर सिलिका ईंट की पूरी परत खराब होकर उखड़ जायेगी, जिससे संयंत्र को काफी नुकसान होगा।

एक दूसरे उदाहरण के तौर पर रोलिंग के लिए आवश्यक बिल्लेट के तापमान को लेते है। सामान्यत: बिल्लेट को रोलिंग कर वॉयर रॉड बनाने के लिए उसे आवश्यक तापमान तक गर्म करना पड़ता है। यह प्रक्रिया भी फर्नेस के माध्यम से ही की जाती है। जब तक बिल्लेट का तापमान **1150** या उससे ऊपर, यानि **1180** तक नहीं आ जाता, बिल्लेट को रोलरों से रोल नहीं करना चाहिए। क्योंकि **1150** से **1180** के बीच के तापमान पर ही बिल्लेट थोड़ा नरम अवस्था में रहता है और उसे सुरक्षित तरीके से रोल किया जा सकता है। लेकिन कभी कभी ऐसा भी होता है कि मिश्रित गैस का क्लोरिफिक मान घट जाता है, जिससे बिल्लेट का तापमान **1110** या **1120** के आसपास ही रह जाता है। यानि तापमान जल्दी-जल्दी नहीं बढ़ता है और ऐसे में बिल्लेट को फर्नेस के अंदर ही थोड़ा और ज्यादा देर तक गर्म किया जाना चाहिए या फिर गैस की मात्रा बढ़ाई जानी चाहिए। लेकिन कभी कभार ऐसा भी होता है कि जल्दी के चक्कर में **1120-1130** डिग्री सेंटीग्रेड तापमान में भी रोलिंग कर दिया जाता है। इस तापमान पर बिल्लेट सख्त होता है।

ऐसी स्थिति में जब ये बिल्लेट रोलरों से गुजरते हैं, तो उन रोलरों पर बहुत ज्यादा दाब आता है और कभी कभी तो रोलर टूट भी जाते हैं। साथ ही उत्पाद की गुणवत्ता व रोलरों को घुमाने वाले गियर बॉक्स तथा एवं विद्युत मोटरों पर भी दुष्प्रभाव पड़ता है।

एक तीसरे उदाहरण के तौर पर हम संपीडित वायु के इस्तेमाल को लेते हैं। संपीडित वायु का इस्तेमाल मुख्यतया स्वचालन के लिए किया जाता है। इसके अलावा उच्च तापमान वाली जगहों में इस्तेमाल किये जाने वाले इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों को ठंडा रखने, वाइब्रेटर चलाने आदि के लिए इसका उपयोग किया जाता है। स्वचालन में संपीडित वायु का इस्तेमाल न्यूमेटिक सिलिंडरों को चलाने के लिए भी किया जाता है, जिससे स्वचालन की प्रक्रिया संपन्न होती है। उसके साथ ही लाल तप्त सरिया या वॉयर रॉड को ठंडा करने के लिए वाटर बॉक्स का इस्तेमाल होता है, जिसमें डायफ्राम वाल्व का उपयोग किया जाता है और ये भी संपीडित वायु से ही चलते हैं। इन न्यूमेटिक सिलिंडरों को अच्छी तरह चलाने के लिए यह आवश्यक है कि संपीडित वायु का दाब सही मापदंड के अनुरूप हो। लेकिन समस्या तब आती है, जब इस संपीडित वायु का इस्तेमाल सिर्फ ऊपर बताई गई प्रक्रियाओं के अलावा और भी दूसरे कामों के लिए किया जाता है, जैसे फिल्टरों की सफाई, विद्युत मोटरों के बेयरिंग के बढ़ते तापमान को कम करने आदि के लिए डिजाइन में दिए गए निर्देशों से ज्यादा मात्रा में उपकरणों को एक ही पाइपलाइन से जोड़ दिया जाता है। ऐसे में संपीडित वायु का दाब घट जाता है और पाइप लाइन से जुड़े उपकरणों जैसे न्यूमेटिक सिलिंडरों, वाटर बॉक्स आदि को प्रचालित करने हेतु पर्याप्त दाब वाली वायु नहीं मिल पाती और उपकरण ठीक से काम नहीं करते। वाटर बॉक्स या तो खुलते नहीं हैं या फिर पूरे नहीं खुलते। इससे पर्याप्त मात्रा में पानी नहीं आता है और सरिया शीतलन का कार्य ठीक से नहीं हो पाता। ऐसे में सरिया की गुणवत्ता मापदंड के अनुसार नहीं होती और पूरा उत्पाद प्रयोगशाला में परीक्षण के दौरान फेल हो जाता है। इस प्रकार हम देख रहे हैं कि तकनीकी अनुशासन का अनुपालन नहीं करने से हमें काफी भारी मूल्य चुकाना पड़ता है।

इसी तरह गियर बॉक्स के लूब्रिकेशन के लिए एक खास तरह के तेल का इस्तेमाल होता है। इसका तापमान **45** डिग्री के आस पास होना चाहिए। सर्दियों में तेल का तापमान कम हो जाता है तो हीटर चालू कर तापमान को बढ़ाया जाता है और जब गर्मियों में तेल का तापमान अधिक बढ़ जाता है, तो उसे ठंडे पानी की सहायता से ठंडा किया जाता है। यदि ऐसा न हो तो गियरों का लूब्रिकेशन उचित ढंग से नहीं होगा और गियर खराब हो जाएगें।

विद्युत के पॉवर सप्लाई लाइन पर भी उसकी क्षमता तक ही लोड डालना चाहिए। कई बार ऐसा होता है कि विद्युत स्रोतों की क्षमता से ज्यादा लोड कनेक्ट कर दिया जाता है। इससे तार ज्यादा गर्म हो कर जलने लगते हैं और बहुत भारी अग्नि दुर्घटना हो जाती है। संगठनों, शापिंग मालों, बड़ी बड़ी इमारतों आदि में होने वाली अग्नि दुर्घटनाओं का मुख्य कारण यही होता है। अत: इस मामले में हमेशा सावधान रहने की आवश्यकता है।

मैग्नेट क्रेन का इस्तेमाल ब्लूम, बिल्लेट क्वॉयल्स इत्यादि को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने के लिए किया जाता है। इस प्रकार सामान्य इस्तेमाल करने पर इनमें कोई समस्या नहीं आती। लेकिन जब कभी इनका इस्तेमाल रेलवे वैगनों को खींचने के लिए किया जाता है तो ऐसा हम अक्सर यह सोचकर करते हैं कि

क्रेन की रस्सी (सीलिंग) जो इस्पात के तारों से बटी होती है, उस पर कोई बुरा असर नहीं होगा, जो पूर्णत: गलत है। इससे क्रेन की रस्सियों पर अधिक भार पड़ता है और रस्सियों की आयु घट जाती है या फिर रस्सी टूट भी सकती है। इस तरह के तकनीकी उल्लंघनों की सख्त मनाही है।

तकनीकी अनुशासन कार्यपद्धति को सुनिश्चित करती है कि किस तरह यंत्रों पर काम करना है, किस तरह के सुरक्षा उपकरणों का इस्तेमाल करना है, समूह में कार्य करते वक्त किस तरह कार्य का क्रमवार निष्पादन करना है, किस तरह मशीन का अनुरक्षण करना है, कुछ तकनीकी खराबी आने पर किस तरह सावधानी बरतते हुए उसे ठीक करना है, अपने सहकर्मियों से किस तरह तकनीकी जानकारी साझा करना है। यह हमेशा साबित हुआ है कि जो समूह तकनीकी अनुशासन के साथ अपने सहकर्मियों से तकनीकी ज्ञान साझा करते हुए कार्य करता है, उसी समूह का कार्य निष्पादन निश्चित समय पर सुरक्षा के साथ पूरा हो पाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि तकनीकी अनुशासन को आधार स्तंभ बनाकर काम करने पर जटिल से जटिल प्रक्रिया भी बड़ी आसानी से सुरक्षा के साथ संपन्न हो जाती है।

इस्पात संयंत्र में बहुत से विभाग होते हैं। तकनीकी अनुशासन की जब हम बात करते हैं, तो यह सिर्फ यांत्रिक या विद्युत अभियंताओं तक या फिर किसी स्तर विशेष के कर्मचारियों तक ही सीमित नहीं रह जाता। बल्कि यह संयंत्र के समूचे कर्मचारियों, मशीनरियों, कार्य-पद्धतियों एवं लॉजिस्टिक तंत्रों पर भी लागू होता है और सबके सहयोग एवं समग्र प्रयास से कार्यों का निष्पादन होता है। इस प्रकार हर एक अंशधारक को संयंत्र की पद्धतियों अर्थात तकनीकों का ज्ञान ठीक रखना चाहिए। क्योंकि इस्पात संयंत्र में तप्त धातु, जहरीली गैस, रसायन, तप्त कोयला और बड़ी बड़ी मशीनों के साथ काम करना होता है। ऐसे में तकनीकी अनुशासन अपनी अहम भूमिका निभाते हुए मशीनों/प्रक्रियाओं पर कार्य करते वक्त लोगों का मार्ग निर्देशन करता है।

तकनीकी अनुशासन क्यों जरूरी है:

1. यह मशीनों के साथ-साथ उस पर काम करने वाले कर्मचारियों की सुरक्षा के लिए भी बहुत जरूरी है।
2. इससे प्रक्रियाओं का मानक प्रचालन होता है और सभी प्रकार की अनुशासनहीनताओं पर लगाम लगती है और लागत में कमी आती है।
3. इससे गुणवत्ता व प्रक्रियाएँ बेहतर होती हैं और कर्मचारियों
4. संयंत्रों में भर्ती होने वाले नए कर्मचारियों को यह अच्छा अनुशासन सिखाता है।
5. गुणवत्ता अच्छी बनी रहती है, जिससे बाजार में संयंत्र की साख बनी रहती है और उत्पादों की अच्छी माँग भी बनी रहती है।

तकनीकी अनुशासन को कैसे लागू करें:

1. संयंत्र में विभागों के अनुसार हर मशीन और प्रक्रिया के बारे में विस्तृत जानकारी मुहैया कराई जानी चाहिए।
2. सभी को उनके विभाग की मशीनों और प्रक्रियाओं का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।
3. वृत्तिक अनुशासन और तकनीकी अनुशासन दोनों को बनाये रखने के दिशानिर्देश दिये जाने चाहिए।
4. मशीनों के तकनीकी अनुशासन की जानकारी सूचनापट्टों पर लगी होनी चाहिए, ताकि वह सर्व सुलभ हो।
5. तकनीकी अनुशासन का पालन नहीं करने पर कैसे जान माल का नुकसान होता है, इसके बारे में प्रशिक्षण के दौरान उदाहरणों के साथ समझाया जाना चाहिए।
6. तकनीकी अनुशासन का उत्पाद की गुणवत्ता के साथ संबंध और उसकी महत्ता के बारे में कर्मचारियों को बताना चाहिए।
7. शुरू से ही कर्मचारियों को नियम के अनुसार काम करने के लिए प्रेरित करना चाहिए और इसे एक आदत के रूप में ढालने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।
8. वर्ष में बृहद प्रक्रियायों/मशीनों पर बिना तकनीकी अनुशासन का उल्लंघन किये सर्वश्रेष्ठ कार्य निष्पादन करने वाले लोगों पुरस्कृत करना चाहिए।
9. जगह-जगह पर मशीनों और प्रक्रियाओं की आवश्यक तकनीकी जानकारी सूचनापट्ट पर लगाई जानी चाहिए।

इस प्रकार तकनीकी अनुशासन इस्पात संयंत्र में बहुत ही जरूरी है। इस्पात संयंत्र में सुरक्षा के साथ काम करना बहुत जरूरी है। तकनीकी अनुशासन को अनदेखा नहीं करना चाहिए। तकनीकी अनुशासन को ताक पर रखकर उत्पादन करने से दुर्घटना कभी भी हो सकती है, जिससे नुकसान करोड़ों रुपयों में होता है। अत: हर अधिकारी और हर कर्मचारी का कर्तव्य है कि वह कार्य करते समय तकनीकी अनुशासन का ध्यान रखें और सावधानी पूर्वक कार्य करें। संयंत्र में जहाँ भी इस पद्धति को अपनाया जाता है, वह दिन दुगुनी रात चौगुनी विकास करता है।

- प्रबंधक (विद्युत)
वॉयर रॉड मिल
राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड
विशाखपट्टणम-530031
मोबाइल: +919701348038

इस्पात उद्योग में तकनीकी अनुशासन क्यों और कैसे...

- सुश्री प्रियंका श्रीवास -

प्रस्तावना :

वर्तमान समय गुणवत्ता की माँग का है। बाजार में अपने उत्पाद उतारने से पहले जिन उत्पादकों ने अपने उत्पादों की गुणवत्ता पर ध्यान दिया है, वे ही सफल हुए हैं। लेकिन गुणवत्ता को हासिल करना और उसे बनाए रखना दोनों अलग-अलग बातें हैं एवं दोनों से संबद्ध चुनौतियाँ भी अलग हैं। वैसे तो समग्रता में अपनी साख को बनाए रखने के लिए उद्योगों को हर कदम पर चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। लेकिन गुणवत्ता का मामला सर्वोपरि है। क्योंकि इसी पर उसका व उसके आश्रित कर्मचारियों का अस्तित्व और एवं उद्योग की साख टिकी रहती है। इस समग्र साख के निर्माण में जैसे गुणवत्ता अहम भूमिका निभाती है, उसी प्रकार गुणवत्ता को बनाए रखने में तकनीकी अनुशासन बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

तकनीकी अनुशासन उद्योगों की योजना से लेकर परिसज्जित उत्पाद तक ही समाप्त नहीं हो जाता, बल्कि विपणन के बाद ग्राहक संतुष्टि तक चलती रहती है। या एक कदम आगे बढ़कर कहा जा सकता है कि यह तकनीकी अनुशासन ग्राहक आह्लाद तक चलता रहता है। उदाहरण के लिए मान लीजिए कि किसी ग्राहक ने हमसे उत्पाद खरीदा। गारंटी पीरियड तक तो हम उसे अपनी सेवाएँ देने के लिए बाध्य होते हैं। लेकिन यदि गारंटी पीरियड के बाद उत्पाद में कोई खराबी आती है, तो एक अच्छे विपणनकर्त्ता के नाते हम अपना पल्ला नहीं झाड़ सकते। क्योंकि ग्राहक सेवा के साथ-साथ ग्राहक आह्लाद भी हमारी वचनबद्धता का हिस्सा होती है। इसीलिए बेहतर संगठन तकनीकी अनुशासन को बरकरार रखने हेतु कई तरह की पद्धतियों को अपनाते हैं, ताकि कहीं भूल-चूक न हो जाए और उसका प्रतिकूल प्रभाव संगठन की अस्मिता व साख पर न पड़े।

सफल संगठन बनने के लिए हमें कार्ययोजनाएँ बनाने, उनका कार्यान्वयन करने और उनसे अपेक्षित परिणाम हासिल करने में हर कदम पर तकनीकी अनुशासन का पालन करना होता है। इसके लिए भयंकर प्रतिस्पर्धा बनती है। अक्सर यह देखा गया है कि प्रौद्योगिकी में निरंतर बदलाव अथवा सुधार के प्रयास चलते रहते हैं। यह बदलाव व सुधार भी कहीं न कहीं तकनीकी अनुशासन से जुड़े होते हैं। जैसे कि हम जो इस्पात बनाते हैं, उसी गुणवत्ता व मूल्य का इस्पात यदि कोई और हमारा प्रतिस्पर्धी बनाकर हमसे कम कीमत में बेचने लगे तो हम बाजार में अवश्य पिछड़ने लगेंगे। अब हमें अपने प्रतिस्पर्धी से बेहतर गुणवत्ता के इस्पात का उत्पादन करना होगा या उससे कम कीमत में बेचना होगा। इन दोनों बातों के लिए हमें पुन: विचार मंथन करना होगा। हमें उससे बेहतर तकनीक का उपयोग करना होगा अथवा अपनी उत्पादन लागत में कमी लानी होगी।

बेहतर तकनीक की जब हम तलाश करेंगे तो तकनीक आपूर्तिकारों में प्रतिस्पर्धा आएगी और उससे नए व बेहतर तकनीक का विकास होगा। इस प्रकार तकनीक आपूर्ति के बाजार में भी एक नवचेतना आएगी। कहने का मतलब यह है कि तकनीकी अनुशासन वास्तव में उत्तरोत्तर विकास का संवाहक भी होता है और वह बाजार एवं उद्योग की विकास धारा को अपने अनुसार मोड़ता भी है।

अब यदि इस तकनीकी अनुशासन को इस्पात उद्योग के चश्मे से देखें तो हम पायेंगे कि इस्पात उद्योग में इसका महत्व और भी बड़ा हो जाता है। क्योंकि इस्पात (इंटिग्रेटेड स्टील प्लांट) उद्योग एक प्रक्रियागत उद्योग होता है। यहाँ अनेक प्रकार की प्रक्रियाएँ साथ-साथ चलती हैं और प्राय: सभी प्रक्रियाएँ परस्पर जुड़ी होती हैं। इसलिए कई बार तकनीकी अनुशासन को बनाए रखना बहुत दुष्कर सा हो जाता है। जैसे कि धमनभट्ठी से उत्पादित होने वाले तप्त धातु का तापमान लगभग **1500** डिग्री सेंटीग्रेड से ऊपर रखकर उसे इस्पात गलन शाला में पहुँचाना होता है। लेकिन यदि तप्त धातु पहुँचाने में अधिक देरी हुई तो वह ठंडा होकर जम सकता है और अनुपयोगी हो सकता है। इसलिए एक नियत तापक्रम से ऊपर और आवश्यकता के अनुसार उसे इस्पात गलन शाला में पहुँचाया जाता

> इस्पात गलन शाला की सतत ढलाई से जब ब्लूम अथवा बिलेट निकलते हैं, तो उनकी गुणवत्ता निश्चित हो चुकी होती है। इसके लिए बनाई गई सारी प्रक्रियाओं के आँकड़े रिकार्ड में होते हैं। लेकिन वहाँ ग्राउंड पर काम करने वाले लोगों के पास वे आँकड़े न उपलब्ध होते हैं और न ही उन्हें लेकर घूमा जा सकता है। इसलिए वहाँ काम करने वाले कर्मचारियों को केवल हीट नंबर बता दिया जाता है और वे उस ब्लूम अथवा बिलेट पर हीट नंबर लिख देते हैं। हीट नंबर के हिसाब से उन ब्लूमों अथवा बिलेटों का भंडारण भी किया जाता है। जब कभी उन ब्लूमों अथवा बिलेटों को रोलिंग सेक्सन में रोलिंग के लिए भेजा जाता है, तब उसी हीट नंबर के आधार पर उस ब्लूम अथवा बिलेट की गुणवत्ता का इतिहास पता चल जाता है और तत्पश्चात रोलिंग के लिए आगे की कार्रवाई की जाती है।

है। साथ ही तप्त धातु की गुणवत्ता भी हमें बनाए रखने की आवश्यकता होती है। इसके साथ-साथ इस तप्त धातु के उत्पादन, लेडल में संग्रहण, लोको इंजन द्वारा इस्पात गलन शाला के लिए प्रेषण आदि गतिविधियों के लिए अलग से मानक प्रचालन पद्धति (एस ओ पी) का अनुपालन करना होता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि कदम-कदम पर तकनीकी अनुशासन का पालन करना होता है, जो अत्यंत जरूरी है। तकनीकी अनुशासन की व्याख्या निम्नलिखित पंक्तियों के माध्यम से भी की जा सकती है:

'तकनीक है एक हथियार
अनुशासन के साथ होता स्वीकार
उत्पादन-उत्पादकता में लाए श्रेष्ठ वृद्धि
होती जिससे प्रगति, उन्नति और समृद्धि।।'

एक मुख्य बात की ओर आपका ध्यान आकृष्ट करना आवश्यक है, जो सामान्य अनुशासन और तकनीकी अनुशासन के बीच के भेद से संबंधित है। सामान्य अनुशासन का मतलब होता है एक निश्चित क्रम में जीवन जीना या शासित की भाँति अपने आप को संचालित करना। माना जाता है कि अनुशासन से हमारी सारी शक्तियाँ आत्मकेंद्रित हो जाती हैं और हमें अपने लक्ष्य को हासिल करने में सर्वरूपेण सहयोग करती हैं।

ठीक ऐसे ही तकनीकी अनुशासन भी है। तकनीकी अनुशासन से संगठन अथवा कंपनी के लक्ष्यों को उसी रूप में हासिल करने में मदद मिलती है, जिस रूप में उसके लिए परिकल्पनाएँ की गई हैं। लेकिन यहाँ मूलभूत अंतर यह है कि सामान्य अनुशासन के माध्यम से मनुष्य स्वयं को अनुशासित करता है और अपने लक्ष्यों को हासिल करता है। लेकिन तकनीकी अनुशासन में व्यक्ति एक व्यक्ति के साथ-साथ कर्मचारी भी होता है। उसका लक्ष्य केवल उसका अपना नहीं होता, बल्कि वह सामूहिक होता है। साथ ही सभी कर्मचारियों की मन:स्थिति एक सी नहीं होती। अत: विचारों में एकरूपता, चिंतन में सम्यकता नहीं हो सकती, जो सामूहिक लक्ष्यों को हासिल करने के लिए अत्यंत आवश्यक है। लेकिन एक बेहतर प्रबंधन और बेहतर कार्मिक का कर्तव्य होता है कि क्रमश: संगठन में सम्यक चिंतन एवं अपनेपन के भाव को संपोषित करे और उसके उत्तरोत्तर विकास के लिए निरंतर काम करते रहें।

इसी क्रम में तकनीकी अनुशासन से जुड़ी हुई कुछ मूलभूत समस्याएँ भी होती हैं, जो समग्र इस्पात संयंत्रों के समक्ष सदैव अपना मुँह बाए खड़ी रहती हैं। जैसे लॉजिस्टिक अर्थात कच्चेमाल की आवाजाही, परिसज्जित उत्पादों का प्रेषण, राज्य व केंद्र सरकार के नियामकों से तालमेल व उनके निर्देशों का अनुपालन आदि की समस्याएँ सीधे तौर पर लॉजिस्टिक की समस्याएँ मानी जा सकती हैं, जो निरंतर अनुश्रवण व पुनरावृत्ति की अपेक्षा रखती हैं। इन समस्याओं का निदान सीधे तौर पर हो जाना असंभव है। क्योंकि इनके संचालन में दुरूहता और सतत बदलाव की गुंजाइश रहती है। इसलिए इसके लिए मानक प्रणालियों का विकास व उनका अनुश्रवण किया जाता है। फिर भी कई बार जटिलताओं का सामना करना पड़ ही जाता है।

इसी तर्ज पर शेष कार्यों के लिए भी मानकीकृत प्रक्रियाओं का विकास किया जाता है, जिसे अंग्रेजी में स्टैंडर्ड ऑपरेटिंग प्रोसीजर (एस ओ पी) कहा जाता है। अर्थात हर एक मशीनरी या प्रक्रिया के लिए मानक प्रचालन पद्धति का विकास करना। इसके तहत हर एक मशीन, उपस्कर और उपकरण आदि के लिए निर्माता द्वारा सुझाए गए या फिर स्वयं द्वारा विकसित किये गये मानक प्रचालन पद्धति बनाई व सुझाई गई होती है, जिसके अनुसार उस उपकरण, उपस्कर या मशीनरी का प्रचालन किया जाता है। ऐसे ही कार्य, चाहे वह लॉजिस्टिक से संबंधित हो या प्रचालन से जुड़ा हो, इनके सुचारू रूप से संचालन पद्धतियों का अनुपालन ही तकनीकी अनुशासन है।

यदि एक सिपाही के अनुशासन में ठीक से वर्दी पहनना, ड्यूटी के लिए बनाए गए निदेशों का अनुपालन करना अनुशासन है तो ऐसे तकनीकी संगठनों में काम करने के लिए कुछ नीति व नियमों के अनुपालन के निदेश होते हैं, जिनका पालन करना भी तकनीकी अनुशासन कहलाता है। उदाहरण के लिए प्रदूषण नियंत्रण के मामले को लिया जा सकता है। कंपनियों को हर तीन महीने में प्रदूषण नियंत्रण संबंधी आँकड़े बोर्ड को देने पड़ते हैं, जो बड़े ही विशिष्ट गुणता के होते हैं। अब सवाल यह उठता है कि क्या ये आँकड़े ऐसे ही दिए जा सकते हैं क्या? बिल्कुल नहीं। क्योंकि वे आँकड़े सरकार द्वारा बनाई गई नीतियों के आधार पर माँगे जाते हैं और नियामकों द्वारा उनका अनुसरण किया जाता है। साथ ही आँकड़ों को प्राप्त करने और उन्हें नियामकों को उपलब्ध कराने की जिम्मेदारी संगठनों की होती है। इतना ही नहीं, नियामकों के पास इन आँकड़ों की जाँच के अधिकार व नीति का अनुपालन न करने पर कंपनियों के विरुद्ध कार्रवाई का अधिकार भी होता है।

मान लेते हैं कि किसी कंपनी अथवा संस्थान पर किसी व्यक्ति ने प्रदूषण फैलाने का आरोप लगाते हुए ग्रीन ट्रिब्यूनल में मुकदमा दायर कर दिया तथा इस पर कार्रवाई करते हुए ग्रीन ट्रिब्यूनल ने जाँच शुरू कर दिया। जाँच में पता चला कि कंपनी अथवा संस्थान में प्रदूषण अनुश्रवण के लिए लगाए गए उपकरण ही नहीं हैं और इसकी जानकारी नियामक को भी नहीं है। इसका मतलब यह हुआ कि कंपनी अथवा संस्थान के साथ-साथ नियामक ने भी अपने तकनीकी अनुशासन का अनुपालन नहीं किया और

दोनों ही अपने कर्तव्य निभाने में असफल रहे। इस आधार पर ग्रीन ट्रिब्यूनल दोनों ही संस्थाओं पर या फिर संवद्ध प्राधिकारियों पर कार्रवाई कर सकता है। इस प्रकार से विश्लेषण करने पर पता चलता है कि तकनीकी अनुशासन का दायरा कितना बड़ा व व्यापक हो सकता है।

इस्पात संयंत्र की विशालता व व्यापकता को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि यहाँ हर कदम अर्थात हर छोटी-छोटी गतिविधि से लेकर बड़ी-बड़ी प्रक्रियाओं में तकनीकी अनुशासन का समावेश नितांत आवश्यक होता है। इसके बिना संयंत्र का संचालन सुचारू रूप से नहीं किया जा सकता। आइए! उदाहरण के लिए एस एम एस में बने बिलेट/ब्लूम को पहचानने की प्रक्रिया को लेते हैं और समझते हैं कि इसमें तकनीकी अनुशासन की कितनी अहम भूमिका होती है। इस्पात गलन शाला की सतत ढलाई से जब ब्लूम अथवा बिलेट (एस एस एस-2 से उत्पादित) निकलते हैं, तो उनकी गुणवत्ता निश्चित हो चुकी होती है। इसके लिए बनाई गई सारी प्रक्रियाओं के आँकड़े रिकार्ड में होते हैं। लेकिन वहाँ ग्राउंड पर काम करने वाले लोगों के पास वे आँकड़े न उपलब्ध होते हैं और न ही उन्हें लेकर घूमा जा सकता है। इसलिए वहाँ काम करने वाले कर्मचारियों को केवल हीट नंबर बता दिया जाता है और वे उस ब्लूम अथवा बिलेट पर हीट नंबर लिख देते हैं। हीट नंबर के हिसाब से उन ब्लूमों अथवा बिलेटों का भंडारण भी किया जाता है। जब कभी उन ब्लूमों अथवा बिलेटों को रोलिंग सेक्शन में रोलिंग के लिए भेजा जाता है, तब उसी हीट नंबर के आधार पर उस ब्लूम अथवा बिलेट की गुणवत्ता का इतिहास पता चल जाता है और तत्पश्चात रोलिंग के लिए आगे की कार्रवाई की जाती है। इस प्रकार हमारे पास उस उत्पाद की पूरी जानकारी रिकार्ड हो जाती है, जिसके आधार पर हमारे विपणन विभाग के सहकर्मी ग्राहकों को यह बता पाते हैं कि अमुक उत्पाद की गुणवत्ता कैसी है। यह प्रक्रिया सभी मिलों में अपनाई जाती है। यह एक मानक प्रक्रिया है, जो कारगर भी है।

रोलिंग के पश्चात उत्पाद में विभिन्न प्रकार के उपयोगी गुणता जैसे तन्यता, सख्तता, चीमड़पन आदि को पाने के लिए नियंत्रित तरीके से उसका शीतलन किया जाता है। सिंटर संयंत्र में सिंटर बनाते समय लौह अयस्क फाइंस, कोक ब्रीज, लाइमस्टोन, फ्लूडस्ट, एल डी स्लैग आदि को समुचित मात्रा में मिश्रित करके उसे पर्याप्त तापमान पर गर्म करके कठोर एवं पोरस सिंटर प्राप्त किया जाता है, जिसे ब्लास्ट फर्नेस में चार्ज किया जाता है।

उपरोक्त दोनों प्रक्रियाओं में शीतलन, कच्चेमाल का मिश्रण व तापमान नियंत्रण की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है। यदि समयावधि और आवश्यकता के अनुसार उपरोक्त पैरामीटर्स पर ध्यान नहीं दिया गया तो उत्पाद की गुणवत्ता खराब हो जाएगी और उसका प्रभाव कंपनी की साख व आर्थिक स्थिति पर पड़ेगा। इस प्रकार इस्पात संयंत्रों में तकनीकी अनुशासन सफलता का मंत्र सा है। जो संगठन अपने सभी क्रियाकलापों में तकनीकी अनुशासन का अनुसरण करेंगे, उन्हें सफलता अवश्य मिलेगी।

इस प्रकार के व्याख्यात्मक व विश्लेषणात्मक उदाहरणों से पता चलता है कि इस्पात उद्योग ही नहीं, बल्कि किसी भी उद्योग में उस उद्योग के लिए बनाए गए नियम व निबंधनों का अनुपालन करना, तकनीकी व वैज्ञानिक तौर पर सुझाई गई संस्तुतियों को मानना, स्थानीय स्तर पर परिस्थितियों के अनुसार किए गए अथवा सुझाए गए उपायों के अनुरूप व्यवहार करना आदि तकनीकी अनुशासन के प्रमुख अंग हैं। साथ ही यह तकनीकी अनुशासन एक उद्योग में जीवन जीने का एक विधान है। इसे मानना आवश्यक ही नहीं, बल्कि अनिवार्य है। आपने देखा होगा कि संयंत्र में किसी दुर्घटना के बाद जाँच अभिकरण बहुत से सवाल पूछते हैं। उनमें से कुछ सवाल व्यक्तिगत सुरक्षा से भी संबंधित होते हैं। यदि दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति ने किसी अनिवार्य सुरक्षा उपकरण का धारण नहीं किया हो तो कंपनी उसके खिलाफ कार्रवाई कर सकती है।

अनुशासन के महत्व पर प्रकाश डालते हुए महान वैज्ञानिक फीड्रिक फोवेल ने लिखा है, 'आत्मानुशासन और स्वानुशासन ही श्रेष्ठ अनुशासन है।' साथ ही उन्होंने दमनात्मक अनुशासन का विरोध भी किया है। कहने का आशय यह है कि अपनी और अपने सहयोगियों की सुरक्षा तथा संयंत्र में अपने निर्धारित कार्य के बेहतर निष्पादन का प्रश्न आत्मानुशासन से जुड़ा हुआ है। अक्सर एक अच्छी कंपनी का प्रवंधन अपने कर्मचारियों को अनुशासित व प्रशिक्षित करके उन्हें सामर्थ्यवान बनाने का हर संभव प्रयास करता है। विभिन्न योजनाओं, संगोष्ठियों, चर्चाओं आदि के माध्यम से उन्हें अभिप्रेरित करता है। यह प्रवंधन का तकनीकी अनुशासन हो सकता है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि तकनीकी अनुशासन एक तलवार चलाने के ज्ञान की तरह है, जिसे यह चलाना आ गया वह सफलता दिलाएगा, अन्यथा अपना व संगठन को भारी नुकसान पहुँचाएगा।

- कनिष्ठ प्रशिक्षणार्थी
विशेष बार मिल
राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड
विशाखपट्टणम - 530031
मोबाइल: +91 9794224749

स्वयं की सुरक्षा भी एक तकनीकी अनुशासन

- श्री श्याम नारायण श्रीवास्तव -

जीवन में निरंतर प्रगति हेतु अनुशासन एक सशक्त युक्ति है। चाहे तो इसे आप मंत्र भी कह सकते हैं। अध्यात्म की भाषा में बात की जाय तो अनुशासन अध्यात्म का ककहरा है। किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करने की प्रथम सीढ़ी है अनुशासन। महान दार्शनिक आचार्य चाणक्य जब जीवन के उच्च मानवीय मूल्यों पर चर्चा करते हैं और आदर्श, मर्यादा, परिश्रम और ईमानदारी आदि गुणों की सूची तैयार करते हैं तो उसमें अनुशासन को जोड़े विना वह सूची पूर्ण नहीं होती।

दरअसल दैनिक जीवन के किसी भी क्षेत्र में निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु कुछ निश्चित आधारभूत नियम होते हैं, कुछ सूत्र होते हैं, जिनके माध्यम से ही संकल्पित लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। यह क्षेत्र कोई भी हो सकता है। शिक्षा, खेल, राजनीति, नौकरी, व्यवसाय, उद्योग आदि... कुछ भी। इन नियमों का कठोरता से अनुपालन ही अनुशासन है।

उक्त क्रम में इस्पात उद्योग हमारे जीवन का सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र है। जहाँ हम अपने दैनिक उपभोग व आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु विभिन्न प्रकार की धातुओं का उत्पादन व निर्माण करते हैं। इन्हीं इस्पात उत्पादों से हम विभिन्न प्रकार की मशीनों और तमाम यंत्रों का निर्माण करते हैं, जो देश व समाज के विकास व उत्थान में सहायक होते हैं। इन मशीनों, उपस्करों, उपकरणों, यंत्रों के सहयोग से ही हमारी फैक्टरियों का संचालन संभव होता है। पर एक बात स्पष्ट है कि ये मशीनें, उपकरण, उपस्कर, यंत्र और प्रणालियाँ भी अनुशासनप्रिय होती हैं और निर्धारित अनुशासन प्रक्रियाओं के अनुरूप ही काम करती हैं।

'तकनीकी क्षेत्र में अनुशासन - क्यों और कैसे' इस बात को समझने के लिए गंभीरता से विचार करना होगा। किसी भी फैक्टरी में कार्यरत कामगार व इंजीनियर, अधिकारी सभी कई नियम से बंधे होते हैं। जीवन में शासन एक ऐसा नियम है, जो किसी और के द्वारा लोगों के लिए निश्चित किया जाता है, परंतु अनुशासन आप स्वयं अपने ऊपर लागू करते हैं।

मशीनें किसी भी फैक्टरी की महत्वपूर्ण अंग होती हैं। फैक्टरी है तो मशीनें हैं। ये मशीनें हमारे अर्थात मानव द्वारा निर्मित होती हैं और संचालित भी होती हैं। मशीनों के संचालन का जो अनुशासान है, वह बहुत कठोर भी है। मशीनों को जब अनुशासन में चलाया जाता है तो वे बेहतरीन मित्र साबित होती हैं, लेकिन जैसी ही उनके प्रचालन में अनुशासनहीनता आती है, वैसे ही वे शत्रुता का बोध कराने लगती हैं, अर्थात भयंकर दुर्घटना को अंजाम देती हैं। कुछ तो चुपचाप खड़ी हो जाती हैं, नेताओं की तरह विरोध में कि आपने हमें सही ढंग से संचालित नहीं किया, लिहाजा हम उत्पादन नहीं करेंगे। मशीनों के प्रति तकनीकी अनुशासन का विशेष महत्व है। बुजुर्गों का कहना है कि जो लोग दूसरों के अनुभव से सीखते हैं वे शीघ्र ही उन्नति करते हैं। इन्हीं अनुभवों के आधार पर किसी उद्योग में उत्पादन हेतु मशीनों को संचालित करने के लिए एक स्टैंडर्ड ऑपरेटिंग प्रोसीजर अर्थात एस ओ पी बनाया जाता है, जिसके अनुसार ही मशीनें संचालित की जाती हैं।

इस्पात उत्पादन के क्षेत्र में सबसे महत्वपूर्ण घटक है, ताप और दाव। लौह की गर्म धातु के उत्पादन हेतु जिन खनिजों का प्रयोग धमन भट्ठी में करते हैं, उन्हें गलाने के लिए विशेष उच्च स्तर का ताप चाहिए और एक विशेष दाब पर गर्म हवा, जो कोक को जलाकर ताप उत्पन्न करती है। इसके कुशल नियंत्रण की तकनीकी ही एक दक्ष ऑपरेटर की योग्यता को प्रमाणिक रूप से दर्शाता है। साथ ही धमन भट्ठी में जो खनिज प्रयोग किए जाते हैं, जैसे लौह अयस्क, सिंटर, कोक, लाइम स्टोन, डोलोमाइट, क्वार्ट्जाइट आदि का अपना एक अनुपात होता है। निश्चित ही यह सारी प्रक्रिया ताप व दाव के नियंत्रण तथा निश्चित अनुपात में कच्चेमाल के उपयोग से भट्ठी को चार्ज किया जाना, एक बहुत बड़े अनुशासन का हिस्सा होता है। इसमें थोड़ी सी भी लापरवाही या यों कहें कि अनुशासन हीनता विपरीत परिणाम देती है।

मशीनों के साथ अनुशासन की महत्ता:

जैसे हम समाज में स्वयं अनुशासित रहने के लिए कुछ नियमों का अनुकरण करते हैं, ठीक वैसे ही हमारे दैनिक उपभोग की वस्तुओं का उत्पादन या निर्माण करती ये मशीनें भी हैं, जो तकनीक के तमाम नियमों से संचालित होती हैं। जब भी एक मशीन मैन निर्धारित नियमों से परे होता है, मशीनों से उसका नियंत्रण हट जाता है और फिर मशीनें अपने मन का कार्य करती हैं। उत्पादन घट जाता है। यहाँ तक ही दुर्घटनाएँ भी इन्हीं कुसंचालन के परिणाम हैं। विशेष कर इस्पात उद्योग के क्षेत्र में तो सबसे बड़ा अनुशासन पैरामीटर्स का होता है।

मानव ने जब मशीनों का निर्माण किया तो उसने लाभ के अतिरिक्त संभावित खतरों का भी आकलन किया। और फिर उन खतरों से बचने के लिए कई उपाय भी खोजे। तरह-तरह के उपकरण भी बनाये। यहाँ तक कि अलग-अलग मशीनों या कार्यक्षेत्र के अनुसार सुरक्षा के उपकरण भी विभिन्न प्रकार के बने, जो मानव व पर्यावरण दोनों के लिए हितकारी सिद्ध हुए।

अनुशासन मानव जीवन को सुचारू रूप से चलाता है तो तकनीकी अनुशासन मशीनों को सुचारू रूप से संचालित करता है। हालांकि दोनों ही प्रकार के अनुशासन का कठोरता से पालन मानव को करना ही होता है।

यदि सूक्ष्मता से अध्ययन करें तो मशीनें भी बेजान नहीं होतीं। दरअसल मशीनें भी बोलती हैं। वे अपने दुख:दर्द को और खुशी को हमसे साझा करती हैं। लेकिन दुर्भाग्य यह है कि प्रत्येक ऑपरेटर उनकी भाषा को समझ नहीं पाता। एक छोटा सा उदाहरण देखें, बिना ग्रीस व आयल की चलती मशीनों की आवाज और जिसमें नियमित आयलिंग-ग्रीसिंग हो रही है, उनकी आवाज पर गौर करें। आपको जो अंतर दिखाई देगा, वही मशीनों की स्थिति बयान करती है। अत: यह आवश्यक है कि फैक्टरी परिसर में मशीनों की आवाज को समय से सुना जाय और अनुशासित ढंग से उनका निराकरण अथवा उन्हें संचालित किया जाए।

फैक्टरी परिसर में सुरक्षा के क्षेत्र में अनुशासन:

फैक्टरी में कार्यरत सभी लोगों का दायित्व है कि वे मानवीय मूल्यों को समझें। अपना दृष्टिकोण, अपनी वचनबद्धता, कर्तव्यनिष्ठता व अपने उत्तरदायित्व को गहराई से समझें। अपनी सुरक्षा के साथ-साथ दूसरों की सुरक्षा को भी महत्व दें। निर्धारित समय व ड्रेसकोड का ध्यान रखें। फैक्टरी परिसर में मशीनों के साथ कार्य करने वाले हम सब की सुरक्षा हेतु जो उपकरण बनाये गये हैं, उन्हें अंग्रेजी के तीन अक्षर पी पी ई, अर्थात पर्सनल प्रोटेक्टिव एक्विपमेंट को धारण करना भी अनुशासन का ही एक अंग है। इसे समझने का बहुत सरल सा तरीका है। पहले हम यह जान लें कि आखिर हमारी सुरक्षा को खतरा कहाँ से है? जैसे वर्षा व धूप से बचना है तो छतरी लेकर चलते हैं। बस वैसे ही कार्य करते समय उस परिवेश से हमारे कुछ अंग सीधा प्रभावित होते हैं तो कुछ एक अंतराल के पश्चात जिस में धूल, शोर, जहरीली गैसें, तेल आदि के साथ उपकरणों का उचित-अनुचित रखरखाव भी शामिल है।

जैसे खुले हाथ से काम करते समय तेल व ग्रीस आदि का हाथ में लगना या फिर जलना, कटना एक तात्कालिक प्रभाव है, तो वही बहरेपन का शिकार हो जाना, साँस फूलना आदि जैसे दूरगामी परिणाम भी हो सकते हैं। अब इसी क्रम में हेल्मेट, जूता, इयर प्लग, नोज मॉस्क, सेफ्टी बेल्ट, गॉगेल, जैकेट, हैण्ड ग्लौव्स आदि कई ऐसे साधन, जो पीपीई के नाम से जाने जाते हैं और हमारी सुरक्षा में काम आते हैं, अर्थात ये सब सुरक्षा के उपकरण हैं, जिनका हमें अनुशासित ढंग से प्रयोग करना ही चाहिए।

वैसे कार्य करते समय किस क्षेत्र में अमुक ऑपरेटर को क्या खतरा है, इन सब की विस्तृत जानकारी हेतु किसी भी फैक्टरी में एक सर्वेक्षण होता है, जिस में उस क्षेत्र में उत्पन्न होने वाले खतरों को खोजना व उससे सुरक्षित रहने हेतु विकल्प बताना भी शामिल है। इन्हें अंग्रेजी में एच आई आर ए (हेजार्ड आईडेंटिफिकेशन एंड रिस्क असेसमेंट) कहते हैं और इसी की संस्तुतियों के अनुसार हम सभी सुरक्षा के उपकरण धारण करते हैं और फैक्टरी परिसर में अनुशासित रहते हैं। जैसे ऊँचाई पर कार्य करते समय सेफ्टी बेल्ट, गर्म क्षेत्र में जैकेट, शोर वाले क्षेत्र में इयर प्लग, धूल वाले क्षेत्र में नोज मास्क या फिर केमिकल या गैस के क्षेत्र में अलग-अलग सुरक्षा के उपकरण हैं।

वास्तविकता यह है कि हम सब जानबूझ कर अनुशासनहीनता का बर्ताव करते हैं और दूसरों को करने भी देते हैं। हेलमेट लगायेंगे तो फीता नहीं लगाते। बड़े शौक से धूल क्षेत्र में खड़े हुए लोग मिल जायेंगे और नोज मॉस्क नहीं लगायेंगे। कितना भी अधिक शोर हो, इयर प्लग का प्रयोग नहीं करेंगे। ताप में हैं, लेकिन जैकेट नहीं पहनेंगे। और यदि बारीकी से तहकीकात करें तो दुर्घटना का एक मुख्य कारण है अनुशासनहीनता यानि लापरवाही।

इस अनुशासनहीनता के कारण ऐसे भी लोग अधिक दुर्घटना के शिकार होते हैं, जिन्हें अपने ऊपर अति विश्वास होता है। उन्हें आप कुछ तकनीकी अनुशासन के विषय में बताना भी चाहेंगे तो वे आपकी बात ठीक से सुनेंगे भी नहीं, उल्टे आपको ही ज्ञान दे देंगे 'साहब मुझे सब पता है... उम्र बीत गयी... यही सब काम करते-करते।' सचमुच सबसे खतरनाक होते हैं ऐसे लोग। वे स्वयं तो दुर्घटना के शिकार होते ही हैं, अपने साथी को भी चपेट में ले लेते हैं।

आश्चर्य तो तब होता है, जब लोग सुरक्षा अधिकारियों के भयवश सुरक्षा के उपकरणों का उपयोग करते हैं, जबकि होना यह चाहिए कि हम स्वत: माँगकर सुरक्षा उपकरणों का उपयोग करें। ऐसे लोग उन्हें नहीं बल्कि खुद को धोखा देते हैं। जैसे अधिकतर मोटरसाइकिल सवार ट्रैफिक पुलिस के भय से हेलमेट लगाते हैं। जबकि हेलमेट लगाने से चालक सुरक्षित रहेगा, न कि वह ट्रैफिक पुलिस का सिपाही और यही अनुशासनहीनता ही उन्हें जोखिम में डाल देती है।

तकनीकी अनुशासन का उचित मूल्यांकन:

किसी भी फैक्टरी का जो भी उत्पाद है, उसके उत्पादन से लेकर उपभोक्ता तक पहुँचने के मध्य कई तरह के तकनीकी अनुशासनों का अनुपालन करना होता है। इन अनुशासनों का कठोरता से पालन करने वाले का राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मूल्यांकन किया जाता है और जो निर्धारित मानक को पूर्ण करते हैं, उन्हें प्रमाण पत्र दिया जाता है। इस हेतु सबसे बड़ा संगठन है अंतर्राष्ट्रीय मानकीकरण संगठन। ये संगठन किसी भी उद्योग को अनुशासित रखने में सहायता करते हैं।

जैसे किसी भी फैक्टरी का जो भी उत्पाद है, उसकी गुणवत्ता को ध्यान में रखते हुए उसे आई एस ओ 9001 का प्रमाण-पत्र दिया जाता है। ये प्रमाण-पत्र किसी भी क्षेत्र के व्यवसाय, संस्था व उद्योग को दिये जाते हैं। इसकी स्थापना 23 फरवरी को स्विट्जरलैंड के जेनेवा में हुई थी। यह एक स्वतंत्र संगठन है, जो कंपनी व व्यवसायों द्वारा बनाये गये उत्पाद और सेवा की गुणवत्ता एवं दक्षता के लिए एक मानक प्रदान करता है। इस तरह संस्था द्वारा गुणवत्ता प्रबंधन के लिए आई एस ओ 9001, पर्यावरण प्रबंधन के लिए आई एस ओ 14001, सूचना सुरक्षा प्रबंधन के लिए आई एस ओ 27001, फुड सुरक्षा प्रबंधन के लिए आई एस ओ 22008, माप प्रबंधन प्रणाली के लिए आई एस ओ 10012 और व्यावसायिक स्वास्थ्य और सुरक्षा प्रबंधन प्रणाली के लिए आई एस ओ 18000 तो ऊर्जा प्रबंधन प्रणाली के लिए आई एस ओ 50001 प्रमाण पत्र दिया जाता है, जो अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त हैं।

मैं समझता हूँ, व्यापार के क्षेत्र में बढ़ती प्रतिस्पर्द्धा हेतु इस तरह का मूल्यांकन भी तकनीकी अनुशासन का महत्वपूर्ण अंग है। विभिन्न प्रकार के पुरस्कार व सम्मान प्राप्त करने हेतु निर्धारित कार्यभार भी फैक्टरियों में एक निश्चित अनुशासन पर बल देता है। 1951 में मशीनों और फैक्टरी परिसर में तमाम रखरखाव को लेकर जापान ने एक विचार, एक योजना प्रस्तुत किया, जिसे टी पी एम, अर्थात कुल उत्पाद अनुरक्षण कहा गया। मशीनों के साथ संपूर्ण फैक्टरी परिसर का रखरखाव इस भांति हो कि हम अमुक मशीन से उसकी पूर्ण क्षमता से उत्पादन प्राप्त कर सकें। यह बहुत विस्तृत विषय है। इसी तरह टी क्यू एम भी है, जिसे कुल गुणवत्ता अनुरक्षण कहते हैं। एक प्रकार से ये सब निर्धारित सीमाएँ हैं, जिसके भीतर रह कर हम सुरक्षित ढंग से पूर्ण उत्पादन कर सकते हैं, जो तकनीकी अनुशासन को बनाए रखने में पूर्ण सहायक हैं।

दरअसल जीवन के किसी भी क्षेत्र में अनुशासन की अपनी महत्ता है। अभी हमने राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की एक सौ पचासवीं जयंती मनाई है। गाँधी जी का कहना है कि नियमों का कठोरता से पालन करना ही अनुशासन है। यही नहीं, वे यह भी कहते हैं कि जो नियम का पालन न करें, उसे दंड भी भोगना चाहिए। आम तौर पर हर संस्था कुछ निश्चित नियमों के अनुसार संचालित होती है। कनिष्ठ कर्मचारियों के साथ वरिष्ठ अधिकारियों के लिए भी नियम पालन की अनिवार्यता पर ही संस्था की सुव्यवस्था और उन्नति आधारित होती है। एक बार पुनः महान नीतिज्ञ चाणक्य की बात दोहराना चाहता हूँ,

> 'अनवस्थितकार्यस्य न जने वने सुखम।
> जने दहति संसर्गो वने संग विवर्जनम्।।'

कहने का तात्पर्य है कि एक अनुशासनहीन व्यक्ति सदैव स्वयं भी दु:खी रहता है और दूसरों को भी दु:खी करता है। चाहे वह समाज में रहे या किसी जंगल में। बिना अनुशासन के व्यक्ति कभी भी किसी भी अवस्था में सुखी नहीं रह सकता। वह निर्धारित नियमों को तोड़कर दूसरों के लिए कठिनाइयाँ ही उत्पन्न करता है। तो यह बहुत आवश्यक है कि आत्म अनुशासन और तकनीकी अनुशासन दोनों को ही उद्योग के क्षेत्र में विशेष महत्व दिया जाय तो वह स्वयं व संयंत्र ही नहीं बल्कि पूरे राष्ट्र हेतु हितकारी होगा।

- सेवानिवृत्त प्राधिकारी
जिंदल स्टील व पॉवर लिमिटेड,
रायगढ़ - 496001, छत्तीसगढ़
मोबाइल :+91 7999652646

बहाना

- श्री ऋषिमोहन श्रीवास्तव -

जानकीदास की छोटी बहू चंद्रलेखा अपने ससुर को 'दद्दा' कह कर ही संबोधित करती थी। आज जैसे ही आठ बजे का समय हुआ, छोटी बहू का स्वर गूँज उठा, 'दद्दा, आदी को उसके स्कूल छोड़ आइए। तब तक मैं आपके लिए नाश्ता बनाती हूँ।' जानकीदास को दो दिनों से बुखार आ रहा था। उन्होंने दो-एक बार बेटे चंद्रप्रकाश से कहा कि वह कुछ दवा ला दे, पर चन्द्रप्रकाश ने सुना नहीं। कहने लगा, 'एकाध दिन और देखिए बाद में किसी डॉक्टर को दिखा देंगे।'

बहू चंद्रलेखा की बात की अवहेलना करना जानकीदास के वश में न था। वे लाठी लेकर किसी तरह उठे और आदी को उसके स्कूल पहुँचाने चल दिए। अभी घर से थोड़ी दूर ही चले होंगे कि वे चक्कर खा कर गिर पड़े। राहगीरों ने किसी तरह उन्हें घर तक पहुँचाया। बहू चंद्रलेखा कहने लगी, 'दद्दा को तो यों ही बहाने करना आता है।' वे जानबूझ कर गिर पड़े, ताकि लोगों को ये लगे कि मैं अपने ससुर पर काम का बहुत बोझ डाल देती हूँ।' जानकीदास प्रतिकार की स्थिति में भी नहीं थे।

- एस-1, नित्यानंद विला
कमलेश्वर कॉलोनी, जीवाजीगंज
लश्कर, ग्वालियर-474001
मोबाइल: +91 8964963542

तकनीकी अनुशासन: इस्पात उद्योग के परिप्रेक्ष्य में

- श्रीमती अयंतिया राय -

इस्पात उद्योग का परिचय:

इस्पात एक मिश्र धातु है, जो प्राय: लोहा और कार्बन तथा कभी-कभी अन्य धात्विक तत्वों से निर्मित होता है। वर्तमान में इस्पात की पहचान औद्योगिक विकास के मुख्य केंद्र बिंदु के रूप में भी है। हमारा व्यक्तिगत जीवन भी इस्पात से बहुत प्रभावी है, यथा मोटर-वाहनों, घरेलू उपकरणों, बड़ी-बड़ी इमारतों, मूलसंचनाओं, औद्योगिक प्रतिष्ठानों, सैन्य हथियारों आदि जैसे अनेक आवश्यक वस्तुओं की परिकल्पना इस्पात के बिना नहीं की जा सकती। इस्पात अब तक की सबसे महत्वपूर्ण, बहुआयामी और सबसे अनुकूल सामग्री है। इस्पात से विकास की गति में तीव्रता आई है। विकसित अर्थ व्यवस्थाओं का मेरुदंड इस्पात ही रहा है।

अपनी खास विशेषताओं जैसे गर्म व ठंडे रूप में जोड़े जाने की सुगमता, मशीनीकरण के लिए उपयुक्त, लंबी उम्र और संक्षारण व ताप प्रतिरोधकता अधिक होने व सस्ता होने के कारण यह अन्य धातुओं से अधिक लोकप्रिय है। इस्पात का उपयोग पर्यावरण के अनुकूल भी है, क्योंकि इसका पुन:चक्रण किया जा सकता है। पृथ्वी पर लगभग 5.6% लौह तत्व मौजूद हैं, जो इसके मूल कच्चेमाल के आधार हैं। दुनिया में उत्पादित होने वाले अन्य धातुओं की तुलना में इस्पात का उत्पादन लगभग 20 गुना अधिक है।

मूलत: इस्पात उद्योग लौह अयस्क के प्रसंस्करण पर आधारित एक व्यवसाय है। इसके लिए दुनिया भर में अनेक प्रकार के तकनीकों का विकास किया गया है। वैज्ञानिकों और तकनीकविदों ने मिलकर कड़ी मेहनत से इस्पात उत्पादों को बहुपयोगी बनाने का भरसक प्रयास किया है। अभी इस्पात के 3500 से अधिक श्रेणियाँ हैं। फिर भी अलग-अलग गुणधर्म वाली इस्पात की अनेक श्रणियों के विकास की अपार संभावनाएँ हैं। हालाँकि हर किसी के मन में यह प्रश्न उठता है कि 'इस्पात उत्पादन करते समय कार्बन फुटप्रिंट को कैसे कम किया जाए?' हालाँकि इस्पात उत्पादन में व्यय होने वाली ऊर्जा अन्य धातुओं की तुलना में बहुत कम होती है। लेकिन माँग व आपूर्ति के मद्देनजर इस्पात का उत्पादन अधिक मात्रा में होता है और इसके परिणामस्वरूप समानुपातिक रूप से ऊर्जा की खपत और प्रदूषण की मात्रा में वृद्धि होती है।

ऊर्जा की खपत अधिक होने के कारण ऊर्जा का उत्पादन भी अधिक करना पड़ता है, जिसके लिए भारी मात्रा में कोयले का उपयोग करना होता है। कोयले के अधिक उपयोग के कारण कार्बन डाई ऑक्साइड का उत्सर्जन अधिक होता है। साथ ही इस्पात उत्पादन के लिए कोकिंग कोयले का उपयोग भी भारी मात्रा में किया जाता है। इसलिए इस्पात उद्योग को ऊर्जा भक्षक व प्रदूषण का कारक माना जाता है। हालाँकि धातुविज्ञानी पर्यावरण के अनुकूल इस्पात गलाने वाली प्रौद्योगिकियों के विकास हेतु प्रयास कर रहे हैं।

तकनीकी अनुशासन:

वर्तमान युग गुणवत्ता के साथ तेज विकास का है। नवीनतम मशीनों, प्रौद्योगिकियों एवं मानव विकास की तरकीबों का तेजी से विकास हो रहा है और निगमित जगत में उसका प्रभाव निरंतर दिखाई दे रहा है। इसी क्रम में तकनीकी अनुशासन समय की आवश्यकता है। अर्थात कहना यह है कि संगठनों के लिए प्रौद्योगिकी के साथ-साथ मानव संसाधन सबसे महत्वपूर्ण संसाधन है। क्योंकि मानव संसाधन के पास कौशल, रचनात्मक क्षमता, प्रतिभा और योग्यता के साथ-साथ नैतिक मूल्य, विश्लेषण दृष्टिकोण आदि भी होते हैं, जिसे वह संगठन के विकास हेतु उपयोग करता है। मानव संसाधन विकास संबंधी प्रशिक्षणों के दौरान इन्हीं विशिष्टताओं को उभारने का प्रयास किया जाता है।

जिस श्रमशक्ति के पास विशिष्ट कार्य करने के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल है, उसे तकनीकी श्रमशक्ति कहा जा सकता है। तकनीकी श्रमशक्ति को विशेष ज्ञान और कौशल की आवश्यकता होती है। संगठन अपनी आवश्यकता अनुसार कुशल, अर्ध-कुशल अथवा अकुशल कर्मचारियों को नियुक्त करते हैं। अर्ध-कुशल कर्मचारियों के पास कुशल श्रमशक्ति के समान अनुभव, प्रशिक्षण और ज्ञान की डिग्री अथवा अनुभव नहीं होते। अत: वे विशिष्ट तकनीकी कार्य करने वाले कुशल कर्मचारियों की सहायता करते हैं।

तकनीकी कौशलयुक्त कर्मचारियों के कारण संगठन को सुचारू रूप से प्रचालित करने में बहुत मदद मिलती है। तकनीकी कौशलयुक्त कर्मचारी कई कारणों से महत्वपूर्ण होते हैं, जैसे कि वे अधिक कुशलता से काम कर सकते हैं। उनका अनुभव संगठन में आत्मविश्वास बढ़ाता है। दीर्घकालिक सेवा में होने के कारण उनके आकलन व विश्लेषण सटीक होते हैं और समस्याओं के शीघ्र निराकरण में मदद मिलती है। साथ ही ये लोग दीर्घकालिक प्रशिक्षण एवं समय-समय पर अल्पकालिक प्रशिक्षण प्राप्त होते

हैं। बहुत तरह के प्रशिक्षणों के बाद ही कोई व्यक्ति संगठनात्मक जीवन का एक आवश्यक हिस्सा बन पाता है। क्योंकि भर्ती और चयन की कोई व्यवस्था इतनी सटीक नहीं है, जो ऐसे कर्मचारियों का दल उत्पन्न कर सके, जो अपने निर्धारित कार्य को भर्ती होते ही तुरंत ही संपन्न कर सके या फिर उस कार्य को करने हेतु अपेक्षित कौशल प्राप्त करने के पश्चात ही भर्ती हो।

संगठनात्मक विकास के लिए प्रशिक्षण एक अनिवार्य टूल अथवा उपकरण है। इसके माध्यम से संगठन के विकास के लिए हर आवश्यक विषय का प्रशिक्षण दिया जाता है। एक ही संगठन के अलग-अलग प्रोफाइलों में काम करने वाले लोगों को अलग-अलग तरीके से प्रशिक्षित करना होता है। संगठन में प्रशिक्षण भी तकनीकी अनुशासन का एक अंग है। इससे प्रणाली/बाजार/व्यवहार में निरंतर हो रहे बदलावों को समझने व उनसे मुकाबला करने की शक्ति का विकास होता है।

इस्पात उद्योग के संदर्भ में तकनीकी अनुशासन का एक पक्ष यह भी है कि यह उद्योग बहुआयामी और विशालकाय होता है। इसके लिए भारी संख्या में मानवशक्ति की आवश्यकता होती है। साथ ही इस उद्योग की सभी गतिविधियाँ प्राय: अत्यंत जोखिम भरी होती हैं, जिनके लिए विशेष तरह की सावधानियाँ बरतनी होती हैं। इसीलिए कर्मचारियों द्वारा कोई विशेष कार्य शुरू करने से पहले उन्हें उस कार्य एवं उससे जुड़े खतरों/जोखिमों की पर्याप्त तकनीकी जानकारी लेकर ही आगे बढ़ा जा सकता है। अपना व अपने सहकर्मियों एवं मशीनों की रक्षा के लिए यह भी आवश्यक है कि कर्मचारी कोई कार्य करने के लिए हर बार व हर समय प्रक्रियाओं व सावधानियों का पालन करे, चाहे वह दस या सौ बार हो। साथ ही उन्हें कार्य से संबंधित सुरक्षा नियमों का पूरी तरह पालन करने के साथ-साथ साथी कर्मचारियों को भी शिक्षित करना चाहिए।

संगठन के कार्य में प्राथमिकता तय करना भी एक तकनीकी अनुशासन माना जाता है। कर्मचारियों में यह क्षमता शनै: शनै: अनुभव व ज्ञान के आधार पर विकसित होती जाती है। लेकिन अक्सर देखा जाता है कि वरिष्ठ प्राधिकारी प्राथमिकताओं का निर्धारण अपने आदेशात्मक रवैये से कराते हैं, जो कभी-कभी उचित तो कभी-कभी अनुचित भी साबित होते रहते हैं। लेकिन अनुभव के आधार पर संगठनात्मक आवश्यकताओं के मद्देनजर जिन प्राथमिकताओं का चयन होता है, प्राय: वे ही सर्वाधिक उपयुक्त मानी जाती हैं।

इस क्रम में समय के निर्धारण का मामला भी तकनीकी अनुशासन का अहम हिस्सा है। प्रत्येक कार्य के लिए उचित समय आवंटित किया जाना चाहिए। इस्पात संयंत्र की प्रक्रियाओं से जुड़े बहुतायत काम, जिन्हें निश्चित समयांतराल के भीतर करना होता है। फिर भी इसका मतलब यह कतई नहीं है कि जो कार्य प्रक्रियाओं से सीधे नहीं जुड़े हैं, उनके लिए अनंत समय दिया जाए। उनके लिए भी समय का निर्धारण होता है, जिसका अनुपालन करना भी तकनीकी अनुशासन की श्रेणी में आता है। बस अंतर इतना है कि जो कार्य सीधे उत्पादन को प्रभावित करते हैं, उन्हें प्राथमिकता से करना होता है और जो कार्य अनुरक्षण अथवा नियमित प्रवृत्ति के होते हैं, उन्हें कुछ समय लेकर भी किया जा सकता है। लेकिन कार्य की गुणवत्ता से कहीं भी और कैसे भी समझौता नहीं किया जा सकता है। क्योंकि गुणवत्ता भी तकनीकी अनुशासन का एक अंग है।

भारी प्रक्रिया उद्योगों में अनुरक्षण का कार्य एक बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य होता है। अनुरक्षण कार्य मुख्यत: दो प्रकार से किया जाता है:

1. खराबी आने अथवा ब्रेकडाउन होने पर अनुरक्षण
2. रक्षात्मक या प्रिवेंटिव अनुरक्षण

खराबी आने पर जो अनुरक्षण किया जाता है, वह बहुत सामान्य परंतु अप्रत्याशित होता है। प्रचालन/उत्पादन प्रक्रियाओं के बीच में अक्सर कुछ खराबियाँ आ जाती हैं, जिन्हें ब्रेकडाउन की श्रेणी में रखा जाता है। इस प्रकार की खराबियों या गड़बड़ियों का निराकरण तुरंत आवश्यक होता है। उदाहरण के तौर पर यदि वॉयर रॉड मिल में उत्पादन प्रक्रिया जब चल रही हो और अचानक कोई रोलर खराब हो जाए एवं उसकी वजह से उत्पादित वायर अपने ठीक लाइन व लेंथ में निकलना बंद कर दे तो ऐसी स्थिति में उत्पादन रोकना होता है और उस खराब रोलर को बदलना होता है। उत्पादन प्रक्रिया में आए ऐसे ही व्यवधान को ब्रेकडाउन कहा जाता है।

लेकिन जब उत्पादन प्रक्रिया नहीं चल रही हो, तब सभी रोलरों की कार्यकारी जाँच करना जरूरी होता है। यथा इस्पात संयंत्र के विभिन्न उपकरणों, बेयरिंग का उपयोग किया जाता है। इन बेयरिंगों पर नियमित रूप से तेल अथवा ग्रीस लगाने की आवश्यकता होती है। आम तौर पर ये तेल/ग्रीस हाथ से बेयरिंग्स पर लगाये जाते हैं। बेयरिंगों के लिए यह काम अगर समय पर किया जाता है तो न्यूनतम प्रयास, समय और इनपुट सामग्री की आवश्यकता कम होती है। अगर समय पर नहीं किया गया तो फलस्वरूप उत्पादन में देरी, उपकरण में खराबी, मानवशक्ति का नुकसान, विशाल वस्तुसूची लागत और कंपनी को भारी वित्तीय नुकसान होता है। इसका यह मतलब निकाला जा सकता है कि कोई भी समय पर न करना तकनीकी अनुशासनहीनता है और इससे बहुआयामी नुकसान हो सकते हैं।

अपने संगठन के कर्मचारियों को समुचित प्रशिक्षण देना

और उनकी सुरक्षा का प्रबंध करना भी प्रबंधन की जिम्मेदारी होती है। यदि इसमें कहीं कोई कोताही अथवा ढीलापन बरता गया है तो यह भी अनुशासनहीनता का एक उदाहरण होता है। इसी प्रकार संयंत्र में लगे विभिन्न प्रकार के उपकरणों की सुरक्षा और उनके प्रचालन के लिये निर्धारित तौर-तरीकों का अनुपालन भी तकनीकी अनुशासन की श्रेणी में आता है।

अक्सर कहा जाता है कि किसी भी काम के लिए केवल एक ही सबसे सुरक्षित व सही तरीका होता है, जिसे मानक पद्धति माना जा सकता है। सभी लोगों को इसका ज्ञान होना चाहिए व सभी को उसका पालन करना चाहिए। जब कोई प्रबंधक किसी कार्य को सुरक्षित व सुचारू रूप से कराना चाहता है, तो उसे अपने हर अधीनस्थ के साथ मानक पद्धति के संबंध में चर्चा करनी चाहिए। इसे भी एक मानक प्रक्रिया या पद्धति के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए।

प्राय: वरिष्ठ प्राधिकारी स्वयं उपकरणों को नहीं संभालते/प्रचालित करते। इनमें से कुछ उपकरणों का प्रचालन बहुत जोखिमपूर्ण होता है। अत: वरिष्ठ प्राधिकारियों की यह जिम्मेदारी बनती है कि वे अपने मातहतों की सुरक्षा व प्रचालन पद्धति पर लगातार नजर बनाए रखें और समय-समय पर उनकी सुरक्षा, कार्यपद्धति, उत्पादन प्रक्रिया और अपनी स्वयं की जानकारी को अद्यतन बनाने हेतु कार्यस्थल पर जाना चाहिए।

भारतीय राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद की यदि मानें तो 'दुर्घटनाएँ ऐसे ही नहीं होतीं, बल्कि उनका कोई कारण होता है, उस कारण में व्यक्ति स्वयं भी शामिल होता है।' यह एकदम सही है। लेकिन दुर्घटनाएँ कभी-कभी दूसरे की गलतियों के कारण भी हो जाती हैं। इसीलिए कहा जाता है कि कोई काम आरंभ करने से पहले अपनी और मशीन की सुरक्षा की जाँच कर लेना भी एक तरह का तकनीकी अनुशासन होता है।

तकनीकी अनुशासन की गुंजाइश उद्योग की सभी गतिविधियों में रहती है। क्योंकि कोई भी उद्योग बिना मानक प्रक्रियाओं के नहीं संचालित किया जा सकता। रिकार्ड रखने व प्रलेखन में भी तकनीकी अनुशासन लागू किया जाना जरूरी होता है। यह इसलिए जरूरी होता है, क्योंकि यहाँ भारी मात्रा में रिकार्ड तैयार होते रहते हैं, जिनका रखरखाव व अनुरक्षण एक चुनौती होती है। ऐसे ही कार्यों के लिए '**5** एस' की प्रक्रिया लागू होती है। '**5** एस' प्रक्रिया अथवा ऐसी ही किसी अन्य पद्धति के अनुसरण से अभिलेखन की तमाम समस्याओं का निदान किया जा सकता है।

इस्पात संयंत्रों के छोटे से छोटे काम से लेकर बड़े से बड़े काम में तकनीकी अनुशासन का अनुपालन करना होता है। ऐसा नहीं करने से भारी नुकसान की संभावना बनी रहती है। आइए, एक सिविल अभियंता के तकनीकी अनुशासन पर विचार करते हैं।

जैसाकि आप जानते हैं, इस्पात संयंत्र में उत्पादन प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है। प्रक्रिया के दौरान अक्सर उपकरणों की समस्याएँ उत्पन्न होती रहती हैं। मान लीजिए, कोई मोटर निरंतर चलते रहने के कारण अपने आधार तल/नींव पर हिलने लगता है और नियमित जाँच के अभाव में वह एक दिन अपने फाउंडेशन से उखड़ जाता है और पूरी उत्पादन प्रक्रिया को बाधित कर देता है। ऐसी स्थिति में उस मोटर को दोष देना ठीक नहीं होता, बल्कि उसके लिए सिविल अभियंता के साथ-साथ नियमित रूप से जाँच करने वाले सभी कर्मचारियों को तकनीकी रूप से अनुशासनहीन माना जाना चाहिए। क्योंकि मोटर के फाउंडेशन का निर्माण, उसकी नियमित जाँच, नियमित अनुश्रवण आदि ठीक से होने चाहिए। सभी कर्मचारियों को इस बात का बोध होना चाहिए कि वह मोटर उत्पादन प्रक्रिया के लिए कितना महत्वपूर्ण है और उसकी मानक प्रचालन पद्धति क्या है। हालाँकि यहाँ पर तकनीकी स्तर पर भी वाइब्रेशन सेंसर लगाकर यह समस्या जानने का प्रयास किया जा सकता है। लेकिन ऐसी समस्याओं को रोकने में मानव संसाधन की सतर्कता सबसे बेहतर भूमिका निभाती है।

आज भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा इस्पात उत्पादक है। इस विकास के लिए यहाँ उपलब्ध कच्चामाल जैसे लौह अयस्क तथा लागत प्रभावी श्रम काफी हद तक जिम्मेदार हैं। लेकिन ईमानदारी से यदि देखा जाए तो हमारे देश में इस्पात उत्पादन की लागत अपेक्षाकृत बहुत अधिक है। इसका मुख्य कारण हमारे यहाँ की कम उत्पादकता है। हम मानक अनुपात से अधिक बिजली का उपयोग करते हैं, मानक मात्रा से अधिक पानी की खपत करते हैं, कच्चेमाल की अधिकता या फिर अकारण उसे अधिक व्यर्थ करते हैं। इसी प्रकार सस्ते श्रम के बावजूद हमारी श्रम उत्पादकता वैश्विक मानकों से काफी कम है। दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा इस्पात उत्पादक होने के बावजूद भी हमारे पास उन्नत तकनीक का अभाव है। निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि इस्पात उद्योग का वर्तमान आर्थिक परिदृश्य निराशाजनक है। क्योंकि आगे वर्ष **2030** तक भारत को **300** मिलियन टन इस्पात का उत्पादन करना है। यदि हमें उपरोक्त लक्ष्य को हासिल करना है तो निश्चित ही हमें अपनी कार्यशैली, पद्धति एवं प्रौद्योगिकी में बहुत परिवर्तन लाना होगा।

- उप प्रबंधक (डी व ई)
राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड
विशाखपट्टणम-**530031**
मोबाइल: **+91 9701347114**

कोविड-19, एक दृष्टिकोण

- *डॉ मोटूरी श्रीनिवास व **श्री गोपाल -

प्रस्तावना :

आज सभी देश अचानक परस्पर एक-दूसरे का सहयोग करने लगे हैं, मानो विश्व-बंधुत्व का सपना साकार हो रहा है। लेकिन यह जो कुछ भी हो रहा है, वह एक नकारात्मक और दुखद स्थिति में हो रहा है। अब तक शांति समझौतों या युद्ध विरामों की संधियों ने जो नहीं किया, वह एक सूक्ष्म विषाणु ने कर दिखाया है। हम अभी तक युद्धों के लिए तैयार हो रहे थे, परमाणु हथियारों से लैस हो रहे थे। अपनी सेनाओं को सशक्त बनाने में तल्लीन थे। परंतु प्रकृति ने ऐसा खेल खेला कि पूरी मानव जाति घुटनों के बल झुक कर त्राहिमाम् करने लगी है।

दिसंबर, 2019 के दौरान जब चीन के वुहान शहर से निकले 'सिवियर एक्यूट रेस्पिरेटरी सिंड्रोम कोरोना वायरस-2 (SARS-CoV-2)' के रूप में कोविड-19 विषाणु की पहचान हुई, उस समय तक दुनिया के अनुभवी स्वास्थ्य विशेषज्ञों ने कभी सोचा भी न होगा कि यह बीमारी इतनी तेजी से फैलेगी और सदी की सबसे बड़ी महामारी कहलाने लगेगी।

नामकरण व कालक्रम :

इस अज्ञात बीमारी के मामले दिसंबर, 2019 की शुरूआत में चीन के वुहान से आने लगे थे। हालांकि इसका 'पेशेंट जीरो' अर्थात इस विषाणु का पहला रोगी कौन बना, अभी तक किसी को पता नहीं। चीनी अखबार 'साउथ चाइना मार्निंग पोस्ट' में 13 मार्च को एक खबर छपी थी कि 55 वर्ष की आयु के एक व्यक्ति में 17 नवंबर, 2019 को कुछ विशेष तरह के विषाणु पाए गए थे, लेकिन तब उसे पहचाना नहीं जा सका।

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने 31 दिसंबर, 2019 को जब इसका संज्ञान लिया तो उसके अगले ही दिन वुहान के सभी बाजार बंद कर दिए गए। ऐसा माना जा रहा है कि चीनी विषाणुवेत्ताओं को 7 जनवरी, 2020 तक इस विषाणु के बारे में जानकारी ही नहीं थी। जब वे पूरी तरह से इस नए विषाणु के बारे में आश्वस्त हो गए, तब उन्होंने इसका नाम 'नोवल कोरोना वाइरस (n-CoV)' रखा। इस बीमारी से चीन में पहली मृत्यु 11 जनवरी को हुई, जबकि इसके ठीक दो दिन बाद 13 जनवरी को थाईलैंड में भी एक व्यक्ति की मृत्यु हो गई। 23 जनवरी को लगभग 11 मिलियन वुहानवासियों को संक्रमण से बचाने के लिए एकांतवास में रहने के लिए कह दिया गया।

30 जनवरी को विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इसे 'ग्लोबल पब्लिक हेल्थ इमरजेंसी ऑफ इंटरनेशनल कंसर्न (PHEIC)' घोषित किया। लेकिन तब तक जितनी क्षति होनी थी, हो चुकी थी। ऐतिहासिक रूप से विश्व स्वास्थ्य संगठन ने ऐसी स्थिति की घोषणा अब तक केवल पाँच बार ही किया है। 11 फरवरी को विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इस बीमारी को 'कोरोना वाइरस डिसीज-19 (COVID-19)' तथा विषाणु को SARS-CoV-2 (सिवियर एक्यूट रेस्पिरेटरी सिंड्रोम कोरोना वायरस-2) नाम दिया।

प्रथम सचेतक (Whistle Blower) :

7 फरवरी, 2020 को एक चीनी डॉक्टर ली वेंलियांग की मृत्यु हो गई। उन्होंने अपनी मृत्यु से ठीक एक महीने पहले वुहान के जिस अस्पताल में वे काम करते थे, उसमें कुछ लोगों को निमोनिया जैसी बीमारी के नए विषाणु से ग्रसित होने की आशंका अपने सहकर्मी डॉक्टरों से जताई थी। लेकिन वुहान की पुलिस ने उन पर दबाव डाला कि वे लिखकर दें कि 'उन्होंने गलतबयानी की है' और उन्हें वैसा ही लिखना पड़ा। पीड़ितों की चिकित्सा करते हुए डॉक्टर ली वेंलियांग खुद भी इस विषाणु से संक्रमित हुए और वुहान सेंट्रल हॉस्पीटल में उनकी मृत्यु हो गई। डॉक्टर ली वेंलियांग की मृत्यु से समूचे विश्व को अपूरणीय क्षति पहुँची है।

भारत में कोरोना विषाणु :

भारत में कोरोना संक्रमण का पहला मामला 30 जनवरी को केरल में त्रिशूर जिले के एक छात्र में पाया गया। फिर 02 व 03 फरवरी को जिन मामलों की पुष्टि हुई, वे क्रमश: केरल से ही अलपुझा और कासरगोड जिलों से थे। लगभग एक महीने बाद 02 मार्च को दिल्ली और हैदराबाद में एक-एक मामले मिले, जो विदेश से आए थे और संक्रमित पाए गए।

इस बीच चीन तथा यूरोप के अन्य देशों एवं ईरान में बढ़ते मामलों के मद्देनजर भारत सरकार ने एक साहसिक कदम उठाया और अपने नागरिकों को वहाँ से निकालना शुरू कर दिया। 16 मार्च तक लगभग 1300 लोगों को इन 'हॉट स्पॉट' जगहों से वापस भारत लाया जा चुका था। भारत सरकार ने इस दौरान अन्य देशों के नागरिकों को भी निकालने का एक अत्यंत उल्लेखनीय काम किया। तत्पश्चात 25 मार्च से पूर्ण तालाबंदी करके देश की बहुतायत गतिविधियों को रोक दिया गया।

तालाबंदी क्यों ?

जीवन बचाने के लिए पूर्ण तालाबंदी एक बेहतर विकल्प हो सकता है लेकिन यह एकमात्र विकल्प नहीं हो सकता। फिर भी इस बात को स्वीकार करना होगा कि इससे विषाणु संक्रमण को बढ़ने से रोका जा सकेगा। यह एक दीर्घकालिक समस्या का अल्पकालिक निदान हो सकता है। लेकिन सामाजिक-आर्थिक-पर्यावरणीय लाभ-हानि के संतुलन के बीच इससे स्वास्थ्य संबंधी

नुकसान अधिक होने का अंदेशा है। जैसे कि बहुत से लोगों, विशेषत: बड़े-बुजुर्गों का अन्य सह-बीमारियों (COMORBIDTY) की वजह से मानसिक स्वास्थ्य बहुत प्रभावित होगा। जहाँ पारिवारिक समस्याएँ ठीक से संभाली नहीं जा सकेंगी, वहाँ घरेलू हिंसा बढ़ सकती है। शिशुओं को समय पर वैक्सीन नहीं मिलेगी, जिसके परिणाम दूरगामी होंगे। लोग अकर्मण्य व आलसी बनेंगे, घरों में बंद लोग हताशा व बीमारी से भयाक्रांत होंगे, थकान व चिढ़चिढ़ेपन के शिकार होंगे। मानसिक व स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ बढ़ेंगी। लेकिन तालाबंदी के कारण चिकित्साकर्मियों, मरीजों एवं जनता को एक बहुत ही महत्वपूर्ण फायदा यह हुआ है कि हमें कोरोना से लड़ने हेतु कार्यक्रम बनाने और मूलसंरचनाओं का विकास करने का पर्याप्त समय मिल गया। अन्यथा संक्रमित लोगों की संख्या तेजी से बढ़ती तो स्थिति नियंत्रण से बाहर हो सकती है।

विषाणु :

इस विषाणु (SARS-CoV-2) को समझने हेतु सबसे पहले कोरोना के विषाणुओं को समझना होगा। कोरोना विषाणु का परिवार बहुत बड़ा है। ये प्राय: सर्दी-जुकाम जैसी साँस लेने की समस्याएँ उत्पन्न करते हैं। हालाँकि मुर्गीपालन से कोरोना-विषाणुओं के उत्पन्न होने की जानकारी 1930 से पहले ही मिल चुकी है और तत्पश्चात 1960 के आसपास इसे मानव देह में पाए जाने की पुष्टि भी हुई है। अब तक सात तरह के कोरोना-विषाणुओं की पहचान हो चुकी है, जो मानव देह पर अपना दुष्प्रभाव डाल सकते हैं। इनमें से चार लगभग एक ही तरह के होते हैं। लेकिन शेष तीन - MERS-CoV (मिडिल ईस्ट रेस्पिरेटरी सिंड्रोम), SARS-CoV (सिवियर एक्यूट रेस्पिरेटरी सिंड्रोम) तथा अभी सबसे नया SARS-CoV-2 (सिवियर एक्यूट रेस्पिरेटरी सिंड्रोम कोरोना वायरस-2) हैं, जो साँस की गंभीर बीमारियों के कारण बनते हैं। हालाँकि यह भी सच है कि हम सभी अपने जीवन में कम से कम एक बार कोरोना विषाणु से ग्रसित होते हैं, लेकिन उसका लक्षण हल्का-फुल्का ही होता है।

SARS-CoV-2 विषाणु एकल रेशे का आर एन ए (Ribo Nucleic Acid) विषाणु है, जिसका व्यास लगभग 75-160 नैनोमीटर तथा वजन लगभग 0.85 अट्टो-ग्राम के बराबर होता है। 70 हजार विषाणु मिलकर किसी व्यक्ति को अस्वस्थ बनाते हैं, जिनका कुल वजन 0.0000005 ग्राम होता है। जैसाकि अभी दुनिया के सभी मरीजों की संख्या लगभग एक मिलियन है, इसका मतलब है कि अभी मात्र आधे ग्राम विषाणु दुनिया को तबाह किए हुए हैं।

इसके नए लक्षण क्या हैं?

जैसाकि कहा गया है कि कोरोना के मरीजों को बुखार, खाँसी तथा साँस लेने में दिक्कत होती है और इसके लक्षण न्यूमोनिया जैसे हैं। लेकिन बढ़ते समय के साथ-साथ कोविड-19 के लक्षणों में देह में अकड़न व ठंड लगने, माँसपेशियों में दर्द, सिरदर्द, गले में खरांस तथा अचानक स्वाद और सूँघने की क्षमता का ह्रास आदि जैसे बदलाव आ रहे हैं।

सी डी सी (Centre for Decease Control) ने साँस लेने में दिक्कत, लगातार दर्द या सीने में दवाव महसूस करने, उठने में असमर्थ होने तथा चेहरे अथवा होंठो का नीला हो जाने आदि चार प्रकार की आकस्मिक चेतावनियों के प्रति आगाह किया हुआ है, जिनके लिए तुरंत चिकित्सीय देखभाल की आवश्यकता होती है।

कोविड-19 का परीक्षण:

कोविड-19 के परीक्षण मुख्यत: दो श्रेणियों में होते हैं। पहला परीक्षण विषाणु को पहचानने हेतु होता है, जबकि दूसरा उसके दुष्प्रभाव को रोकने के लिए विकसित किए जा रहे एंटीबॉडी (सेरोलॉजी) से संबंधित होता है। सेरोलॉजिकल परीक्षण से लाभ यह है कि इससे बीमार की स्थिति और लाक्षणिक व अलाक्षणिक दोनों तरह के लोगों की संख्या पर निगरानी की जा सकती है। परीक्षण कम होने के कारण कोई भी देश अभी विश्वसनीय आँकड़े देने की स्थिति में नहीं है। क्योंकि वे अपनी आवादी के 1% लोगों का परीक्षण भी नहीं कर पाए हैं। अत: विषाणु फैलाने के वास्तविक माध्यमों की सूचना उनके पास नहीं है।

इसके पहले चिकित्सीय परीक्षण को 'रिवर्स ट्रांसक्रिप्शन पॉलिमरएज चेन रिएक्शन' (RT-PCR) कहते हैं। इसके तहत श्वास संबंधी परीक्षण जैसे 'नासोफरिंजियल स्वाव' या 'स्पूटन सैंपल' का परीक्षण किया जाता है, वाद में संक्रमण होने पर ये विषाणु श्वसन प्रणाली के बाहरी अंगों से लुप्त हो जाते हैं। फिर उनका पता लगाने के लिए श्वसन प्रक्रिया के भीतरी अंगों जैसे ब्रांचोलवएयर लेवेज और एंडोट्रचिएल (फेंफड़ों) से सैंपल लिए जाते हैं।

फिर भी इन परीक्षणों में कई असुविधाएँ भी हैं। सबसे

बड़ी असुविधा यह है कि इन परीक्षणों से केवल सक्रिय संक्रमण का ही पता लगाया जा सकता है और संक्रमण के पहले सप्ताह तक मात्र गले तक ही विषाणुओं को पाया जा सकता है। RT-PCR परीक्षण विश्वसनीय तो है, पर इसके परिणाम आने में बहुत समय लगता है तथा श्रमपूर्ण व खर्चीला भी है। इसके लिए विशेष प्रशिक्षित लोग चाहिए, जो मिलना कठिन है। दूसरे प्रकार का परीक्षण जिसे 'एंटीजेन' कहा जाता है, वह आसान है और परिणाम 30 मिनट में ही आ जाते हैं। यह परीक्षण मँहगा भी नहीं है और ना ही इसके लिए किसी विशेष उपस्कर की जरूरत होती है। पर इस परीक्षण की विश्वसनीयता कम है।

'सेरोलॉजिकल' परीक्षण रक्त के नमूनों से शरीर में 'एंटीबॉडीज' की मात्रा का पता लगाने के लिए किया जाता है। शरीर में 'एंटीबॉडीज' जो होते हैं, वे किसी संक्रमण के प्रतिक्रिया के रूप में तैयार होते हैं। किसी संक्रमण के समय में इम्यूनोग्लूबिन एम (IgM) एंटीबॉडीज सक्रिय दिखाई देते हैं और इम्यूनोग्लूबिन जी (IgG) एंटीबॉडीज बाद में दिखाई देते हैं, जिससे पता चलता है कि संक्रमण कितना पुराना है। SARS-Cov-2 के IgG का पता संक्रमण के 10-14 दिनों के बाद चलता है और 28 दिनों तक यह चरम पर होता है, फिर घटने लगता है। भारत में RT-PCR परीक्षण एवं रैपिड एंटीबॉडी परीक्षण होते हैं। दूसरा वाला परीक्षण RT-PCR से बहुत सस्ता है और इसके परिणाम भी 20-30 मिनट में ही आ जाते हैं। SARS-CoV-2 डिटेक्टर परीक्षण 100% कोरोना के विषाणु का पता लगाने हेतु ही है और इसमें RT-PCR परीक्षण से विषाणु की अनुवांशिकता का पता लगाया जाता है और इसके परिणाम 45 मिनट में आ जाते हैं।

क्या यह जैविक हथियार है?

ख्यातिप्राप्त विषाणुविज्ञानी एवं उनके सहयोगियों का मानना है कि SARS-CoV-2 का विषाणु अनुवांशिक रूप से तैयार किया गया नहीं है। इसी तरह का एक विषाणु चींटीखोर (पैंगोलिन) में पाया गया है। कुछ लोग दलील दे रहे हैं कि विषाणु पशुओं से मनुष्यों में बार-बार निकल करके आ रहे हैं। लेकिन और लोगों का मानना है कि ऐसा हो सकता है कि लगभग नवंबर, 2019 के मध्य में कभी यह विषाणु एक बार पशुओं से निकल करके मनुष्य में आया हो और उसके बाद अब मनुष्य से मनुष्य में फैल रहा हो। इस विषाणु से उत्पन्न महामारी के तथाकथित उद्गम स्थान के नजदीक बने वुहान इंस्टिट्यूट ऑफ वॉयरोलॉजी के अनुसंधानों में पता लगा है कि यह विषाणु चमगादड़ में है। इससे बहुत अटकलों को हवा मिल रही है कि इसे किसी प्रयोगशाला में बनाया गया है।

स्विट्जरलैंड के एक और महामारी विशेषज्ञ इम्मा होडक्राफ्ट का कहना है कि इसके कोई प्रमाण नहीं हैं कि इस विषाणु को जानबूझकर तैयार करके छोड़ा गया है। उन्होंने कहा कि 'षड़यंत्रकारी सिद्धांतों से कुछ नहीं होगा, बल्कि इससे भय और अफवाह पैदा होगा और कोरोना विषाणु को हराने की जंग में हमारे वैश्विक संबंधों को नुकसान होगा। जबकि विश्व स्वास्थ्य संगठन ने अफवाहों को पहले ही खारिज कर दिया है।

तो फिर यह फैला कैसे?

अभी यह साफ नहीं है कि यह कोरोना का विषाणु किस जानवर से आया है? कुछ अनुसंधानकर्त्ताओं के अनुसार यह प्रथमत: चमगादड़ों से पैदा हुआ हो सकता है। तत्पश्चात हो सकता है कि यह कस्तूरी बिलाव, चींटीखोर या सुअर जैसे जानवरों से मनुष्य तक आया हो। हालाँकि कोरोना का विषाणु चमगादड़ की आंत का विषाणु है। हो सकता है जब किसानों ने उसके मल (अच्छा उर्वरक) का उपयोग खेती में किया हो, तो यह वहीं से मनुष्य में संचारित हो गया हो। चमगादड़ खाना भी इसका एक कारण हो सकता है। हमारी अटकलें कुछ भी हों, पर 'पेशेंट जीरो' को अब तक नहीं ढूँढ़ सका है। आशंका यह भी है कि इसे फैलाने वाला कोई अन्य माध्यम हो सकता है, जिससे विषाणु अभी भी फैल रहे होंगे या आगे भी फैल सकते हैं।

इस प्रकार की अफवाहों और अमेरीका-चीन के बीच बढ़ते तनाव से केवल अनुसंधानकत्ताओं का मनोबल गिरेगा और उनके अनुसंधान की दिशा भटक सकती है। हमें विश्व स्वास्थ्य संगठन की यह चेतावनी याद रखनी चाहिए कि 'विषाणु को किसी नस्ल, रंगभेद अथवा क्षेत्र विशेष से जोड़कर नहीं देखा जाना चाहिए। यही कारण है कि विश्व स्वास्थ्य संगठन ने निष्पक्षता से इस बीमारी को कोविड-19 एवं विषाणु को SARS CoV-2 कहा है।

रोकथाम व सावधानियाँ:

अब कोरोना विषाणु के चलते लोग हाथ धोने के महत्व को जान चुके हैं। कम से कम 20 सेकेंड तक नियमित हाथ धोने की आदत के साथ-साथ अल्कोहलयुक्त सेनेटाइजर और मास्क का उपयोग बढ़ा है। सेनेटाइजर का उपयोग अब न केवल हाथ तक किया जाए, बल्कि अक्सर उपयोग की वस्तुओं जैसे घड़ी, चूड़ी, मोबाइल, कंप्यूटर के की बोर्ड आदि को भी सेनेटाइज करना जरूरी है। इधर-उधर थूकने की आदत बिल्कुल बंद होनी चाहिए। खाना, विशेष रूप से माँस, बिल्कुल पका हुआ ही खाया जाना चाहिए। यदि प्रभावित क्षेत्रों से आए हों, तो कम से कम दो हफ्ते तक स्वत: एकांतवास में रहें। यदि कोई बीमार हो, तो उसे अन्य लोगों से मिलने से बचना चाहिए और घर पर ही रहना चाहिए।

उपचार:

कोरोना विषाणु को आकर अब लगभग पाँच महीने होने वाले हैं और हम अभी भी इसकी रोकथाम के मामले में असमर्थ हैं। उपचार का हमारा तरीका मुख्यत: किसी तरह से संभाले रहने जैसा ही है। अब तक लगभग 175 प्रकार के उपचार तथा पंजीकृत

टीकाओं के चिकित्सीय प्रयोग किए जा चुके हैं। फिर भी प्रभावी चिकित्सा के तरीके नहीं मिल पाए हैं। बहुत सी चिकित्सीय प्रक्रियाएँ चल रही हैं, जिनमें रेंडिसिविर, एजिथ्रोमाइसिन, क्लारोकुइन आधारित प्रतिरोधी तत्व जैसे टोचिलीजुमैब आदि प्रमुख हैं।

बीमारी की गंभीर स्थिति में मरीज को नाक के माध्यम सामान्य ऑक्सीजनथिरैपी की जगह अपेक्षाकृत उच्च दाब का ऑक्सीजन दिया जाता है, जिसे चिकित्सीय शैली में हाई फ्लो नॉसल कैथेटर ऑक्सीजनेशन (HFNO) कहा जाता है।

चिकित्सीय प्रक्रिया में प्लाज्मा इंफ्यूजन जैसी एक और पद्धति अपनाई जा रही है। इसमें स्वस्थ हो चुके मरीजों के प्लाज्मा (कोविड-19 की बीमारी से स्वस्थ हो चुके मरीजों के रक्त का द्रव भाग) को निकाल कर पीड़ितों के शरीर में चढ़ाकर उनकी प्रतिरोधी क्षमता को बढ़ाया जा रहा है। जब कोविड-19 के मरीज को एक्यूट रेस्पिरेटरी डिस्ट्रेस सिंड्रोम (ARDS) हो जाए और मैकेनिकल वेंटिलेशन से भी कोई सुधार नहीं हो रहा हो, तो ऐसी स्थिति में एक्स्ट्राकार्पोरियल मेंब्रेन ऑक्सीजनेशन (ECMO) का उपयोग किया जा सकता है। उपर्युक्त सभी चिकित्सा पद्धतियों के फायदे और नुकसान हैं, अत: किसी भी प्रद्धति का उपयोग न्यायोचित तरीके से किया जाना चाहिए।

एच सी क्यू और कोविड:

भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आई सी एम आर) ने कोविड-19 से अत्यधिक जोखिम वाली दवा हाइड्रोऑक्सीक्लोरोकुइन के उपयोग की अधिकारिक रूप से संस्तुति की है। कुछ प्रयोगशालाओं में अनुसंधान के बाद जब ऐसा पाया गया कि कोरोना विषाणु से रोकथाम में हाइड्रोऑक्सीक्लोरोकुइन का उपयोग सार्थक है, तब यह संस्तुति दी गई। लेकिन पूर्व में भी इस तरह के परस्पर संबंध वाले (पेट्री डिश स्टडीज) अध्ययनों से साबित हो चुका है कि क्लोरोकुइन एवं हाइड्रोक्लोरोकुइन का उपयोग इबोला विषाणु, इंफ्लुएंजा विषाणु, चिकनगुनिया, डेंगू और एच आई वी से लड़ने में प्रभावी रहा है, लेकिन चिकित्सीय प्रयोग में असफल रहा है।

कोविड-19 के उपचार में हाइड्रोऑक्सीक्लोरोकुइन (HCQS) एक प्रभावी संकल्पना तो है, पर इसके लिए कोई वैज्ञानिक साक्ष्य नहीं है, जिससे कहा जा सके कि यह उपयोगी है। क्लोरोकुइन अथवा हाइड्रोऑक्सीक्लोरोकुइन (HCQS) का उपयोग हिमोग्लोबीन मेटाबोलिज्म को प्रभावित करने और प्रतिरोधकता बढ़ाने हेतु पी एच (pH) पर काम करने में बदलाव लाते हुए किया जाता है। इसका उपयोग मुख्यत: कामचलाऊ चिकित्सा (Compassionate therapy) के रूप में किया जाता है। इससे लाभ हो भी सकता है, और नहीं भी अर्थात यह घरेलू नुस्खे की तरह काम कर सकता है।

अलगाव बनाम एकांतवास:

अलगाव व एकांतवास एक नवाचार हैं, जो संक्रमित अथवा संभावित व्यक्ति के संपर्क में आने से कोई और संक्रमित न हो, इससे बचने में सहायक है। अलगाव पद्धति से बीमार व्यक्ति को स्वस्थ लोगों में से अलग किया जाता है और उनका उपचार किया जाता है, जबकि एकांतवास में उन लोगों को रखा जाता है, जो लोग संक्रमित व्यक्ति के संपर्क में आए होते हैं और उनके घूमने-फिरने पर पाबंदी होती है, ताकि यदि उनमें संक्रमण हो तो आगे किसी और में ना फैले। साथ ही उनके स्वास्थ्य पर निगरानी भी रखी जाती है। यह एक अनुश्रवणात्मक निगरानी होती है।

एकांतवास पद्धति की शुरूआत 14वीं शताब्दी से माना जाता है। सबसे पहले ऐसा प्रयोग समुद्र तट पर बसे शहरों के लोगों को प्लेग महामारी से बचाने के लिए किया गया था। जो जलयान वेनिश से आ रहे थे, उन्हें हार्बर में घुसने से पहले 40 दिनों तक हार्बर से बाहर ही लंगर डालकर खड़ा रहना होता था। इटैलियन भाषा में 40 को 'कोरंटागियोर्नी' (quarantagiorni) कहा जाता है, इस तरह से कोरंटाइन अथवा एकांतवास शब्द की उत्पत्ति हुई है।

हॉटस्पॉट बनाम कंटेनमेंट जोन:

जिले के जिन भागों से कोरोना विषाणु के 6 अथवा उससे अधिक संक्रमण के मामले (पॉजिटिव) आए हों, उन्हें हॉटस्पॉट के रूप में चिन्हित किया गया है, जबकि कंटेनमेंट एरिया भौगोलिक रूप से उस क्षेत्र को कहा जाता है, जहाँ से कोरोना विषाणु के मामले पाए गए हों और कोरोना विषाणु के प्रसार को रोकने के लिए उस क्षेत्र पर सख्ती से प्रतिबंध लगाए गए हों। इन क्षेत्रों का निर्धारण स्वास्थ्य व परिवार कल्याण मंत्रालय के द्वारा किया जाता है। हॉटस्पॉट क्षेत्र को कंटेनमेंट क्षेत्र में बदला जा सकता है, पर यह जरूरी नहीं कि कंटेनमेंट क्षेत्र हमेशा हॉटस्पॉट बना रहे। इन नियमों का अनुपालन और आरंभिक चेतावनी नहीं मानने पर उस व्यक्ति के खिलाफ महामारी बीमारी अधिनियम, 1987 और भारतीय दंड संहिता के नियमों तथा आपदा प्रबंधन अधिनियम, 2005 के खंडों के अनुसार कानूनी कार्रवाई की जा सकती है।

क्या बी सी जी से बचाव संभव है?

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार ऐसा कोई पुष्ट प्रमाण नहीं है कि बी सी जी का टीका (उन देशों, जहाँ टी बी की बीमारी होती हो, वहाँ शिशुओं को टी बी से बचाने के लिए Bacille Calmette-Guérin का टीका दिया जाता है) कोविड-19 से बचाव में सक्षम है। लेकिन हाँ, एक अनुसंधान-पत्र में यह बात जरूर कही गई है कि जिन देशों में बी सी जी के टीके सामान्यत: उपयोग किए जाते हैं, वहाँ कोविड-19 के मामले अपेक्षाकृत कम आए हैं। इस तरह के अध्ययन ज्यादातर पक्षपातपूर्ण होते हैं। वस्तुत: कुछ अन्य जीवित टीकों की तरह ही बी सी जी का टीका भी शरीर में मेटाबोलिक एवं इपिजेनेटिक बदलाव लाता है तथा इम्मुयून-

मॉड्यूलेटरी रिस्पांस को जारी रखकर विषाणुजन्यता (वायरेमिया) को कम करने तथा उसके संक्रमण की तीव्रता को घटाने एवं शीघ्र सुधारने में सहयोग करता है। फिर भी आँख मूँदकर बी सी जी के टीके का इस्तेमाल SARS-CoV-2 से लड़ने और प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए नहीं किया जाना चाहिए। यह शिशुओं के जोखिमपूर्ण होगा और उन्हें समय पर टीका नहीं मिल पाएगा।

पैराबैंगनी किरणें कोरोना के इलाज हैं?

सूर्य की किरणों में तीन तरह के पैराबैंगनी किरणें मौजूद हैं। इनमें से पहली दो प्रकार की किरणों पैराबैंगनी-ए और बी की मात्रा अधिक होती है और वे ही अत्यधिक मात्रा में पृथ्वी पर आती हैं। इनमें से पैराबैंगनी-ए किरण झुर्रियों तथा पैराबैंगनी-बी सूर्य दाह एवं त्वचा कैंसर का कारण बनती हैं। तीसरे प्रकार की किरण पैराबैंगनी-सी और खतरनाक होती है, परंतु वातावरण में मौजूद ओजोन परत द्वारा प्राय: यह सोख ली जाती है। यह अधिक ऊर्जावान एवं किसी जेनेटिक मैटीरियल, चाहे वह मानव का हो अथवा विषाणु का, उसे विखंडित करने के लिए अच्छी होती है। पूर्व के अध्ययनों से पता चला है कि पैराबैंगनी किरणें SARS जैसे अन्य कोरोना विषाणुओं के विरुद्ध कामयाब हैं। हालाँकि पैराबैंगनी-सी किरणों का उपयोग PPEs, परिवहन के साधनों को विषाणुरहित बनाने में उपयोग किया जा रहा है। पैराबैंगनी किरणों का उत्सर्जन करने वाले रोबोटों से अस्पतालों की फर्शों की सफाई की जा रही है। बैंक भी करेंसी को विषाणुरहित बनाने के लिए इसका उपयोग कर रहे हैं। फिर भी पैराबैंगनी-सी किरणें बहुत ही खतरनाक हैं, इससे कुछ ही क्षणों में सूर्यदाह हो सकता है, अत: इसे हाथों अथवा शरीर के किसी भी भाग को विषाणुमुक्त बनाने में उपयोग नहीं किया जा सकता।

कृत्रिम आसूचना का (Artificial Intelligence) सहयोग:

कोविड-19 महामारी के नियंत्रण में कुछ हद तक कृत्रिम आसूचनाएँ सहायक सिद्ध हो रही हैं। इनसे स्कैनिंग का विश्लेषण करने में सहायता मिल रही है और रेडियोलॉजिस्टों पर से दवाव कम हो रहा है। साथ ही इनसे यह आकलन भी किया जा रहा है कि मरीज को वेंटिलेटर की आवश्यकता है या नहीं। इससे आँकड़ों का मॉडलिंग व ट्रैकिंग में व्यापक सहयोग मिल रहा है। कोविड-19 से निबटने हेतु कृत्रिम आसूचनाओं के आधार पर तैयार ड्रग मॉलिक्यूल आ गए हैं और इन मॉलिक्यूलों का मानव शरीर पर परीक्षण आरंभ भी हो चुका है। इस महामारी के दौरान अस्पतालों की सफाई एवं उन्हें विषाणुमुक्त करने एवं मरीजों को दवा आदि देने का काम रोबोट करने लगे हैं।

हम किस मोड़ पर खड़े हैं?

कोविड-19 महामारी को समझने के लिए पूर्व की इंफ्लुएंजा महामारी से कुछ सीख मिल चुकी है। इस महामारी का प्रकोप धीरे-धीरे पूरी आबादी में प्रतिरोधकता (Herd immunity) बढ़ने तक अर्थात लगभग अगले 18-24 महीनों तक रह सकता है। आशा है इसका टीका 2021 में मिल सकेगा। कोविड-19 की स्थिति के बारे में कई अटकलें लगाई जा रही हैं, जिनमें से निम्नलिखित तीन प्रमुख हैं:

- पहली स्थिति जिसे 'पीक एंड वैलिज' कहा जा रहा है। इसके मुताबिक कोविड-19 की पहली बयार 2020 की शुरूआत में आई है। अगले एक-दो वर्षों में इसकी बयारें बार-बार आती रह सकती हैं।
- दूसरी स्थिति को 'फाल पीक' कहते हैं, जो कोविड-19 की पहली बयार 2020 में आई है, उसका भयानक रूप उसके गिरते समय यानि 2020 की जाड़े में आ सकती है तथा एक या छोटी-छोटी कई बयारें एक दो वर्षों में देखी जा सकती हैं।
- तीसरी स्थिति को 'स्लो बर्न' कहा गया है। इसके अनुसार कोविड-19 के मामलों की 2020 में आई पहली बयार के बाद धीरे-धीरे विना किसी पैटर्न के विषाणु का प्रसार होता रहेगा और मामले बढ़ते रहेंगे। अत: परिस्थितियाँ जो भी हों, कोविड-19 से जंग जीतने के लिए हमें अगले 18-24 महीनों तक अपने आपको तैयार रखना होगा।

सबकी जिम्मेदारी:

सरकार की ओर से तालाबंदी कर दी गई है। अगर यह आगे बढ़ाई जाती है और लंबा खींचती है, तो इसके बाद का जीवन बड़ा चुनौतीपूर्ण हो सकता है। क्योंकि अब यह सबकी जिम्मेदारी बन चुकी है कि कोविड-19 को हराना है। तालाबंदी के बाद जब लोगों की गतिविधियाँ तेज और गैर-जिम्मेदार तरीके से बढ़ेंगी तो पॉजिटिव मामलों की बाढ़ आ सकती है। इसलिए यह बहुत महत्वपूर्ण होगा कि डॉक्टरों, स्वास्थ्यकर्मियों, सरकारों की जिम्मेदारियों के साथ-साथ हर एक नागरिक की जिम्मेदारी बढ़ेगी। सभी को मिलकर अपने देश, समाज, अर्थव्यवस्था, अपने परिवार एवं स्वयं की रक्षा की जिम्मेदारी ठीक से निभानी होगी। इन परिस्थितियों में हमारी जीत तभी हो सकती है, जब निर्णय लेने और समस्याओं का प्रबंध करने में ईमानदारी होगी और साथ ही सरकार एवं विज्ञान में परस्पर विश्वास होगा। अंतत: यही कहना है कि 'स्टे होम, स्टे सेफ' यह सिद्धांत सर्वोत्तम है। हमें प्रशासन एवं सरकार का सहयोग करते हुए जिम्मेदारियों को अपनाना होगा और स्वीकार करना होगा कि इसे हम, केवल हम ही नियंत्रण में ला सकते हैं।

- *उप महाप्रबंधक (चिकित्सा)
मोबाइल: +91 9849000037
** वरिष्ठ सहायक (राजभाषा)
मोबाइल: +91 9989888457
राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड
विशाखपट्टणम

कोक ओवेन बैटरी-5

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड में **7.5** मिलियन टन द्रव इस्पात उत्पादन क्षमता के विस्तारण चरण के अंतर्गत कोक ओवेन बैटरी-**4** एवं **5** के निर्माण की परिकल्पना की गई थी। अप्रैल **2009** के दौरान कोक ओवेन बैटरी-**4** का निर्माण एवं प्रवर्तन किया गया, जबकि कोक ओवेन बैटरी-**5** का प्रवर्तन अभी प्रगतिशील है।

पूर्व की भाँति इस बैटरी-**5** के भी प्रत्येक ओवेन (भट्ठी) की ऊँचाई **7** मीटर है, जो टॉप चार्जिंग एवं अपशिष्ट गैस पुन: परिसंचरण की सुविधा से लैस है। साथ ही बैटरी के दोनों ओर गैस संग्रहण केंद्र (जी सी एम) स्थापित हैं। संयंत्र में उपलब्धता के आधार पर या तो मिश्रित गैस या कोक ओवेन अथवा धमन भट्ठी गैस के माध्यम से कोयले का बाह्य ऊष्मन किया जा सकता है।

कार्बनीकरण प्रक्रिया:

बैटरी में कोयले के भंडारण हेतु **4000** घन मीटर क्षमता वाला कोयला टॉवर स्थापित किया गया है, जहाँ से चार्जिंग कार में कोयला पहुँचाया जाएगा। फिर पारंपरिक वैल्यूमेट्रिक प्रभरण पद्धति को अपनाते हुए स्क्रू फीडर एवं टेलिस्कोपिक च्यूट की सहायता से ओवेन में कोयले का प्रभरण करके कोक बनाया जाएगा। इसके अंतर्गत मिश्रित कोकिंग कोयले का लगभग **1050** से **1100**^{0} सेंटीग्रेड के उच्च ऑक्सीजन विहीन तापमान पर **16-18** घंटों तक कार्बनीकरण किया जाएगा। इस प्रक्रिया के दौरान धीरे-धीरे जब तापमान बढ़ेगा, तब बैटरी के दोनों ओर प्लास्टिक परत बनेगी, जहाँ CH4, CnHn, तार, नैप्थलीन, हाइड्रोजन गैस जैसे कोयले के वाष्पशील तत्व उत्सर्जित होंगे। बैटरी का प्रत्येक ओवेन गैस संग्रहण केंद्र (जी सी एम) से जुड़ा होगा। उत्सर्जित गैसों को यहाँ संग्रहित किया जाएगा और फिर इन गैसों से विभिन्न प्रक्रियाओं के माध्यम से उप-उत्पाद बनाये जायेंगे।

कोक शुष्क शीतलन संयंत्र:

कोक शुष्क शीतलन संयंत्र (सी डी सी पी) में लाल तप्त कोक को निष्क्रिय गैसों से लगभग **900-1000**^{0} सेंटीग्रेड के तापमान पर शीतलित किया जाएगा। इस प्रक्रिया के दौरान लगभग **800**^{0} सेंटीग्रेड तापमान पर उत्सर्जित ताप ऊर्जा को अपशिष्ट ऊष्मा पुन:प्राप्ति बॉयलर में संग्रहित किया जाएगा। तत्पश्चात लगभग **40** किलोग्राम प्रति वर्ग सेंटीमीटर पर उच्च दाब एवं लगभग **440**^{0} सेंटीग्रेड के तापमान पर इस ऊष्मा के उपयोग से **25** टन प्रति घंटे का भाप बनाया जाएगा, जिससे **14** मेगावाट विद्युत उत्पादन होगा।

कोयला रसायन संयंत्र की विशेषताएँ:

कोक ओवेन बैटरी-**5** के कोयला रसायन संयंत्र की विशेषताएँ निम्नवत होंगी:

- √ ठोस कोक ओवेन गैस का सतत निष्कासन
- √ गैस संग्रहण केंद्र का सतत शीतलन
- √ गैस संग्रहण केंद्र में पूर्व-निर्धारित दाव का अनुरक्षण
- √ ठोस कोक ओवेन गैस से तार, नैप्थलीन, अमोनिया एवं हाइड्रोजन सल्फाइड जैसे तत्वों को निकालकर उसका ईंधन के रूप में परिष्करण
- √ फिनॉलिक बहि:स्राव के उपचार के माध्यम से केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण मंडल एवं आंध्रप्रदेश प्रदूषण नियंत्रण मंडल के निर्धारित मानकों के अनुरूप विद्युत उत्पादन

कोयला रसायन संयंत्र में सबसे पहले कोक ओवेन गैस पर फ्लशिंग लिकर छिड़ककर तार को अलग कर दिया जाएगा, जिससे कोक ओवेन गैस का तापमान **800** से **85**^{0} सेंटीग्रेड तक कम होगा। तत्पश्चात कोक ओवेन गैस को गैस संग्रहण केंद्र से सेपरेटर और फिर प्राइमरी गैस कूलर में भेजा जा सकेगा। फिर शीतलित जल का उपयोग करते हुए कोक ओवेन गैस से तार को लगभग पूर्णत: निष्कासित किया जाएगा, जिससे उसका तापमान **25**^{0} सेंटीग्रेड तक कम होगा।

इसके उपरांत कोक ओवेन गैस को एक्जास्टर में भेजकर उसे संघनित किया जाएगा। तत्पश्चात उसे एस सी पी एवं एन सी पी (H_2S/NH_3 एवं नैप्थलीन स्क्रबिंग संयंत्र) में भेजा जाएगा, जहाँ H_2S स्क्रबर, कांवि-स्क्रबर, NH_3 स्क्रबर एवं नैप्थलीन स्क्रबर के उपयोग के माध्यम से उसमें से अमोनिया, हाइड्रोजन सल्फाइड और नैप्थलीन अलग कर दिये जायेंगे। इस पूरी प्रक्रिया की पूर्ति के पश्चात कोक ओवेन गैस

को कोक ओवेन बैटरी-5 सहित विभिन्न विभागों में ईंधन के रूप में उपयोग हेतु भेजा जाएगा।

संवर्धित लिकर को एस सी पी एवं एन सी पी से लिकर स्ट्रिपिंग संयंत्र (एल एस पी) में भेजा जाएगा, जहाँ लाइव स्ट्रीम का उपयोग करके NH_3 व H_2S को अलग करना संभव हो पाएगा। यहाँ स्ट्रिपर के निचले भाग में संघनित अमोनिया को घुलने हेतु 20% कॉस्टिक सोडा सोल्यूशन का उपयोग किया जाएगा। फिर NH_3 व H_2S से संवर्धित गैस को स्ट्रिपर के ऊपरी हिस्से से आगे की प्रक्रिया हेतु सल्फर पुन:प्राप्ति संयंत्र में भेजा जाएगा।

सल्फर पुन:प्राप्ति संयंत्र में अपनाई जानेवाली रसायनिक प्रक्रिया को क्लॉज प्रक्रिया कहा जाता है। इसके प्रमुख उपकरण क्लॉज किल्न, क्लॉज रिएक्टर, अपशिष्ट ऊष्मा बॉयलर, सल्फर कंडेंसर, सल्फर सेपरेटर, लिक्विड सल्फर स्टोरेज टैंक, कोक ओवेन गैस ब्लोअर एवं प्रॉसेस एयर ब्लोअर हैं। क्लॉज किल्न उत्प्रेरक युक्त (1150^o सेंटीग्रेड) उच्च तापमान वाला एक रिएक्टर है। यहाँ अमोनिया को गलाकर नाइट्रोजन एवं हाइड्रोजन ऑक्साइड में परिवर्तित किया जाएगा। हाइड्रोजन ऑक्साइड की आंशिक मात्रा को प्रॉसेस एयर द्वारा सल्फर ऑक्साइड में परिवर्तित किया जाएगा। क्लॉज किल्न में निम्नलिखित अभिक्रियाएँ होती हैं:

$$4HCN + 30_2 \longleftrightarrow 2H_2O + 2N_2 + 4CO$$
$$4NH_3 + 3O_2 \longleftrightarrow 6H_2O + 2N_2$$
$$2H_2S + 3O_2 \longleftrightarrow 2H_2O + 2SO_2$$
$$2H_2S + O_2 \longleftrightarrow 2H_2O + S_2$$

तत्पश्चात कोक ओवेन गैस को क्लॉज रिएक्टर से सल्फर कंडेंसर में भेजा जाएगा, जहाँ गैस को शीतलित करके संघनित सल्फर को अलग किया जाएगा। गैस अवशेष को टेल गैस कहा जाता है। क्लॉज रिएक्टर में निम्नलिखित अभिक्रियाएँ होती हैं:

$$COS + H_20 \longleftrightarrow H_2S + CO_2$$
$$CS_2 + 2H_2O \longleftrightarrow 2H_2S + CO_2$$
$$2H_2S + SO_2 \longleftrightarrow 2H_2O + (3/x)S_x$$

लिक्विड सल्फर को हाइड्रॉलिक सील के माध्यम से इंटरमीडिएट टैंकों में भेजा जाएगा, जहाँ से उसे सल्फर सॉलिडिफिकेशन संयंत्र (एस एस पी) में पंप किया जाएगा। लिक्विड सल्फर सॉलिडिफिकेशन टैंकों में नाइट्रोजन आच्छादन एवं भाप का निष्कासन किया जाता है, जिससे टैंकों में हाइड्रोजन ऑक्साइड का उत्सर्जन होता है और पर्यावरण प्रदूषण नियंत्रित होता है। पर्यावरण सुरक्षा उपायों के अनुरूप कार्यस्थल पर ऑक्सीजन अनुश्रवण प्रणालियों की व्यवस्था भी की गई है।

सल्फर सॉलिडिफिकेशन संयंत्र:

यहाँ 600 किलोग्राम प्रति घंटे की क्षमता वाली पेस्टिलेशन इकाई में लिक्विड सल्फर को 2-4 मिलिमीटर व्यास के सॉलिड सेमी स्फेरिकल सल्फर पेलेट में परिवर्तित किया जाएगा। पेस्टिलेशन इकाई में मुख्यत: रोटोफार्म, स्टील बेल्ट कन्वेयर एवं अप्रत्यक्ष शीतलन प्रणाली शामिल हैं। रोटोफार्म के माध्यम से लिक्विड सल्फर को ड्रॉपलेट के रूप में स्टील कन्वेयर बेल्ट पर पहुँचाया जाएगा। वहाँ लिक्विड सल्फर शीतलित होकर पेलेट में परिवर्तित होगा। पेस्टिलेशन इकाई की अंतर्निहित प्रणाली द्वारा सॉलिड पेलेटों को कन्वेयर से प्राप्त किया जाएगा और फिर बकेट एलिवेटर से भंडारण बंकर में भेजा जाएगा। बंकर में स्थित तोलनयंत्र से पेलेटों को ट्रक में पहुँचाया जाएगा।

इस बैटरी की विशेषताएँ:

इस बैटरी की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं:

- उच्च उत्पादकता एवं कोक की बेहतर गुणवत्ता की प्राप्ति में सहायक तथा प्रचालन की संख्या कम होने से त्रुटिपूर्ण उत्सर्जन में कमी।
- ऊँची बैटरी में प्रभरण के दौरान बृहद मात्रा में कोयला डालने की सुविधा, जिससे बड़ी धमन भट्ठियों के लिए अपेक्षित अनुसार मजबूत कोक एवं गुणों में सुधार।
- ओवेन की ऊँचाई अधिक होने से ओवेन की प्रवाह क्षमता में बढ़त, जिससे जगह की आवश्यकता, मूलसंरचना, प्रचालन एवं प्रति टन कोक अनुरक्षण लागत में कमी।
- ऊँची बैटरी में ओवेन की संख्या कम होने के कारण पुशिंग के दौरान दरवाजे, स्टैंड पाइप आदि को खोलने की आवृत्ति और त्रुटिपूर्ण उत्सर्जन में कमी। साथ ही थर्मल शॉक की आवश्यकता में कमी, जिससे कोक ओवेन बैटरियों के महत्वपूर्ण सिलिका ब्रिकवर्क की कार्यक्षमता में बढ़त।

नई कोक ओवेन बैटरी-5 की स्थापना के दौरान सांविधिक प्राधिकारियों द्वारा निर्धारित सुरक्षा मानकों एवं वायु प्रदूषण निवारण मानकों की प्राप्ति हेतु कई उपाय किये गये, जिनमें शून्य रिसाव, दरवाजों की हाइड्रो जेट सफाई, पुशर कार के अंतर्गत लेवेलर मफ, हुड सहित गाइड कार, चार्जिंग कार के अंतर्गत ओवेन टॉप वैक्यूम क्लीनर, साइक्लोन, बैग फिल्टर, डस्ट सेट्लिंग बंकर, आई डी फैन, चिमनी सहित डस्ट क्लीनिंग स्टेशन आदि शामिल हैं। धूल निपटान बंकर से प्रति घंटे लगभग 1.5 टन धूल के निष्कासन की सुविधा स्थापित की गई है, जिसे आगे के उपयोग हेतु ट्रक के माध्यम से सिंटर संयंत्र, यार्ड आदि में भेजा जाएगा।

निष्कर्षत: इस बैटरी के अभिकल्प एवं अन्य सुविधाओं को स्थापित करने के पीछे आर आई एन एल की नई धमन भट्ठी की गुणवत्तापूर्ण कोक के उत्पादन पर ध्यानकेंद्रित किया गया है। आयातित और देशीय कोकिंग कोयले से आवश्यकता के अनुसार बेहतर कोक के उत्पादन को लक्ष्य में रखते हुए इस बैटरी को स्थापित किया गया है, जिसमें विश्वस्तरीय स्वचालन एवं अन्य प्रक्रियाओं को अपनाया गया है।

'इस्पात की खपत बढ़ाते हुए देश की अर्थव्यवस्था का विकास' विषय पर कार्यशाला का आयोजन

'इस्पात की खपत बढ़ाने के माध्यम से देश की अर्थव्यवस्था का विकास' नामक विषय पर 24 फरवरी, 2020 को इस्पात मंत्रालय द्वारा आयोजित कार्यशाला में माननीय केंद्रीय पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस व इस्पात मंत्री श्री धर्मेंद्र प्रधान ने कहा कि प्रधान मंत्री आवास योजना, हर घर जल योजना जैसी विभिन्न सरकारी योजनाओं से देश में इस्पात की खपत बढ़ेगी। आगे उन्होंने कहा कि देश में लगभग 16,000 किलोमीटर गैस पाइपलाइन के निर्माण से भी इस्पात की खपत बढ़ेगी।

इस्पात उद्योग द्वारा नीतिगत क्षेत्रों में शून्य-आयात आदर्श

इस्पात मंत्रालय द्वारा सी आई आई के सहयोग से 17 फरवरी को आयोजित समारोह में माननीय केंद्रीय पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस व इस्पात मंत्री श्री धर्मेंद्र प्रधान ने इस्पात उद्योग, रेलवे एवं रक्षा क्षेत्रों को देश की घरेलू आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु दीर्घकालिक कार्य योजना बनाने का सुझाव दिया। उन्होंने सरकार की 'हर काम देश के नाम' परियोजना का उल्लेख करते हुए नये भारत के विकास में सभी क्षेत्रों को अपना सहयोग देने की सलाह दी। इस अवसर पर उन्होंने इस्पात संयंत्रों में शून्य दुर्घटना को सुनिश्चित करने हेतु 'सुरक्षा दिशानिर्देशों' का विमोचन किया।

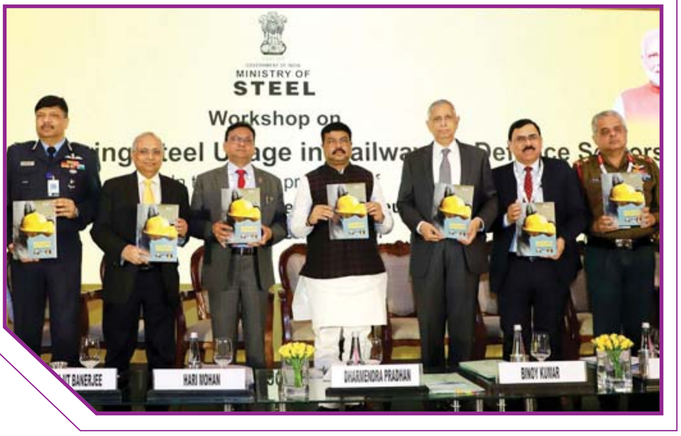

देशीय प्रौद्योगिकियों का निर्यात हो: केंद्रीय इस्पात मंत्री

नई दिल्ली में 23 दिसंबर, 2019 को आयोजित 33 वें ऑल इंडिया इंडक्शन फर्नेस असोसिएशन ऑफ इंडिया के राष्ट्रीय समारोह में माननीय केंद्रीय पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस व इस्पात मंत्री श्री धर्मेंद्र प्रधान ने कहा कि इस्पात उद्योग को सस्ती ऊर्जा की आवश्यकता है। अत: इस्पात उद्योग द्वारा ऊर्जा के नये स्रोतों की तलाश की जा रही है। उन्होंने कहा कि देश गैस आधारित अर्थव्यवस्था की ओर अग्रसर हो रहा है और हमारे देश में 600 मिलियन एम टन बायोमास रिजर्व हैं। इस प्रौद्योगिकी के उपयोग से बायो ऊर्जा के उत्पादन हेतु 5000 संयंत्रों की स्थापना का लक्ष्य है।

'हरित इस्पात' लक्ष्य की प्राप्ति हो: श्री धर्मेंद्र प्रधान

भारतीय इस्पात संघ द्वारा 21 नवंबर, 2019 को नई दिल्ली में आयोजित समारोह में माननीय केंद्रीय पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस व इस्पात मंत्री श्री धर्मेंद्र प्रधान ने पर्यावरण संरक्षण को सुनिश्चित करने के क्रम में इस्पात उद्योग को पर्यावरण मैत्री प्रौद्योगिकी व प्रक्रियाओं के माध्यम से 'हरित इस्पात' एवं राष्ट्र के समक्ष मौजूद 450 गिगावाट अक्षय ऊर्जा उत्पादन लक्ष्य की पूर्ति का सुझाव दिया। उन्होंने पेट्रोलियम व प्राकृतिक गैस मंत्रालय द्वारा पूर्वी भारत में स्थापित प्रधान मंत्री ऊर्जा गंगा परियोजना का विवरण दिया, जिससे वहाँ के इस्पात संयंत्रों को गैस की आपूर्ति की जाएगी।

इस्पात मंत्री का वाइजाग स्टील में आगमन

माननीय केंद्रीय पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस व इस्पात मंत्री श्री धर्मेंद्र प्रधान ने आर आई एन एल में अपने भ्रमण के दौरान 9 नवंबर, 2019 को धमन भट्ठी-3, इस्पात गलन शाला-2 इकाइयों का संदर्शन किया एवं इन इकाइयों में अपनाई गई अद्यतन प्रौद्योगिकी के प्रति संतुष्टि व्यक्त की। संगठन के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री पी के रथ ने मंत्री महोदय को संयंत्र के विस्तारण एवं आधुनिकीकरण, कणिति बैलेंसिंग रिजर्वायर-2, सेंट्रल डिस्पैच यार्ड एवं ट्विन लैडल हीटिंग फर्नेस आदि इकाइयों एवं गतिविधियों की जानकारी दी।

संगठन ने इंटर स्टील बैडमिंटन चैंपियनशिप जीता

उक्कु इंडोर स्टेडियम में 8 मार्च, 2020 को संपन्न इंटर स्टील बैडमिंटन चैंपियनशिप 2019-20 के फाइनल में आर आई एन एल ने राउरकेला इस्पात संयंत्र को 2-0 से हराया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं संगठन के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री पी के रथ ने विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किये। उन्होंने इस अवसर पर खेलों का महत्व बताते हुए कर्मचारियों को खेलों में भाग लेने, तद्वारा शारीरिक स्वास्थ्य बनाये रखने की सलाह दी। कार्यक्रम में संगठन के निदेशक एवं कार्यपालक निदेशकगण, वरिष्ठ प्राधिकारी एवं श्रमिक संघों के प्रतिनिधि उपस्थित थे।

राष्ट्रीय सुरक्षा दिवस का आयोजन

आर आई एन एल के सुरक्षा अभियांत्रिकी विभाग द्वारा 7 मार्च, 2020 को आयोजित राष्ट्रीय सुरक्षा दिवस समारोह में मुख्य अतिथि एवं आंध्र प्रदेश सरकार के फैक्टरी निदेशक श्री डी सी एस वर्मा ने संगठन में बेहतर सुरक्षा मानकों के अनुरक्षण के प्रति संतुष्टि व्यक्त की। संगठन के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री पी के रथ ने सुरक्षित कार्य संस्कृति में अद्यतन प्रौद्योगिकी के उपयोग की आवश्यकता का उल्लेख किया। सुरक्षा विभागाध्यक्ष श्री कृष्णय्या ने संगठन में सुरक्षा निष्पादन एवं सुरक्षा प्रचार गतिविधियों के संबंध में प्रस्तुतीकरण दिया।

सी एस आई वार्षिक राष्ट्रीय सम्मेलन

आर आई एन एल के सौजन्य से कंप्यूटर सोसाइटी ऑफ इंडिया, विशाखपट्टणम द्वारा 20-21 फरवरी, 2020 को दो दिवसीय 'कंप्यूटर सोसाइटी ऑफ इंडिया के वार्षिक राष्ट्रीय सम्मेलन' का आयोजन किया गया। सम्मेलन का विषय 'एड्ज कंप्यूटिंग, प्रॉसेस आटोमेशन थ्रू रोबोटिक्स, इंडस्ट्री 4.0 एवं कॉग्निटिव टेक्नॉलॉजी' था। कार्यक्रम के संरक्षक एवं संगठन के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री पी के रथ ने मुख्य अतिथि के रूप में अपना संदेश प्रस्तुत किया। निदेशक (कार्मिक) श्री के सी दास और निदेशक (परियोजना) श्री के के घोष ने भी अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम की गरिमा बढ़ाई।

फोर्ज्ड व्हील संयंत्र में हॉट ट्रायल का शुभारंभ

रायबरेली, उत्तर प्रदेश के लालगंज में स्थित आर आई एन एल के फोर्ज्ड व्हील संयंत्र में 8 फरवरी, 2020 को फोर्जिंग लाइन के हॉट ट्रायल का शुभारंभ किया गया। इस कार्यक्रम में अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री पी के रथ, निदेशक (वाणिज्य) श्री डी के मोहंती, निदेशक (परि) श्री के के घोष, निदेशक (प्रचालन) श्री ए के सक्सेना और रेलवे मंडल के कार्यपालक निदेशक श्री लक्ष्मीरमण एवं एस एम एस जर्मनी के मिस्टर क्लूगे उपस्थित थे। यह फोर्ज्ड व्हील संयंत्र 1680 करोड़ रुपये की लागत से स्थापित की गई। संयंत्र की वार्षिक उत्पादन क्षमता 100000 व्हील है।

आर आई एन एल के खुदरा बिक्री केंद्र का उद्घाटन

संगठन के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री पी के रथ ने 27 जनवरी, 2020 को विशाखपट्टणम के पेदगंट्याडा में नवनिर्मित खुदरा बिक्री केंद्र से बिक्री की शुरुआत की। इस खुदरा बिक्री केंद्र का निर्माण 5 एकड़ के क्षेत्र में 4.36 करोड़ रुपये की लागत से किया गया। इसकी भंडारण क्षमता 16,000 मेट्रिक टन है। यह केंद्र विपणन तंत्र को सुदृढ़ करने एवं सभी प्रकार के ग्राहकों को इस्पात उत्पादों के वितरण हेतु बनाया गया। यह खुदरा बिक्री केंद्र वैकल्पिक बाजार में बिक्री की स्थिति बनाये रखने एवं ग्राहकों को उनकी दहलीज पर सामग्री मुहैय्या कराने की सुविधा प्रदान करता है।

नववर्ष 2020 का स्वागत

नववर्ष 2020 के स्वागत समारोह में आर आई एन एल समूह को बधाई देते हुए संगठन के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री पी के रथ ने कहा कि संगठन ने बाजार की अनियंत्रित स्थिति के बावजूद अप्रैल-दिसंबर, 2019 के दौरान 12,700 करोड़ रुपये का बिक्री कारोबार किया है। निर्यातों में 119% वृद्धि एवं मूल्यवर्धित इस्पात की बिक्री में 79% वृद्धि हासिल की गई है। उन्होंने यह भी बताया कि संगठन द्वारा कच्चेमाल संरक्षण के मामले में ई-नीलामी में भाग लेने, सिंटर संयंत्र में लौह अयस्क फाइंस की जगह स्लाइम्स के उपयोग की शुरुआत की गई है।

इंटर स्टील प्लांट क्रिकेट चैंपियनशिप

सेल के बोकारो इस्पात संयंत्र के क्रीड़ा एवं नागरिक सुविधा विभाग के तत्वावधान में 7 से 15 जनवरी, 2020 तक इंटर स्टील प्लांट क्रिकेट चैंपियनशिप आयोजित किया गया। 15 जनवरी को आयोजित इस चैंपियनशिप के फाइनल मैच में राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड, विशाखपट्टणम की टीम ने बोकारो इस्पात संयंत्र की टीम को हराकर चैंपियनशिप की ट्रॉफी हासिल की। क्रिकेट टीम की इस विजय पर आर आई एन एल परिवार में खुशी व्याप्त है। इस संदर्भ में संगठन के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री पी के रथ एवं वरिष्ठ प्राधिकारियों ने विजेता खिलाड़ियों को बधाई दी।

ऊर्जा संरक्षण पखवाड़ा समारोह का आयोजन

राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण दिवस के अवसर पर आर आई एन एल में ऊर्जा संरक्षण पखवाड़ा मनाया गया। 16 दिसंबर, 2019 को आयोजित इसके समापन समारोह में मुख्य अतिथि एवं संगठन के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री पी के रथ ने कहा कि आर आई एन एल ऊर्जा संरक्षण में उत्कृष्टता का प्रदर्शन करते हुए सर्वश्रेष्ठ ऊर्जा दक्ष इस्पात संयंत्र के रूप में पहचाना जा रहा है। उन्होंने बताया कि ऊर्जा संरक्षण इस्पात उद्योग के प्रमुख तकनीकी-आर्थिक मापदंडों में से है, जिससे कंपनी की वित्तीय स्थिति में सुधार लाने में सहयोग मिलता है।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन

आर आई एन एल के कर्मचारियों में ईमानदारी एवं सत्यनिष्ठा के प्रति जागरूकता लाने के उद्देश्य से 28 अक्टूबर से 2 नवंबर, 2019 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया गया। अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री पी के रथ ने संगठन के वरिष्ठ प्राधिकारियों के साथ सभी कर्मचारियों से सत्यनिष्ठा शपथ ग्रहण कराया। संयंत्र परिसर के विभिन्न स्कूलों व कालेजों के विद्यार्थियों में सत्यनिष्ठा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से विभिन्न प्रतियोगिताएँ भी आयोजित की गईं। 2 नवंबर को आयोजित समापन समारोह में प्रतियोगिता विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किये गये।

गरीब व जरूरतमंद बच्चों के लिए मध्याह्न भोज

संगठन के निदेशक (कार्मिक) श्री किशोर चंद्र दास ने कंपनी की निगमित सामाजिक दायित्व गतिविधियों के तहत 1 नवंबर, 2019 को उक्कुनगरम एवं पेदगंट्याडा के विशाखा विमल विद्यालयों के गरीब एवं जरूरतमंद बच्चों के लिए मध्याह्न भोज परियोजना की शुरुआत की। उन्होंने इस परियोजना के माध्यम से परित: गाँवों के जरूरतमंद बच्चों को पौष्टिक एवं स्वास्थ्यकर भोजन मुहैय्या कराने के प्रति संतुष्टि व्यक्त की। यह परियोजना वर्ष 2019-20 के लिए स्कूली शिक्षा, पौष्टिकता एवं स्वास्थ्य संबंधी भारत सरकार के लक्ष्यों के दृष्टिगत संचालित की गई।

अरुणोदया विशेष स्कूल में बाल दिवस का आयोजन

स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू की जयंती के अवसर पर 14 नवंबर, 2019 को उक्कुनगरम के अरुणोदया विशेष स्कूल में 'बाल दिवस' मनाया गया। विस्टील महिला समिति की अध्यक्षा श्रीमती शारदा रथ कार्यक्रम की मुख्य अतिथि थीं। उन्होंने बच्चों को फूल और चाकलेट वितरित किये। इस अवसर पर विशाखा अकादमी ऑफ पैरामेडिकल साइंसेस (वी ए पी एम एस) कालेज द्वारा बच्चों की क्षमताओं के आकलन हेतु फिजियोथेरपी शिविर चलाया गया। कार्यक्रम में विस्टील महिला समिति के सदस्य, स्कूल के कर्मचारीगण उपस्थित थे।

कंपनी के उत्पादों का रेलवे मार्ग से प्रेषण की शुरुआत

आर आई एन एल के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री पी के रथ ने संयंत्र परिसर में **200** एकड़ के क्षेत्र में **320** करोड़ रुपये की लागत से निर्मित सेंट्रल डिस्पाच यार्ड से **12** अक्टूबर, **2019** को कंपनी के लगभग **2500** टन के विभिन्न उत्पादों के **43** वैगनों के एक पूरे रैक के रेल मार्ग से प्रेषण की शुरुआत की। सेंट्रल डिस्पाच यार्ड एक ऐसी परियोजना है, जो लॉजिस्टिक्स में सुधार लाने एवं देश के विभिन्न ग्राहकों को तथा देश भर में व्याप्त आर आई एन एल के विपणन स्टॉकयार्डो में उत्पादों के रेल एवं सड़क मार्ग से प्रेषण की सुविधाओं से लैस है।

राष्ट्रीय एकता दिवस का आयोजन

आर आई एन एल में **31** अक्टूबर, **2019** को सरदार वल्लभभाई पटेल की जन्मतिथि के अवसर पर संगठन के खेल विभाग द्वारा राष्ट्रीय एकता दिवस समारोह मनाया गया। इस अवसर पर संगठन में एकता दौड़ आयोजित की गई। संगठन के कर्मचारियों एवं उक्कुनगरम के स्कूली बच्चों ने बड़ी संख्या में इस दौड़ में भाग लिया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं संगठन के निदेशक (वाणिज्य) श्री डी के मोहंती ने इस एकता दौड़ का शुभारंभ किया। कार्यक्रम में श्री मोहंती ने सभी प्रतिभागियों से राष्ट्रीय एकता दिवस शपथ ग्रहण कराया।

आर आई एन एल को स्टार परफार्मर अवार्ड

आर आई एन एल को वर्ष **2017-18** के लिए भारी उद्योग श्रेणी के अंतर्गत स्टार परफार्मर अवार्ड प्राप्त हुआ। संगठन के कार्यपालक निदेशक (विपणन) श्री एस के चक्रवर्ती और महाप्रबंधक (विपणन)-आई टी डी श्री बंशीधर राउत ने **12** अक्टूबर, **2019** को हैदराबाद के ई ई पी सी इंडिया द्वारा आयोजित एक समारोह में तेलंगाना के माननीय राज्यपाल श्रीमती तमिलसाई सौंदरराजन से यह पुरस्कार ग्रहण किया। संगठन के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री पी के रथ ने इस उपलब्धि हेतु आर आई एन एल समूह को बधाई दी।

आर आई एन एल में गांधी जयंती मनाई गई

आर आई एन एल में **2** अक्टूबर को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की **150**वीं जयंती मनाई गई। इस अवसर पर अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री पी के रथ ने महात्मा गांधी जी की सेवाओं, सिद्धांतों एवं उन्नत नैतिक मूल्यों को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि गांधी जी ने सदैव शिक्षा, स्वच्छता, स्वास्थ्य एवं सामाजिक समानता को महत्व दिया। श्री रथ ने कर्मचारियों को विपणन के क्षेत्र में भी गांधी जी के सिद्धांतों को अपनाते हुए ग्राहक संतुष्टि पर ध्यानकेंद्रित करने की बात कही। श्री रथ ने कार्यक्रम में उपस्थित सभी कर्मचारियों को स्वच्छता शपथ दिलाया।

क्षेत्रीय कार्यालय (उत्तर) में हिंदी दिवस संपन्न

नई दिल्ली स्थित क्षेत्रीय कार्यालय में **14-15** नवंबर, **2019** को हिंदी कार्यशाला एवं हिंदी दिवस कार्यक्रम आयोजित किये गये। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं इस्पात मंत्रालय के संयुक्त निदेशक श्री आनंद कुमार ने कार्यालय में राजभाषा के प्रभावी कार्यान्वयन के प्रति संतुष्टि व्यक्त की। क्षेत्रीय प्रबंधक (उत्तर) व महाप्रबंधक श्री अरविंद पांडेय एवं महाप्रबंधकगण श्री अरुण कुमार शर्मा, श्री के सी साहू, श्री अतनु दत्ता एवं कार्यालय के शेष कर्मचारियों के साथ वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) श्रीमती वी सुगुणा एवं वरिष्ठ सहायक (राजभाषा) श्री गोपाल भी कार्यक्रम में उपस्थित थे।

नगर प्रशासन विभाग में हिंदी कार्यान्वयन दिवस संपन्न

संगठन के नगर प्रशासन विभाग में **20** फरवरी, **2020** को हिंदी कार्यान्वयन दिवस मनाया गया। मुख्य महाप्रबंधक (नगर प्रशासन) श्री एफ के लकड़ा ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। महाप्रबंधक (राजभाषा) एवं प्रशासन प्रभारी श्री ललन कुमार ने कार्यक्रम में प्रतिभागियों को राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के तहत किये जानेवाले उपायों का विवरण दिया। प्रतिभागियों को हिंदी के प्रयोग हेतु अभिप्रेरित करते हुए विभिन्न प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। तत्पश्चात विजेताओं को पुरस्कार भी प्रदान किये गये।

क्षेत्रीय कार्यालय (दक्षिण) में हिंदी दिवस संपन्न

चेन्नई स्थित क्षेत्रीय कार्यालय में **9-10** जनवरी, **2020** को हिंदी दिवस कार्यक्रम आयोजित किया गया। क्षेत्रीय प्रबंधक श्री आर पी शेखर ने कार्यक्रम का शुभारंभ किया। सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) डॉ टी हैमावती ने प्रतिभागियों को राजभाषा नीति के विभिन्न प्रावधानों एवं तिमाही प्रगति रिपोर्ट भरने के कुछ नुस्खे बताये। तत्पश्चात कर्मचारियों के लिए कुछ प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। कर्मचारियों ने बड़े ही जोश एवं उत्साह के साथ इन कार्यक्रमों में भाग लिया। कनिष्ठ सहायक (राजभाषा) डॉ जे के एन नाथन ने कार्यक्रम के आयोजन में सहयोग दिया।

कोयंबत्तूर कार्यालय में हिंदी कार्यशाला का आयोजन

कोयंबत्तूर शाखा बिक्री कार्यालय में **27** दिसंबर, **2019** को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। वरिष्ठ शाखा प्रबंधक श्री के वेंकट दुर्गा प्रसाद ने कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए कर्मचारियों को निष्ठापूर्वक हिंदी के कार्यान्वयन हेतु प्रेरित किया। कर्मचारी राज्य बीमा निगम, सुल्लूर के शाखा प्रबंधक श्री कामेश्वर दुवे ने प्रतिभागियों को राजभाषा नीति के विभिन्न प्रावधानों की जानकारी दी। उन्होंने राजभाषा प्रयोग की समसामयिक आवश्यकता की चर्चा की। इसमें प्रतिभागियों ने संवादमूलक तरीके से भाग लिया।

विश्व हिंदी दिवस का आयोजन

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड में 10 जनवरी, 2020 को विश्व हिंदी दिवस कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं हैदराबाद केंद्रीय विश्वविद्यालय के असोसिएट प्रोफेसर डॉ भीम सिंह ने 'हिंदी की वर्तमान स्थिति एवं उसका वैश्विक प्रभाव' विषय पर अपना बीज व्याख्यान दिया। महाप्रबंधक (राजभाषा) एवं प्रशासन प्रभारी श्री ललन कुमार एवं महाप्रबंधक (तकनीकी प्रशिक्षण संस्थान) श्री ए भूपति ने प्रतिभागियों से विचार-विमर्श किया एवं हिंदी कार्यान्वयन से संबंधित उनके सवालों का समाधान किया।

आगरा शाखा कार्यालय में हिंदी कार्यशाला का आयोजन

आगरा स्थित शाखा बिक्री कार्यालय में 12 दिसंबर, 2019 को हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यालय के वरिष्ठ शाखा प्रबंधक श्री मोहनलाल अग्रवाल ने कार्यशाला का उद्घाटन किया। तत्पश्चात केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के सहायक प्रोफेसर श्रीमती ज्योत्स्ना रघुवंशी ने कर्मचारियों को राजभाषा अधिनियम एवं नियमों की जानकारी दी। साथ ही उन्हें कार्यालयीन कार्य में हिंदी के कार्यान्वयन से संबंधित विभिन्न दायित्वों से अवगत कराया। राजभाषा कार्यान्वयन के दौरान उत्पन्न होनेवाली विभिन्न समस्याओं एवं उनके संदेहों का निवारण किया।

क्षेत्रीय कार्यालय (पूर्व) में हिंदी दिवस आयोजित

कोलकाता स्थित क्षेत्रीय कार्यालय में 3-4 दिसंबर, 2019 को हिंदी कार्यशाला एवं हिंदी दिवस आयोजित किये गये। क्षेत्रीय प्रबंधक (पूर्व) श्री हीरक रॉय ने कार्यक्रम का शुभारंभ करके प्रतिभागियों को कार्यक्रम सफल बनाने हेतु प्रोत्साहित किया। इस अवसर पर प्रतिभागियों को हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन हेतु अपनाये जानेवाले उपायों का विवरण दिया गया। हिंदी कार्यशाला के अंतर्गत राजभाषा नीति, अनुवाद एवं विभिन्न हिंदी ई-टूल्स की जानकारी दी गई। कार्यक्रम के आयोजन में वरिष्ठ सहायक (राजभाषा) श्री गोपाल ने सहयोग दिया।

हैदराबाद शाखा कार्यालय में हिंदी दिवस का आयोजन

हैदराबाद स्थित शाखा कार्यालय में 29 नवंबर, 2019 को हिंदी दिवस मनाया गया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि एवं डॉ बी आर अंबेड्कर ओपेन यूनिवर्सिटी की डीन प्रोफेसर शकीला खानम ने प्रतिभागियों को कार्यालयीन कार्य में राजभाषा हिंदी को मन से अपनाने हेतु अभिप्रेरित किया। वरिष्ठ शाखा प्रबंधक श्री जी वी एन प्रसाद ने कार्यालय में हिंदी की विभिन्न गतिविधियों का ब्यौरा प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में शाखा कार्यालय के कर्मचारियों के साथ सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) डॉ टी हैमावती एवं वरिष्ठ सहायक (राजभाषा) श्री जी आर नायुडु भी उपस्थित थे।

पूणे कार्यालय में हिंदी कार्यशाला का आयोजन

पूणे शाखा बिक्री कार्यालय में 19 मार्च, 2020 को हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यालय के वरिष्ठ शाखा प्रबंधक श्री गौतम दास ने कार्यक्रम का शुभारंभ किया। कार्यशाला में डी आर डी ओ, पूणे के राजभाषा अधिकारी श्री राज बहादुर को वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया, जिन्होंने प्रतिभागियों को हिंदी भाषा एवं उसके प्रयोग का ऐतिहासिक महत्व बताया। साथ ही सभी देशवासियों को एकजुट रखने में हिंदी की महत्ता का उल्लेख किया। इस अवसर पर उन्होंने हिंदी के प्रयोग के दौरान कर्मचारियों के विभिन्न संदेहों का निराकरण किया।

मुंबई क्षेत्रीय कार्यालय में हिंदी दिवस संपन्न

मुंबई क्षेत्रीय कार्यालय में 16-17 मार्च, 2020 को हिंदी कार्यक्रम संपन्न हुआ। कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए क्षेत्रीय प्रबंधक (पश्चिम) एवं महाप्रबंधक (विपणन) श्री प्रशांत सागर ने प्रतिभागियों को राजभाषा हिंदी के प्रयोग की आवश्यकता का उल्लेख किया। तत्पश्चात प्रतिभागियों के लिए हिंदी प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई। प्रतियोगिता विजेता कर्मचारियों को पुरस्कार प्रदान किये गये। कार्यालय में हिंदी के प्रयोग का जायजा लिया गया। कार्यक्रम में क्षेत्रीय कार्यालय के सभी कर्मचारियों के साथ वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) श्रीमती वी सुगुणा भी उपस्थित थीं।

पटना शाखा कार्यालय में हिंदी कार्यशाला का आयोजन

पटना शाखा बिक्री कार्यालय में 5 मार्च, 2020 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यालय के वरिष्ठ शाखा प्रबंधक श्री नरेश कुमार ने प्रतिभागियों को राजभाषा के प्रति दायित्वों से अवगत कराते हुए इस प्रशिक्षण कार्यक्रम से लाभ उठाने की सलाह दी। कार्यशाला के वक्ता एवं एयरपोर्ट अथॉरिटी ऑफ इंडिया के मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) व राजभाषा अधिकारी श्री ओम प्रकाश ने प्रतिभागियों को हिंदी के प्रयोग के दौरान उत्पन्न होनेवाली विभिन्न समस्याओं का निदान बताया। इसके अलावा कर्मचारियों को हिंदी के प्रयोग के आसान तरीके सुझाये।

कानपुर कार्यालय में हिंदी कार्यशाला का आयोजन

कानपुर शाखा बिक्री कार्यालय में 11 दिसंबर, 2019 को हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यालय के वरिष्ठ शाखा प्रबंधक श्री कुमार अमित ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया और कर्मचारियों को राजभाषा हिंदी के प्रयोग के प्रति जागरूक किया। युनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया के राजभाषा अधिकारी श्री राधा रमण शर्मा ने प्रतिभागियों को राजभाषा नीति के तहत विभिन्न दायित्वों से अवगत कराया। तत्पश्चात सभी को अपने कार्य हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग हेतु प्रेरित करते हुए चित्रलेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया।

संगीत सरिता

की-बोर्ड सीखने की प्रविधि

'बार बार देखो' फिल्म के 'खो गये हम कहाँ...' गाने का नोटेशन नीचे प्रस्तुत है। यह गाना C# Major में बजता है। यह गाना राग 'बिलावल' पर आधारित है। फिल्म याराना का 'छूकर मेरे मन को किया तू ने क्या इशारा' गाना भी इसी राग पर आधारित है।

आरोह : सा रे ग म प धा नि सां
अवरोह : सां नि ध प म ग रे सा
पकड़ : ग रे, ग म ध प, म ग म रे सा
वादी स्वर 'ध' और संवादी स्वर 'ग' हैं।

गा रे ग रे ग प   म ग म ग म ग रे
रूह से बहती हुई   धुन ये इशारे दे
गा रे ग रे ग प   म ग म ग म ग रे
कुछ मेरे राज तेरे   राज आवारा से
स रे ऩि स   सा प म ग रे   स रे ऩि स   सा प म ग रे
खो गये   हम कहाँ   रंगों सा   ये जहाँ
स रे ऩि स   सा प म ग रे   स रे ऩि स   सा प म ग रे
खो गये   हम कहाँ   रंगों सा   ये जहाँ
म ग रे स   म ग रे स   म ग रे स   म ग रे स   म ग रे स स स रे ऩि
टेढ़े-मेढ़े   रास्ते हैं   जादुई   इमारतें हैं   मैं भी हूँ तू भी है यहाँ
म ग रे स   म ग रे स   म ग रे स   म ग रे स   म ग रे स स स रे ऩि
खोई सोई   सड़कों पे   सितारों   के कंधों पे हैं   नाचते उड़ते हैं यहाँ
स रे ऩि स   सा प पा   स रे ऩि स   सा प पा
खो गये   हम कहाँ   रंगों सा   ये जहाँ
स पा... रे गा... स पा... धा गा...
ओ... हो...
नी नि सां धा म ग रे पा म ग   नि नि सां धा म ग रे पा म ग
सो गई हैं ये साँसें सभी   अधूरी सी है कहानी मेरी
ग ग ग मा सां ध प धा पा म ग   ग ग मा सा ग रे सा पा म ग
फिसल जाए भी तो डर न कोई   रुक जाने की जरूरत नहीं
रूह से बहती हुई   धुन ये इशारे दे
कुछ मेरे राज तेरे   राज आवारा से
खो गये   हम कहाँ   रंगों सा   ये जहाँ
खो गये   हम कहाँ   रंगों सा   ये जहाँ
टेढ़े-मेढ़े   रास्ते हैं   जादुई   इमारतें हैं   मैं भी हूँ तू भी है यहाँ
खोई सोई   सड़कों पे   सितारों   के कंधों पे हैं   नाचते उड़ते हैं यहाँ
खो गये   हम कहाँ   रंगों सा   ये जहाँ
गा रे ग रे ग प   म ग म ग म ग रे   गा रे ग रे ग प   म ग म ग म ग रे
कागज के परदे हैं   ताले हैं दरवाजों पे   पानी में डूबे हुए   ख्वाब अलफाजों के
खो गये हम कहाँ   रंगों सा ये जहाँ   खो गये हम कहाँ   रंगों सा ये जहाँ
टेढ़े-मेढ़े रास्ते हैं   जादुई इमारतें हैं   मैं भी हूँ तू भी है यहाँ
खोई सोई   सड़कों पे   सितारों   के कंधों पे हैं   नाचते उड़ते हैं यहाँ   ओ... हो...

इस गाने का नोटेशन टी सी एस में कार्यरत सुश्री नंदिता ने दिया है और राग व स्वरों की जानकारी सी आर जी (रीफ्रैक्टरी) के उप महाप्रबंधक श्री रविदास एस गोने ने दिया है।

हाइली ऑब्जेक्शनेबुल मैटर

- श्री चित्रेश -

पुनर्नवा में छोटे भाई उमेश मुझे लेकर यहाँ करीब साढ़े सात बजे ही आ गये थे। यह हमारे शहर का एक नर्सिंग होम है, जो एक डॉक्टर दंपति का है। पत्नी प्रसूतिरोग विशेषज्ञ है और पति जनरल फिजीशियन...। इन्होंने रिहाइशी मकान के निचले हिस्से को काट-छाँटकर अस्पताल में तब्दील कर रखा है।

उमेश का डॉक्टर से अच्छा मेलजोल है। उन्होंने छः बजे ही काल करके बता दिया था कि जाँच के लिए मुझे लेकर वे आ रहे हैं। मेरा मन तो नहीं था। मैं एकदम भला-चंगा महसूस कर रहा था, मगर रात की घटना ने विवश कर दिया। खैर, हम पहुँचे तो नर्सिंग होम उनींदा सा खड़ा था। रिसेप्शन की एकमात्र कुर्सी खाली थी। डॉक्टर का चैंबर भी बंद पड़ा था। गलियारे में पड़े बेडों पर कुछ मरीज और उनके तीमारदार जरूर दिख रहे थे।

कॉरीडोर में एक काला सा लड़का पोंछा लगा रहा था। हमें देख वह हमारी ओर आने लगा। फिर उमेश को पहचानकर वह खुलकर मुस्कराया, जिससे उसके दाँतों की सफेदी खिल उठी थी। नमस्ते के क्रम में हाथ उठाते हुए उसने पूछा - गुरूजी...इत्ती सुबह कैसे?

'भैया का चेकअप कराना है', उमेश ने बताया।

'अभी डॉक्टर साहब कहीं निकले हैं।' जानकारी देने के साथ-साथ उसने सुझाव भी दिया - 'आप फोन कर लें।' इसके बाद अपने काम में जुट गया। मैं फाइवर की कुर्सी खींचकर बैठ गया। पत्नी लंबी बेंच के एक किनारे पर बैग टिकाये परेशान मुद्रा में खड़ी थी। उसी बेंच के दूसरे छोर पर बैठकर उमेश मोबाइल डायल करने लगे। तीन-चार रिंग के बाद फोन उठ गया। बिना किसी औपचारिकता के कहा - 'डॉक्टर साहब! भाई को लेकर आ गया हूँ... कहाँ हैं?'

करीब बीस मिनट बाद बड़े-बड़े फूलों वाले लाल सूट में सजी-धजी लंबी स्वस्थ महिला का पदार्पण हुआ। रंग गहरा साँवला और चेहरे पर अधिकार संपन्नता की चमक...। उमेश ने आहिस्ते से बताया - 'डाक्टर साहब की पत्नी...।' फिर उन्होंने हाथ जोड़कर नमस्कार किया। पत्नी अभिवादन की मुद्रा में आकर खड़ी हो गई। मैंने आँखें मूँद रखी थीं।

हमारे पास पहुँचते ही उन्होंने आवाज दी - 'रज्जन।' आवाज से मेरी आँखें खुल गईं। पोंछा वाले के साथ बीस-बाइस की उम्र का एक पीले चेहरे वाला लड़का भी टपर-टपर चला आ रहा था। उसे देखते ही मैडम ने आदेश सुनाया - 'तीन नंबर वार्ड को ठीक करो, साहब ने इसमें ही शिफ्ट करने के लिए कहा है।'

इसके बाद वे यंत्रवत गलियारे में आगे बढ़ गईं। फटाफट तीन नंबर में दोनों ने झाड़ू पोंछा कर दिया। हम अंदर आ गए। मैं बेड पर लेट गया। पत्नी ने पंखा चला दिया। जगह को देखकर लग रहा था कि बड़े कमरे को टुकड़ों में बाँटकर वार्ड बना दिया गया है। फिर भी खुली-खुली सी जगह थी। अटैच्ड टॉयलेट भी था। दीवार घड़ी आठ से ऊपर का समय बता रही थी। यह घड़ी न रहती तो ठीक होता। यह बहुत ही खच्च... खच्च... की आवाज निकाल रही थी। बावजूद इसके मुझे धीरे-धीरे नींद ने आ घेरा। संभवतः रात की दवा का असर था।

मैं गहरी नींद में था, तभी कुछ खटपट हुई। मैंने आँखें खोल दीं। भारी होती पलकों को तीन-चार दफे झपकाया। तंद्रा टूटने लगी। वार्ड की बेंच पर पत्नी के अलावा दो अन्य औरतें बैठी थीं। एक जो मुझे जगा हुआ देखकर बेंच से खड़ी हो गई, वह उमेश के छोटे भाई वकील साहब यानी राजेश की पत्नी थीं। दूसरी जो गदबदे शरीर की खूब गोरी औरत थीं, पूरी तरह पहचान में नहीं आ रही थीं। उन्होंने स्नेह से मेरे ऊपर नजर फेरते हुए पूछा - 'भैया अब कैसी तबीयत है?'

महिला की आवाज और बोलने के ढंग की अधूरी पहचान के साथ मिलाने पर उनकी वाकफियत सामने आ खड़ी हुई। वह मेरे पड़ोस के गाँव की लड़की हैं। यहीं शहर में रहती हैं। अपना मकान बनवाने के पहले वकील भाई राजेश उन्हीं के यहाँ किराएदार थे। पहले मैंने उन्हें नमस्ते किया, फिर बोला - 'दीदी, मैं रात में बेहोश जरूर हो गया था, बाकी अभी न मुझे कहीं दर्द है, न कोई परेशानी, तो तबीयत ठीक ही होनी चाहिए।'

'भगवान करें भैया, सब ठीक-ठाक ही हो।' कहकर वह पत्नी की ओर देखने लगी। थोड़ी देर बाद उमेश बेड के पास आए, साथ में राजेश भी थे। मेरी निगाह घड़ी पर पड़ी, सवा दस बज रहे थे। मैं उमेश से मुखातिब हुआ - 'डॉक्टर साहब कहाँ रह गये? अभी पाँच मिनट में आऊँगा' बोले थे, फिर 'देखता हूँ...' कहते हुए बाहर निकल गये।

हाल-समाचार लेने के बाद राजेश अपनी पत्नी और पुरानी मकान मालकिन के साथ वार्ड से चले गये। तभी सफेद लिबास पर आला लटकाए हल्के साँवले रंग के आकर्षक व्यक्तित्व वाले डॉक्टर अंदर आये। साथ में उमेश भी थे। नमस्कार करते हुए मैं बेड पर बैठ गया। डॉक्टर ने आले (स्टेथस्कोप) को पीठ और सीने पर दायें-बायें रख-रखकर जाँच करना शुरू किया। बीच-बीच में वे रात में हुई तकलीफ के बावत पूछताछ भी करते जा रहे थे।

जो मेरे साथ हुआ था, वह सब मैंने बता दिया। बेहोशी के समय की बातें पत्नी ने बतायीं। इस बीच मैं डॉक्टर के चेहरे को भी परखता रहा। किंतु वहाँ भावशून्यता थी, जैसे रात का वाकया सामान्य से अधिक और कुछ न रहा हो।

इसी समय डॉक्टर का एक सहयोगी ईसीजी की मशीन उठा लाया। ईसीजी करते हुए भी उनके चेहरे पर ऐसा कोई भाव नहीं थे, जिससे लगे कि मेरे साथ कुछ असामान्य हुआ है। ईसीजी की प्रक्रिया पूरी हुई तो उमेश भी उनके साथ चले गये। मुझे लग रहा था, अभी वे लौटकर कहेंगे - 'फिलहाल सब ठीक है। अब घर वापसी... होगी।' मगर उमेश देर कर रहे थे, इस बीच हाल-खबर लेने कुछ अध्यापक भी आ धमके, जिनके साथ बातचीत में समय आसानी से कट गया। आधे घंटे बाद उमेश लौटे तो साथ में पैथॉलाजी का एक टेक्नीशियन था। उसने फटाफट रक्त के तीन सैंपल ले लिए, तब मैंने उमेश से पूछा - 'डॉक्टर साहब क्या बता रहे हैं?' 'यही कि ब्लड की रिपोर्ट आ जाए तो पता चलेगा', उन्होंने स्पष्ट किया।

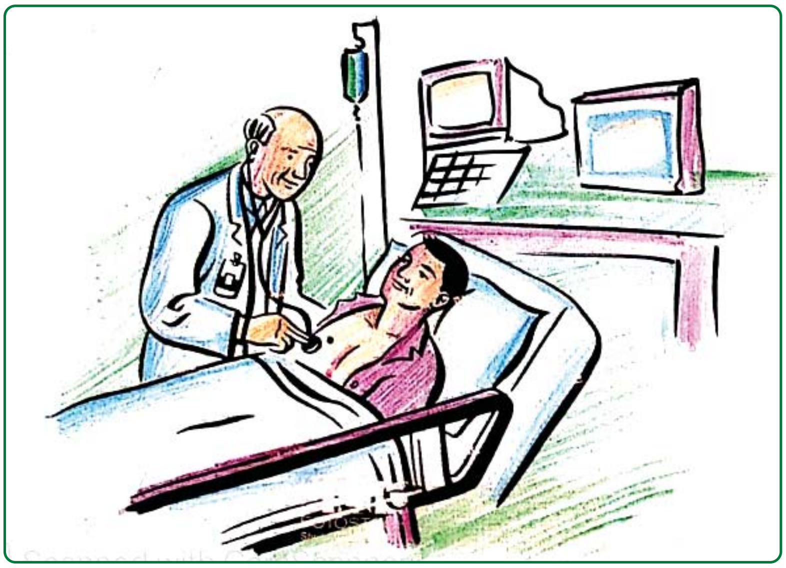

रिपोर्ट में जो आना है, वह आएगा, मगर अभी मैं एकदम नार्मल महसूस कर रहा हूँ। कल भी ऐसे ही था। दिन भर रूटीन के तहत काम किया था। आज शिक्षामित्रों की नई दिशा प्रशिक्षण की रिव्यू मीटिंग होनी थी। इसके लिए मैं चौराहे तक गया था। सवा सौ शिक्षामित्रों के लिए स्टेशनरी पैक कराके रख छोड़ा था। टी.ए. के लिए कुछ फुटकर पैसों की जरूरत थी, इस लिहाज से दूकानदार को छोटे नोटों के लिए कैश दे आया था। रोज की तरह करीब सात बजे गुनगुने पानी से स्नान किया। आठ बजे भोजन और फिर रिव्यू मीटिंग को लेकर होमवर्क...। शिक्षामित्रों की संभावित समस्याएँ और उनका व्यावहारिक समाधान... यह सब करने के बाद मैं करीब दस बजे सोने के लिए मच्छरदानी के अंदर घुसा तो आज दिन की रूपरेखा स्पष्ट थी - सवेरे स्नान-भोजन होते-होते अक्षयवर सिंह आ जायेंगे, उनके साथ चौराहा, फिर स्टेशनरी और दूकानदार से दस-पाँच रुपयों के छोटे नोट लेकर विकासखंड संसाधन केंद्र पहुँचना और नौ बजे से रिव्यू मीटिंग की गहमागहमी। मगर रात में ही अचानक मुझे भयंकर गर्मी महसूस हुई। मैंने अपने ऊपर से चादर हटा दी। पर गर्मी लगातार बढ़ ही रही थी। मैंने मच्छरदानी से ऊपर आसमान की तरफ देखा, कहीं बादल तो नहीं घिर आए? अन्यथा अप्रैल की रात में ऐसी गर्मी...? किंतु ऊपर तारों भरा साफ आसमान टंगा था। सब तरफ चाँदनी झड़ रही थी। फिर यह गर्मी... आखिर माजरा क्या है?

अब मैं मच्छरदानी के बाहर आ गया। सामने चकरोड पर निकल आया। हवा के हल्के झोंकों के साथ चाँदनी से नहाई गेहूँ की बालियाँ झूम रही थीं। लेकिन मुझे कुछ अच्छा नहीं लग रहा था। गर्मी के साथ सीने में जलन भी शुरू हो गयी थी। मैं फिर चारपाई के पास आ गया। स्टूल पर ताँबे के लोटे में कटोरी से ढँका पानी रखा था। मच्छरदानी का एक पल्ला ऊपर फेंककर मैं चारपाई पर बैठ गया। कटोरी से ढँका पानी लिया और घूँट-घूँट करके पीने लगा। मगर तीसरा घूँट न चाहते हुए भी उगल देना पड़ा। गर्मी बर्दाश्त के बाहर जा चुकी थी। जोरों का पसीना आ रहा था। मैंने बूशर्ट और पायजामा निकाल फेंका। बनियान पसीने से तर हो चुकी थी। सीने में जलन के साथ अब अकुलाहट भी होने लगी थी। मोबाइल में देखा, अभी रात के दो बज रहे थे। घर के ओसारे की ओर देखा, कम पावर के बल्ब की हल्की रोशनी फैली हुई थी। मैं पस्तहाल-सा चलकर दरवाजे पर जा पहुँचा और कुंडी खड़काने लगा। पत्नी ने दरवाजा खोला, मुझे पसीने में नहाया और सिर्फ कच्छे में देखकर वह घबरा सी गई - 'ये... ये क्या?'

मुझे नहीं पता कि मैंने क्या बताया... पत्नी दौड़कर आंगन में खड़ी चारपाई गिराते हुए बोली - 'इस पर लेटो, मैं फर्राटा चला देती हूँ...।' मैं लड़खड़ाते हुए चारपाई की तरफ बढ़ने लगा, अब... इसके बाद जो हुआ, वह मुझे पत्नी के जरिए पता चला। वास्तव में चारपाई के पास पहुँचकर मैं होश खो बैठा और जमीन पर गिर पड़ा था। पत्नी की चीख पुकार पर पहले उमेश आए, फिर उनका लड़का शिशिर और मेरे पुत्र संदीप...। सबने मुझे उठाकर चारपाई पर लिटाया।

मैं समझता हूँ कि यह बेहोशी वाला मामला आठ-दस मिनट का रहा होगा। क्योंकि होश में आने पर मैंने सुना था, उमेश मोबाइल पर चौराहे के डॉक्टर रामसुंदर वर्मा को मेरे सिम्पटम बताते हुए दवा भेजने को कह रहे थे। दवा लेने के लिए शिशिर और संदीप के जाने की बात भी कर रहे थे। इसी समय बाहर

बुलेट के स्टार्ट होने और धड़धड़ाते हुए जाने की आवाज भी सुनाई पड़ी थी।

डॉ वर्मा की डिस्पेंसरी से जो दवा आई थी, उसे मैंने पी ली थी। फिर मेरी अकुलाहट कुछ कम हो गयी, गर्मी का मामला भी कुछ ठंडा पड़ने लगा था। इसके बाद मैं स्वयं जाकर मच्छरदानी के अंदर लेट गया। मुझे जल्दी ही नींद आ गई। संभवत: इसी समय मुझे अस्पताल लाकर चेकअप कराने की बात तय हुई थी। सवेरे छ: बजे किसी ने मेरी एक न सुनी और विवश होकर मुझे अपने वरिष्ठ सहयोगी अक्षयवर सिंह को रिव्यू मीटिंग की जिम्मेदारी सौंप देनी पड़ी थी।

मैंने दीवाल घड़ी की तरफ देखा, साढ़े बारह बज रहे थे। मैंने पत्नी से कहा - 'हमें यहाँ आये पाँच घंटे हो चुके, ले-देकर एक घंटे पहले मर्ज की जाँच-पड़ताल की प्रक्रिया शुरू हुई है। पूरे चार घंटे फालतू निकल गये। खैर... मोबाइल देना जरा, देखूँ मीटिंग कैसी चल रही है?' मैंने अक्षयवर सिंह को फोन लगाया। जल्दी ही फोन उठ गया - 'हैलो... कैसे हैं? बिल्कुल ठीक...मीटिंग के हालचाल...।' 'एकदम बढ़िया रहा...।' उन्होंने जवाब दिया।

मुझे तसल्ली हो गई। कुछ औपचारिक बातों के बाद मैंने फोन काट दिया। इसी बीच ब्लॉक एजुकेशन ऑफीसर विद्याप्रकाश गुप्ता और समेकित शिक्षा के जिला समन्वयक जामवंत मौर्य भी आ गए। वार्ड में बैठने के लिए पर्याप्त फर्नीचर थे, दो कुर्सियाँ और लंबी बेंच। फिर भी पत्नी खड़ी हो गई। दोनों अधिकारी बैठ गये, तब वे बैठीं। उनका अधिकारियों को मान देने का यह ढंग मुझे पसंद आया। गुप्ता और मौर्य सर से मेरा अच्छा तालमेल था। पाँच-सात मिनट बैठने के बाद रात में मेरे साथ जो दिक्कत पेश आई थी, उसे बताया। गुप्ता सर ने कहा - 'मुझे पता है, मैं सुबह से ही उमेश के साथ लगा हूँ। पूरी रिपोर्ट आ जाए, आगे क्या करना है, यह तय होने तक दाएँ-बाएँ रहूँगा।' पत्नी ने कृतज्ञता भरी नजरों से गुप्ता जी की तरफ देखा।

थोड़ी देर बाद ही दोनों अफसर वार्ड से निकल गये। घड़ी में दो बजने वाले थे, तभी सवेरे का पीले चेहरे वाला लड़का आया, बोला - 'सर! यहाँ एक पेशेंट को आना है, आप बाहर आ जायें।'

'ऐसा कैसे..., हम कहाँ जाएँ? ...आखिर ये भी बीमार हैं', पत्नी ने प्रतिवाद किया।

'ओ हो... आंटी, अंकल जी डिस्चार्ज होने जा रहे हैं। अभी डॉक्टर साहब ने बताया है', लड़के ने कहा। डिस्चार्ज होने की खुशी में पत्नी का प्रतिरोध ठंडा पड़ गया। हम उसके साथ वार्ड से बाहर आ गये। चौड़े कारीडोर में एक तरफ अगल-बगल बेड डाले गये थे। दो बेड के बीच कुछ चौड़ी गद्दीदार बेंचें पड़ी थीं। लड़के ने उँगली दिखाई - 'आप वहाँ शिफ्ट हो जाइए।'

मैं उसी बेंच पर लेट गया। पत्नी को स्टूल दिख गया, वह उसी पर बैठ गई। एक घंटे से अधिक समय बीत गया। डिस्चार्ज होने की कोई बात नहीं दिख रही थी। धीरे-धीरे मुझे यहाँ असहज-सा लगने लगा। वार्ड में था तो आने-जाने वालों से कोई दिक्कत न थी, लेकिन यहाँ यदि कोई जान-पहचान का आ गया तो...? मैं यानी समन्वयक... विकासक्षेत्र में शिक्षा से जुड़े उपक्रमों को गातिशील बनाने वाला... अपने क्षेत्र का नामदार... ऐसी गलीच स्थिति में? यहाँ पड़े-पड़े मैं खीज रहा था। इसी समय मेरे क्षेत्र के सात-आठ अध्यापक आ गए। अभिवादन... चरण स्पर्श... गुरूजी, अव कैसा फील कर रहे हैं? जैसी बातों के बीच मुझे यहाँ पड़े रहना बड़ा ही नागवार गुजर रहा था। अचानक मेरे दिमाग में एक विचार आया, जिससे मैं तात्कालिक रूप से इस अपमानजनक स्थिति से उबर सकता था। उनमें से एक के कंधे पर हाथ रखा और कहा - 'आइये चाय पीकर आते हैं।'

हम बाहर कैंटीन में आ गये। बिस्कुट, चाय, नमकीन के साथ गप्पबाजी चल रही थी, तभी हड़बड़ाये से उमेश आये और बोले - 'डॉक्टर साहब बुला रहे हैं, रिपोर्ट आ गई है।'

मैं उमेश के साथ डॉक्टर के चैंबर में आ गया। वे गुस्से में थे। मुझे देखते ही बोले - 'किसकी परमीशन से आप बाहर गये? यू आर नाट एबुल टू अंडरस्टैंड योर क्रिटिकल सिच्युएशन... लिपिड प्रोफाइल इज शोइंग डैंजरस स्टेज ऑफ ट्राइग्लिसराइड एंड कोलेस्ट्राल...। आईसीयू फैसिलिटी इज मस्ट फार यू इम्मीडिएटली...। ऐसे में आपका बिना बताये बाहर जाना... हाइली आब्जेक्शनबुल मैटर है।'

मैं चुपचाप बर्दाश्त कर जाने वाला आदमी हूँ, मगर इस समय पता नहीं क्या हो गया था? हो सकता है, सवेरे से जैसी स्थितियाँ पेश आ रही थीं, उससे अनजाने ही आक्रोश पनपा हो, जो मौका पाते ही फूट पड़ा - 'डॉक्टर सर, इफ दैट वाज सो, यू मस्ट हैव टोल्ड मी फार प्रापर प्रीकाशंस...। व्हाई कुड आई नो एबाउट दीज हिडेन कंडीशंस...। सब कुछ जानते हुए भी यू हैव लेड मी आन ए नैरो अनकनविनिएंट बेंच फार टू आवर्स...।'

डॉक्टर कुछ झेंप से गये थे, उन्होंने उमेश से कहा - 'इन्हें संभालिए... टेंशन मे बी हार्मफुल फार हिम।' उमेश के बजाय बी ई ओ साहब यानी गुप्ता जी मुझे बाहर ले आये। बोले - 'आपको लारी कार्डियोलाजी के लिए रेफर किया गया है, वहाँ सस्ता और अच्छा इलाज देते हैं। गाड़ी आ गई है।'

उन्होंने नीली इनोवा की तरफ इशारा किया। देखा, पिछली सीट पर पत्नी बैठी थी, मैं भी वहीं बैठ गया। गुप्ता जी और चंद्र प्रताप सिंह के साथ वाले अध्यापक इनोवा के पास आ गये थे। दो मिनट बाद उमेश आ गए। उनके सीट पर बैठते ही गाड़ी स्टार्ट हुई। गुप्ता सर और अध्यापकों ने हाथ हिलाकर मुझे विदा किया।

थोड़ा धैर्य रखें, कहानी अभी खत्म नहीं हुई है, पूरा एक एपीसोड अभी बाकी है...। इनोवा का ड्राइवर तेज था। वह अलीगंज, मुसाफिरखाना, जगदीशपुर, हैदरगढ़ को पीछे छोड़ता किंग जार्ज मेडिकल यूनिवर्सिटी लखनऊ के लारी कार्डियोलाजी के परिसर में इनोवा को तीन घंटे से कम समय में खड़ा कर दिया। दो मिनट बाद उमेश के साथ एक वार्ड ब्वाय ह्वील चेयर लेकर आया। मैं ओ पी डी में लाया गया। डॉक्टर वी एस नारायण मेरा चेकअप करने लगे। उनके साथ के कई नई उम्र के महिला-पुरुष डॉक्टर भी कुछ-कुछ पूछताछ कर रहे थे - 'कैसे हुआ, कोई फैमिली हिस्ट्री...?' ई सी जी, ब्लड प्रेशर, सैंपल... कुछ और भी पता नहीं क्या-क्या लिया गया? मैं बहत्तर घंटे के लिए आई सी यू में पहुँचा दिया गया।

दूसरे दिन मुझे पत्नी से पता चला, डॉक्टर नारायण सर ने बताया था - 'अगर नर्सिंग होम से दो-तीन दिन के अंदर डायग्नोस करके केस रेफर कर दिया होता तो हम इंजेक्शन आजमाकर नस खोलने का प्रयास कर सकते थे। मगर अभी अटैक पड़े सोलह घंटे से अधिक हो चुके हैं। अब तो कुछ जाँचों के बाद ही ऑपरेशन की डेट तय हो पायेगी।

यह सुनते हुए मेरे सामने फ्लैश लाइट जैसी चमक के साथ 'हाइली आब्जेक्शनेबुल मैटर' की कई पुनरावृत्तियाँ हुई। फिर हरेक फ्रेज के सारे अक्षर बिखर के मेरे सामने टंग गए। अब मैं बिखरे अक्षरों को ऊपर-नीचे, दायें-बायें, आड़ा-तिरछा कैसे भी देख रहा था, मुझे सिर्फ... हाइली आब्जेक्शनेबुल मैटर... ही दिख रहा था, उसके सिवा और कुछ नहीं दिख रहा था।

- डाकघर-जासापारा
गोसाईगंज-228119
सुल्तानपुर, उत्तर प्रदेश
मोबाइल: +91 9450143544

ईमानदारी बेईमानी से बड़ी

- श्री ऋषिमोहन श्रीवास्तव -

पत्नी ने दुबे जी को आवाज दी 'आप अपने धोती-कुरता प्रेस करने के लिए क्यों नहीं दे आते।'

'हाँ भाई, दे आऊँगा, जब स्कूल जाऊँगा, तो रास्ते में ही 'प्रेस' करने वाले की दूकान मिलती है।' दुबे जी ने खाना खाते-खाते जवाब दिया।

दुबे जी जब स्कूल के लिए निकल रहे थे तो पत्नी ने दो जोड़ी धोती-कुरता 'प्रेस' कराने के लिए दे दिए। 'प्रेस' के लिए कपड़े दिए हुए चार-दिन बीत गए। दुबे जी को समय ही नहीं मिला। आज सुबह नाश्ता करते हुए उन्हें याद आया कि वे अपने कुरते की जेब में आठ हजार रुपये रख छोड़े थे। वे सोचने लगे - अब तो आठ हजार गए। उन्होंने पत्नी को बताना गैर-जरूरी समझा, क्योंकि उन्हें लापरवाही एवं गैर-जिम्मेदारी पर लंबा-भाषण सुनना पड़ जाता।

दुबे जी के विद्यालय जाने का समय हो रहा था। वे विद्यालय जाने से पूर्व प्रेस करनेवाले की दूकान पर पहुँचना चाहते थे, ताकि अपने कपड़े उठा लायें। इसलिए वे घर से जल्दी निकल पड़े। वहाँ दुकान पहुँच कर 'प्रेस' वाले से अपने कपड़े लिए और कुरतों की जेब देखने लगे। पर प्रेस वाले की निगाह से वे बच न सके। प्रेस वाले ने पूछा 'पंडित जी, क्या देख रहे हैं।' 'कुछ खो गया है, क्या?'

दुबे जी ने धीरे से कहा, 'हाँ, भाई! मैंने कुछ रुपए रख छोड़े थे कुरते की जेब में... ऐसा याद आ रहा है।'

दुबे जी की ओर देख कर प्रेस वाला बोला, 'पंडित जी, चिंता न करें आपकी जेब से आठ हजार रुपए निकले थे। वे रुपए ये रहे।' कहते हुए उसने दुबे जी के रुपए दे दिए।

दुबे जी रुपए पाकर चकित थे। वे भावुक होकर पाँच सौ रुपए प्रेस वाले को देना चाहा। प्रेसवाले ने कहा 'दुबे जी! आपके रुपए लौटाना मेरा कर्तव्य था। मेरे अंदर भी बेईमानी आ सकती थी, पर ईमानदारी मेरी उससे बड़ी निकली, इसीलिए मैंने आपके रुपए वापस लौटा दिये। एकाध बार मेरा मन भी कमजोर पड़ा था कि मैं रुपए रख लूँ, पर ईमानदारी ने मुझे झुकने नहीं दिया। दुबे जी प्रेस वाले की बात सुनकर हतप्रभ रह गए और स्वयं को टटोलने लगे।

- एस-1, नित्यानंद विला
कमलेश्वर कॉलोनी, जीवाजीगंज
लश्कर, ग्वालियर-474001
मोबाइल: +91 8964963542

गांधी दर्शन में महिला सशक्तीकरण

- श्री सुभाष सेतिया -

2 अक्तूबर, 2018 से राष्ट्र ही नहीं, बल्कि समूचा विश्व राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के जन्म की 150 वीं वर्षगांठ मना रहा है। 2 अक्तूबर, 1869 को गुजरात के पोरबंदर में जन्मे मोहनदास करमचंद गांधी हालांकि 30 जनवरी, 1948 को शहीद हो गए थे, किंतु समय बीतने के साथ उनके जीवन और कार्यों की आभा निरंतर बढ़ती जा रही है। गांधी जी की ख्याति देश की सीमाएँ लांघकर समूचे विश्व तक व्याप्त हो चुकी है। समाज पर उनके प्रभाव का आलम यह है कि उनकी मृत्यु के सात दशक पश्चात भी उनके जीवन के विभिन्न पहलुओं पर पुस्तकें, नाटक, काव्यग्रंथ लिखे जा रहे हैं और फिल्मों तथा अन्य कार्यक्रमों का निर्माण हो रहा है।

संयुक्त राष्ट्र संघ ने उन्हें सदी का सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति घोषित किया है और उनके जन्म दिवस 2 अक्तूबर को पूरे विश्व भर में विश्व शांति दिवस के रूप में मनाया जा रहा है। विदेशों में महात्मा गांधी के नाम पर बस्तियों, सड़कों, गलियों व संस्थानों के नाम रखे जा रहे हैं और दुनिया में गौतम बुद्ध के बाद किसी भी भारतीय की सबसे अधिक प्रतिमाएँ गांधी जी की मिलती हैं। आधुनिक युग की बड़ी विभूतियों से गांधी जी इसलिए अलग खड़े दिखाई देते हैं कि अपने समय का शायद ही कोई ऐसा मुद्दा हो, जिस पर गांधी जी के अपने विचार न हों। उन्होंने राजनीति के अलावा धर्म-अध्यात्म से लेकर स्वच्छता और सेक्स तक के विषयों पर न केवल सैद्धांतिक विवेचन किया, बल्कि व्यावहारिक प्रयोग भी किए। यहाँ तक कि ऐसे विषयों पर भी, जिनकी उनके समय चर्चा तक नहीं होती थी। गांधी जी अपने प्रकाशित पत्रों, भाषणों और राजनीतिक बैठकों में अपनी स्पष्ट व दृढ़ धारणा व्यक्त करते थे।

महिला समानता और सशक्तीकरण ऐसा ही मुद्दा है, जो गांधी जी के चिंतन का भाग बना। इस समय देश में महिलाओं की सुरक्षा तथा उन्हें समान अधिकार दिये जाने पर हर मंच पर बल दिया जा रहा है। हाल ही में उच्चतम न्यायालय ने महिलाओं को समानता, सम्मान व गरिमा दिलाने वाले कई ऐतिहासिक फैसले सुनाये हैं। लेकिन बहुत कम लोग जानते हैं कि गांधी जी ने आज से सौ साल पहले ही स्त्रियों को समाज में सक्रिय भूमिका निभाने को न केवल प्रेरित किया, बल्कि उन्हें स्वतंत्रता आंदोलन एवं कांग्रेस की गतिविधियों से प्रत्यक्ष जोड़ने का काम भी किया। उनकी इस उदार तथा मानवीय सोच की झलक भारत के संविधान में भी परिलक्षित होती है। इस तरह हम कह सकते हैं कि महिला अधिकारों के क्षेत्र में महात्मा गांधी अपने समय से कहीं आगे थे।

सच तो यह है कि समाज में महिलाओं की स्थिति को लेकर गांधी जी ने जो दृष्टि बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में अपने भीतर विकसित की और जिसे अपने आचरण में उतारा, वह आज इक्कीसवीं शताब्दी में भी काफी क्रांतिकारी लग सकती है। कभी-कभी यह बात बहुत अचरज भरी लगती है कि अन्य अनेक सामाजिक मामलों में परंपरावादी रीति-नीति का समर्थन करने वाले गांधी जी महिलाओं से जुड़े प्रश्नों पर गहरी उदारतावादी और समतावादी दृष्टि कैसे अपना पाए। उनका आचरण तथा उनके लेख, भाषण, पत्र आदि इस तथ्य के जीवंत प्रमाण हैं कि वे नारी को पुरुष से किसी भी बात में कम नहीं आंकते थे। उन्होंने कांग्रेस के विभिन्न आंदोलनों में औरतों को शरीक करने के साथ-साथ उनके सामाजिक, शैक्षिक, आर्थिक और राजनीतिक उत्थान के कार्यक्रम भी चलाए। उन्होंने महिला समानता को सहज ढंग से स्वतंत्रता आंदोलन का अभिन्न अंग बना दिया।

इस संदर्भ में प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता इला भट्ट का वह कथन उल्लेखनीय है, जो उन्होंने 'गांधी ऑन वुमेन' पुस्तक की भूमिका में लिखा है। वे कहती हैं 'महिलाओं ने उनके नेतृत्व में चले जन-आंदोलन में सहज ढंग से भाग लिया। इससे भारतीय महिलाओं के जीवन में हमेशा के लिए एक मोड़ आ गया। मैं यह कहना चाहूँगी कि यदि गांधी जी यह मोड़ न लाए होते, तो मैं आज वह न होती जो आज हूँ।' यह बात आज की हर महिला पर लागू होती है। गांधी जी यों तो समूची मानव जाति से प्यार करते थे, परंतु महिलाओं के लिए उनके हृदय में अत्यंत गहन सहानुभूति और आदर का भाव था।

> 21 फरवरी, 1926 को 'नवजीवन' अखबार में एक विधवा से प्राप्त पत्र की चर्चा करते हुए गांधी जी ने लिखा, 'अपने अनुभव से मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि कोई बाल-विधवा बड़ी होकर यदि पुन: शादी करना चाहे, तो उसे पूरी आजादी होनी चाहिए। न केवल उसे पुनर्विवाह के लिए प्रेरित किया जाए, बल्कि उसके माँ-बाप को चाहिए कि वे उसका सही ढंग से पुनर्विवाह करें।'

यही कारण है कि जिस ब्रिटिश सत्ता के खिलाफ उन्होंने संघर्ष छेड़ दिया था, उसी देश की महिलाओं के साहस और निडरता की उन्होंने भूरि-भूरि प्रशंसा की। जब ब्रिटेन की महिलाओं ने वोट का अधिकार प्राप्त करने के लिए आंदोलन चलाया तो गांधी जी ने खुलकर उनके संघर्ष का समर्थन किया और 23 फरवरी

1907 के 'इंडियन ओपीनियन' अखबार में लिखा, 'क्या भारतीय पुरुष कायर बने रहेंगे या अंग्रेज महिलाओं द्वारा दिखाए गए पौरुष का अनुसरण करेंगे और जागेंगे?'

स्वाधीनता संघर्ष के इतिहास में सरोजिनी नायुडू, सुचेता कृपलानी, एनी बेसेंट, सुशीला नैयर, विजय लक्ष्मी पंडित, अरुणा आसफ अली तथा कई अन्य महिला नेताओं ने कांग्रेस को सशक्त बनाने में अपना योगदान दिया। इसके अलावा बहुत-सी महिलाओं ने महात्मा गांधी की प्रेरणा से सामाजिक उत्थान तथा अन्य रचनात्मक कार्य के अभियान चलाए। यही नहीं, गांधी जी ने कुछ विदेशी महिलाओं को भी अपने व्यवहार व स्नेह से इतना प्रभावित किया कि वे अपना देश छोड़कर न केवल भारत में बस गईं, बल्कि भारतीय नाम और जीवन पद्धति भी अपनाई और रचनात्मक कार्यों में सक्रिय सहयोग दिया। इनमें सरला बेन तथा मीरा बेन जैसे नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। महिलाओं के प्रति गांधी जी के सकारात्मक दृष्टिकोण का एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि वे उन्हें पुरुषों के मुकाबले अधिक सुदृढ़ और सहृदय मानते थे। वे नारी को अबला कहने के भी सख्त खिलाफ थे।

इस संदर्भ में गांधी जी का यह उद्धरण द्रष्टव्य है 'उन्हें अबला पुकारना महिलाओं की आंतरिक शक्ति को दुत्कारना है। यदि हम इतिहास पर नजर डालें तो हमें उनकी वीरता की मिसालें मिलेंगी। यदि महिलाएँ देश की गरिमा बढ़ाने का संकल्प कर लें तो कुछ ही महीनों में वे अपनी आध्यात्मिक अनुभूति के बल पर देश का रूप बदल सकती हैं।' महिलाओं की इस आंतरिक शक्ति को गांधी जी सत्याग्रह जैसे अहिंसक हथियार के लिए सर्वथा उपयुक्त मानते थे। वे कहा करते थे कि 'अहिंसा और सत्याग्रह के मार्ग पर चल रही महिलाएँ सहज रूप से बड़ी से बड़ी बाधाओं का सामना कर सकती हैं।' उनका यह भी दृढ़ विश्वास था कि सत्याग्रह ने महिलाओं को घर की चारदीवारी से बाहर निकालकर समाज एवं देश की सेवा करने का मौका दिया है। यह बात उनके इस कथन से स्पष्ट होती है 'मैंने महिला सेवा को रचनात्मक कार्यक्रम में शामिल किया है, क्योंकि सत्याग्रह ने स्वत: ही महिलाओं को जिस तरह अंधेरे से बाहर निकाल दिया है, वैसा इतने कम समय में और किसी भी उपाय से नहीं हो सकता था।'

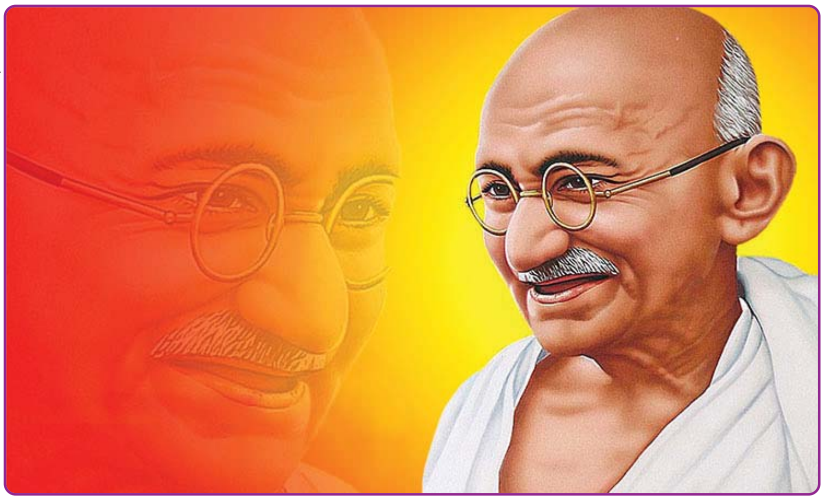

परंतु वे इस वास्तविकता से परिचित थे कि भावनात्मक स्तर पर सम्मान और समानता के समर्थन भर से महिलाओं को समाज में असली बराबरी नहीं दिलाई जा सकती। गांधी जी का स्पष्ट मत था कि औरतों का शैक्षिक स्तर सुधारकर उन्हें आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाना बहुत जरूरी है। यह कम महत्वपूर्ण नहीं है कि गांधी जी ने महिला समानता के लिए आर्थिक स्वावलंबन की आवश्यकता को पहचान लिया था। उनके खादी आंदोलन का एक उद्देश्य स्वदेशी की भावना को उजागर करना और दूसरा उद्देश्य देश की गरीब जनता, विशेषकर महिलाओं को, जो कि सामाजिक बंधनों के कारण घर से बाहर जाकर काम-धंधे नहीं कर पाती थीं, घर पर चरखा या तकली चलाकर कुछ धन अर्जित करने का साधन उपलब्ध कराना था।

खादी उद्योग के माध्यम से गाँवों, कस्बों व शहरों की लाखों निर्धन महिलाओं को देशभक्ति की अनुभूति के साथ- साथ रोजगार भी मिला और उनके जीवन में खुशहाली आई। महात्मा गांधी चाहते थे कि औरतें आर्थिक तथा दैहिक शोषण के साथ-साथ सदियों से चली आ रही सोच से उपजी मानसिक गुलामी से भी मुक्ति पाने की चेष्टा करें। वे विभिन्न महिला संगठनों की बैठकों, आश्रमों की सभाओं, गोष्ठियों, उत्सवों, त्योहारों तथा अन्य अवसरों पर महिलाओं में आत्मविश्वास जगाने का कोई मौका हाथ से जाने नहीं देते थे।

20 जनवरी, **1918** को मुंबई में 'भगिनी समाज' की बैठक को संबोधित करते हुए गांधी जी ने सुझाव दिया कि उन्हें किसी महिला को अपना अध्यक्ष चुनना चाहिए। इसी तरह **8** मई, **1919** को मुंबई में ही महिलाओं की एक सभा में गांधी जी ने कहा 'यह आवश्यक है कि महिलाएँ देश में हो रहे विकास में अपना योगदान करें।' **29** जून, **1919** को अहमदाबाद में 'वनिता आश्रम' की बैठक को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा, 'मैं **1915** से देश के विभिन्न भागों की अपनी यात्राओं के दौरान कहता आया हूँ कि जब तक महिलाएँ पुरुषों के बराबर खड़ी नहीं होंगी और अपना अधिकार नहीं जताएँगी, तब तक वे अपनी पहचान नहीं बना पाएँगी।'

महिलाओं के जीवन को नकारात्मक रूप से प्रभावित करने वाली सामाजिक कुरीतियों के बारे में उनके मन में काफी कड़वाहट थी। वे मानते थे कि बाल-विवाह, परदा प्रथा, सती प्रथा और विधवा-विवाह-निषेध जैसी कुरीतियों के कारण ही महिलाएँ उन्नति नहीं कर पातीं और शोषण, अन्याय, अत्याचार तथा असमानता झेलने को विवश होती हैं। उन्होंने इन कुप्रथाओं के उन्मूलन के लिए कोई संगठित आंदोलन तो चलाया नहीं, किंतु विभिन्न मंचों पर अपने व्याख्यानों और लेखों के माध्यम से वे इन सामाजिक कुरीतियों पर कठोर प्रहार करते रहे।

हिंदू समाज में विधवाओं की दुर्दशा से वे बहुत दु:खी थे। वे कहा करते थे कि छोटी-छोटी बच्चियों पर वैधव्य थोपना एक जघन्य अपराध है, जिसके लिए हिंदुओं को हर रोज भारी कीमत चुकानी पड़ रही है। गांधी जी महिला संगठनों तथा समाज-सुधार में लगे पुरुष कार्यकर्ताओं से कहा करते थे कि वे समाज में विधवा-विवाह, विशेषकर बाल-विधवाओं के पुनर्विवाह के पक्ष में वातावरण बनाने का प्रयास करें। 21 फरवरी, 1926 को 'नवजीवन' अखबार में एक विधवा से प्राप्त पत्र की चर्चा करते हुए गांधी जी ने लिखा, 'अपने अनुभव से मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि कोई बाल-विधवा बड़ी होकर यदि पुन: शादी करना चाहे, तो उसे पूरी आजादी होनी चाहिए। न केवल उसे पुनर्विवाह के लिए प्रेरित किया जाए, बल्कि उसके माँ-बाप को चाहिए कि वे उसका सही ढंग से पुनर्विवाह करें।'

गांधी जी ने बाल-विवाह पर अपनी आपत्ति अनेक बार प्रकट की। 14 अक्तूबर, 1926 को 'यंग इंडिया' में गांधी जी ने बंगाल में 60 साल के एक व्यक्ति द्वारा अपनी बेटी के उम्र की बच्ची से शादी करने की घटना की निंदा करते हुए समाज के कर्णधारों से कहा कि वे बाल-वधुओं और बाल-विधवाओं को अमानवीय कष्टों से मुक्ति दिलाने के लिए सामाजिक नियमों को बदलें। गांधी जी की स्वस्थ सामाजिक सोच में महिलाओं को पुरुषों के समकक्ष मानने में कहीं कोई अस्पष्टता या संशय दिखाई नहीं देता।

वास्तव में वे मन, वचन और कर्म से महिला-पुरुष समानता के प्रबल समर्थक थे। बल्कि कुछ मामलों में वे स्त्री को पुरुष की तुलना में अधिक सशक्त समझते थे। गांधी जी की मान्यता थी कि भावों में उदात्तता के मामले में पुरुष वर्ग महिलाओं के सामने नहीं टिक सकता। गांधी जी की इस मान्यता की पुष्टि इस उद्धरण से होती है, 'यदि शक्ति का अभिप्राय नैतिक शक्ति से है तो महिला निश्चित रूप से पुरुष से कहीं ऊँची है।'

हमारे देश में महापुरुषों की लंबी परंपरा है और गांधी जी इस परंपरा में आधुनिक विभूतियों में सबसे ऊँचे पायदान पर खड़े दिखाई देते हैं। दुनिया के सबसे शक्तिशाली ब्रिटिश साम्राज्य से सीधी टक्कर लेते हुए भी उन्होंने महिला सशक्तिकरण जैसी उस समय की अचर्चित समस्या को अपनी चिंता का केंद्र बनाया। महात्मा गांधी एक ऐसा स्थाई दीप स्तंभ हैं, जो पुरानी पीढ़ियों की तरह वर्तमान एवं भावी पीढ़ियों के भी अंधकारमय हृदयों में रोशनी एवं ऊर्जा का संचार करते रहेंगे। आगे भी उनके जन्म की कई शताब्दियाँ मनाई जाती रहेंगी।

- सी-302, हिंद अपार्टमेंट्स
प्लॉट नं.12, सेक्टर-5
द्वारका, नई दिल्ली-110075
मोबाइल: +91 9910907662

मेरे गौरव हैं वे

- श्री ऋषिमोहन श्रीवास्तव -

'देखो जी, ये तुम्हारे पिताजी दिन-रात बरामदे में यों ही पड़े रहते हैं। चाहे जब खाट पर पड़े-पड़े कहीं भी थूका-थाकी करते रहते हैं।' मालती ने पति घनश्याम से कहा। 'बाबू जी चलने-फिरने से लाचार हैं, वे लकवा के कारण चल भी नहीं सकते। यदि कभी खाँसी आ ही जाती है... या उनकी तबीयत खराब होती है और वे कहीं थूक भी देते हैं, तो तुम्हें क्या कष्ट है? थोड़ा साफ-सफाई ही न करनी पड़ती है।' घनश्याम ने मालती की बात का जवाब दिया।

'तुम तो यही कहोगे। पर देखा है उनकी वजह से बरामदे में कितनी गंदगी रहती है? मैं कहाँ तक सफाई करती फिरूँ... पड़ा रहे ऐसे ही...' मालती ने फिर से तुनकते हुए कहा। 'तुम मेरे पिताजी को बरामदे की गंदगी का कारण बता रही हो... तुम्हें शर्म नहीं आती? उन्होंने मुझे पैदा किया है। वे मेरे पिताजी हैं। मेरे पथ-प्रदर्शक हैं। मेरे गौरव हैं। आज घर-आंगन की जो शान-शौकत तुम देख रही हो, उसके पीछे मेरे पिता की मेहनत, उनकी व्यवहार कुशलता और उनकी कर्मठता ही है। आज के बाद मैं तुम्हारे मुँह से उनकी एक बुराई भी नहीं सुनूँगा।' घनश्याम ने दृढ़ता और आत्मविश्वास भरे लहजे में मालती को सचेत किया।

- एस-1, नित्यानंद विला
कमलेश्वर कॉलोनी, जीवाजीगंज
लश्कर, ग्वालियर-474001
मोबाइल: +91 8964963542

उस घर की आँखों से

- श्री रमेश शर्मा -

उसका घर समुद्र के ठीक सामने गोल्डन सी बीच रोड के उस पार था। कतारों में खड़े आलीशान होटलों के बीच उसके झोंपड़ीनुमा घर का लोकेशन इस तरह था कि उस घर की आँखों से समुद्र की सुंदरता को हर समय देखा जा सकता था। समुद्र हर वक्त चिंघाड़ता रहता। इस चिंघाड़ में एक के बाद एक उठती लहरों का सौंदर्य अप्रतिम हो उठता था। मैं सी-बिच पर खड़े उस अप्रतिम सौंदर्य को देखता और आश्चर्य में डूब जाता। समुद्र की लहरों से अठखेलियाँ करते स्त्री-पुरुषों के जोड़े उस अप्रतिम सौंदर्य में चार चाँद लगा देते। जलक्रीड़ा में मग्न उन हर्षित जोड़ों को मैं एकटक इस तरह देखता गोया पलक झपक लिया तो जैसे कोई अप्रतिम सौंदर्य को देख पाने से वंचित हो जाऊँगा। हम जिस होटल में ठहरे थे उसके पिछवाड़े ही उसका घर था। मैं समुद्र से उसके घर की निकटता को मापता और कई बार ईर्ष्या से भर उठता। 'मेरे हिस्से में यह घर क्यों नहीं आया?' मैं जब भी पुरी आता और सी-बिच पर होता यह सवाल मेरे भीतर उठ खड़ा होता। दो साल पहले पिछली बार जब हम पुरी आये थे तो दो-चार दिन रहकर उससे मिलने की इच्छा मेरे भीतर इतनी प्रबल हो गई थी कि एक दिन होटल से निकल कर सीधे हम उसके पास मिलने पहुँच गये थे। घर में उसके अलावा उसकी पत्नी भर थी। उसकी साधारण ग्रामीणों जैसी वेशभूषा देखकर ही लग रहा था कि वह कम पढ़ी-लिखी एक घरेलू श्रमिक महिला है। घर में टंगी चीजों को देखकर लगा कि वे हैंडीक्राफ्ट का काम करते हैं। वे कला में माहिर लगे, पर उनके चेहरे पर कोई उत्साह न पाकर मुझे इस बात पर यकीन होने लगा कि यह देश कलाकारों का सम्मान करना अब भूलने लगा है।

वे अपरिचित थे, पर हमें अपनी ओर आता हुआ देख उन्होंने हमारा सामान्य अभिवादन जरूर किया था। शायद उन्हें लगा हो कि हम उनके हाथों की बनाई हुई चीजों के कई ग्राहक हैं। मैंने दस मिनट की अनौपचारिक बातचीत में बहुत कुछ उनसे जानने की कोशिश की थी। पर उनके निजी जीवन की कोई भी जानकारी मेरे हाथ नहीं आई। वापसी पर हमने दो हैंडलूम के थैले उनसे जरूर खरीद लिये थे। बात-बात में उसने अपना नाम सुखनाथ बताया था।

'तुम बहुत भाग्यशाली हो सुखनाथ कि ऐसी जगह पर तुम्हारा घर है।' वापसी पर मैंने उससे कहा तो उसने मेरी बातों को सुनकर भी चुप्पी साध ली। उसका भाव शून्य चेहरा अब भी मुझे याद आता रहा है। उस चेहरे के साथ मुझे और भी बातें याद आने लगती हैं।

उस दिन मेरी ट्रेन समय पर पहुँच रही थी। यह पुरी के लिए मेरी दूसरी यात्रा थी और सुखनाथ से मिलने की इच्छा मेरे भीतर एक उमंग जगा रही थी। यूँ भी तपस्विनी एक्सप्रेस सुबह-सुबह पुरी स्टेशन पर पहुँच ही जाती है। ट्रेन से उतरकर मैंने ऑटो वाले को आवाज दी, 'होटल हॉली डे रिसॉर्ट जाना है।'

'क्या बाबू आप भी?', ऑटो वाले के चेहरे पर मायूसी का भाव था, जो कि मेरे द्वारा होटल पहले से बुक करा लिये जाने की वजह से उभरा था। उसके हिस्से में कमीशन की अब कोई संभावना नहीं थी।

ऑटो में बैठे-बैठे ही मैं सोचने लगा कि डिजिटल इंडिया ने कई लोगों को घर बैठे ही रोजगार दे दिया है। इस सोच के साथ-साथ मुझे यह बात भी कचोटने लगी कि तकनीक हमेशा निम्न तबके का ही नुकसान क्यों करती है? यह सवाल कुछ देर मेरे भीतर बना रहा। पर सी-बीच के सामने पहुँचते ही मैं इस सवाल को भूल गया।

मैं अपने ठीहे तक पहुँच चुका था। अपनी भव्यता के साथ होटल हॉली डे रिसॉर्ट मेरी प्रतीक्षा कर रहा था। सौ के बजाय एक सौ दस रुपये देकर मैंने ऑटो वाले को जब विदा किया तो मात्र दस रुपये अधिक मिल जाने की वजह से उसके चेहरे पर उभरी ख़ुशी ने मेरे भीतर भी थोड़ी ख़ुशी पैदा कर दी थी। 'जरूरत पड़े तो मुझे कॉल करिएगा सर।' जाते-जाते उसने मुझे अपना सेलफोन नंबर भी दिया, जिसे मैंने अपनी मोबाइल पर उसके सामने ही सेव कर लिया, ताकि उसे तसल्ली हो।

मैंने अपने होटल के कमरे के झरोखे के उस पार देखा। कुछ भी तो नहीं बदला था। समुद्र की ख़ूबसूरती वैसी ही नजर आ रही थी। उसके किनारों पर सैलानी वैसे ही चहलकदमी करते नजर आ रहे थे। इतना कुछ होने के बाद भी मेरा मन कहीं और था। मैं सुखदेव से मिलना चाहता था। सोचा, शाम को मिल लूँगा, सो लंच के बाद मैं सो गया।

नींद में सोते हुए मुझे तुलिका याद आने लगी। उसे तो इस बार भी मेरे साथ होना था। कुछ बातें ऊपर वाले के निर्णय पर तय होती हैं। तुलिका को इस बार मेरे साथ नहीं होना था, सो वह नहीं थी। वह अब कहीं नहीं है। पिछली बार उसने कहा था मुझसे, 'चंदर! अगली बार मैं पुरी आऊँगी तो जगन्नाथ मंदिर के कल्प वृक्ष पर धागा जरूर बांधूंगी।' उसकी कोई मनोकामना थी, जिसे इस तरह कल्प वृक्ष पर धागा बांधकर वह पाना चाहती थी।

मैंने कई बार पूछा था, 'आखिर तुम्हारी मनोकामना क्या है?' उसने कभी बताया नहीं था। वह बहुत अंतर्मुखी और ईमानदार लड़की थी। एक दो मुलाकातों में ही लगने लगा था कि इसके साथ आराम से जिंदगी गुजारी जा सकती है। किसी के इतना करीब आकर भी कई बार हम सारी बातें कहाँ जान पाते हैं। मुझे पता ही नहीं था कि उसे कैंसर की बीमारी थी। उसने कभी बताया भी तो नहीं था। कुछ बातें देर से समझ में आती हैं। उसके गुजर जाने के बाद मैं महसूस कर सका कि उसकी मनोकामना क्या रही होगी। कैंसर से मुक्त होकर शायद वह मेरे साथ जीवन गुजारना चाहती थी। मैं तो उसे अपना सहयात्री मान ही चुका था। पर शायद यह ईश्वर को मंजूर नहीं था। जगन्नाथ मंदिर के कल्प वृक्ष पर धागा बांधने की उसकी इच्छा अधूरी रह गई थी। मुझे समझ में नहीं आया कि पिछली बार ही उसने कल्प वृक्ष पर धागा क्यों नहीं बांध लिया। पर शायद कुछ चीजें चाहकर भी नहीं हो पातीं।

सहसा मेरी नींद टूट गई। मैंने घड़ी पर नजर दौड़ाई, शाम के पाँच बज चुके थे। अचानक झरोखे के उस पार से ठंडी हवा का एक झोंका आया और मेरा बदन सिहर उठा।

उस दिन सैलानियों की भारी भीड़ थी। मैं जब होटल से बाहर निकला तो शाम के छः बज रहे थे। सूर्य डूब चुका था। मेरा मन सुखनाथ की ओर ही भागा जा रहा था। सोचा टहल लूँ, फिर उससे मिलता हूँ। इस बार तुलिका साथ नहीं थी। सुखनाथ अगर उसके बारे में पूछ बैठा तो मैं क्या जवाब दूँगा। चलते-चलते मैं सोच में पड़ गया था। बीच में ठहरकर एक जगह मैंने अनमने भाव से नारियल का पानी पिया था। नारियल का पानी तुलिका को पसंद था। पिछली बार हम दोनों ने साथ-साथ नारियल का पानी पिया था।

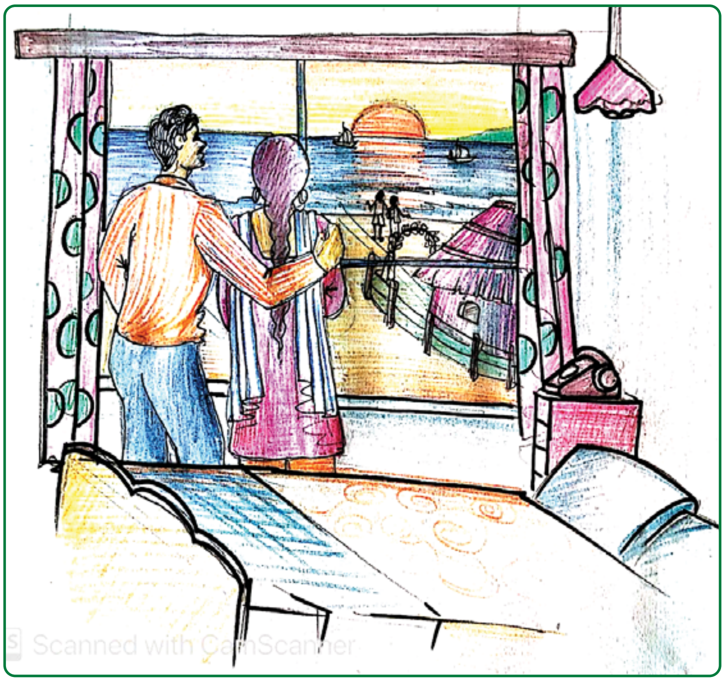

Scanned with CamScanner

उसका घर अब बहुत नजदीक था। पास पहुँचा तो वह घर थोड़ा उजड़ा हुआ नजर आया। सामने के दरवाजे पर जंग चढ़ गई थी। उस जर्जर दरवाजे पर मैंने दस्तक दी। भीतर से कोई आवाज नहीं आई। मैंने फिर दस्तक दी। इस बार दरवाजा खुला। दरवाजा खुलने पर चर्रर... की एक अजीब सी आवाज आई। बाहर सुखनाथ की पत्नी खड़ी थी। वह भी बहुत कमजोर और जर्जर नजर आई।

'मुझे सुखनाथ से मिलना है', मैंने कहा। 'वे तो अब नहीं रहे। एक दिन समुद्र में नाव लेकर मछली पकड़ने गये थे, फिर लौटकर ही नहीं आये। आंधी-तूफान में कहीं फँसकर रह गये।' मैं उसकी बातें सुन एकदम सन्न रह गया।

पिछली बार जब आप आये थे तो आपने कहा था कि हम लोग खुशकिस्मत हैं, क्योंकि इस घर से समुद्र की सुंदरता को देखा जा सकता है। बाबू! क्या आप यह घर खरीदेंगे?' उसने एक ही साँस में कह दिया था।

वह कहती चली जा रही थी और मैं सुन रहा था, 'वे कहा करते थे कि यह घर अगर बेचना ही पड़ा तो हम किसी होटल वाले के हाथ नहीं बेचेंगे। किसी ऐसे सैलानी के हाथ सौंपेंगे, जो इस घर की आँखों से समुद्र की सुंदरता को देख सके। होटल वाले तो मुँह माँगी कीमत देने को तैयार हैं, पर मैं चाहती हूँ कि उनकी बात रह जाय।'

'यह घर मत बेचो', मैंने उससे विनीत भाव से कहा। 'ना बाबू! अब मैं यहाँ नहीं रह सकती। यहाँ अब रहा नहीं जाता। समुद्र अब बहुत भयानक दिखता है। रह-रहकर डराता है मुझे।' कहते हुए वह एकदम रुआँ-सी हो उठी थी।

उसकी बातें सुन मैं चुप रह गया। कुछ बोल पाने की हिम्मत मेरी जाती रही। मैं चुपचाप लौट आया। लौटते हुए मुझे रह-रहकर तुलिका याद आती रही। सुखनाथ के घर की आँखें तो वहीं थीं, पर दृश्य बदल चुके थे। देखते-देखते दुनिया कई बार अलग क्यों लगने लगती है? मेरे मन में सवाल आ-जा रहे थे।

'क्या उस घर की आँखों से समुद्र उस तरह कभी सुंदर लग सकेगा?' मेरे मन में यह सवाल तैर रहा था। मैं सोचने लगा, 'सुख-दु:ख लगा रहता है। दुनिया बदलती कब है? उसकी सुंदरता उसी तरह बनी रहती है। लोग बदल जाते हैं। फिर कभी कोई उस घर में आएगा और उस घर की आँखों से फिर से समुद्र उसे सुंदर लगने लगेगा।'

- 92, श्रीकुंज
बोईरदार
रायगढ़-496001, छत्तीसगढ़
मोबाइल: +91 9752685148

दया

प्राय: दया व करुणा एक सा प्रतीत होते हैं, लेकिन इनके अर्थ में महीन अंतर होता है। अर्थ की सूक्ष्मता ऐसी है कि शब्दकोश बनाने वाले भी गच्चा खा जाते हैं। फिर इन शब्दों के प्रयोक्ताओं से भूल हो जाना स्वाभाविक ही है। करुणा मनोस्थितिजन्य संवेदना है तो वहीं दया परिस्थितिजन्य मनोभाव है। करुणा मनुष्य के मन में सात्विकता की ज्योति जलाने का काम करती है, जबकि दया सिर्फ परिस्थिति के प्रभाव में उत्पन्न होती है अर्थात दया, करुणा से कुछ तुच्छ है। कहा तो ऐसा भी जाता है कि जिसके अंत:स्थल में करुणा नहीं होती है, उसके मनोभाव में दया उत्पन्न होती है, जो तात्कालिक होती है और मनुष्य स्वभाव के अनुरूप बराबरी का मोलभाव करती है। अर्थात जब हम किसी पर दया करते हैं तो उससे भी दया की अपेक्षा करते हैं। लेकिन करुणा ऐसी अपेक्षाओं से परे होती है। इसीलिए भगवान महावीर और गौतम बुद्ध को दयावान न कहकर करुणावान कहा जाता है। क्योंकि ऐसा माना जाता है कि उनके हृदय से प्राणीमात्र के लिए हमेशा करुणा की स्फूर्त धारा बहती रहती थी।

जब आप कहीं जा रहे होते हैं और रास्ते में कोई जीर्ण-शीर्ण भिखारी मिल जाता है तो आपको उस पर दया आती है और आप उसे कुछेक सहयोग देकर चलते बनते हैं। आपका दायित्व बोध वहीं अवरुद्ध हो जाता है। आप अपने आप में गर्व का अनुभव करते हैं कि आपने किसी जरूरतमंद की सहायता की है। अर्थात दया आपके भीतर दंभ अथवा घमंड को विकसित करने वाला कारक तत्व बनता है अथवा यूँ कहें कि दया हममें अहंकार भरता है और उसका पोषण करता है। जबकि इसके ठीक विपरीत करुणा अहंकार को तोड़ती है। अर्थात करुणा उसमें होती है, जिसमें अहंकार न हो।

गौतम ऋषि के मतानुसार मनुष्य के लिए निर्धारित आठ आत्मगुणों में दया सर्वश्रेष्ठ है। उनके अनुसार दया सभी मनुष्य मात्र के लिए आवश्यक है। क्योंकि दया भाव के द्वारा ही परस्पर कष्टों का निवारण होता है। दया के बिना इस संसार का संचालन संभव नहीं है। माता जब संतान को जन्म देती है, तो शुरूआती दौर में वह अपनी संतान पर दया ही दिखाती है। वह भरसक प्रयास करती है कि उसकी संतान को भूख अथवा अन्य किसी प्रकार की पीड़ा या कष्ट न हो। वह नाना प्रकार के कष्टों को सहते हुए अपनी संतान का पालन-पोषण करती है, जिससे उसमें ममता व करुणा का असीमित विकास होता है। गुरु भी कुछ इसी तरह से अपने शिष्यों के साथ बर्ताव करते हुए उनके जीवन में ज्ञान की ज्योति जलाने का हर संभव प्रयास करता है। गुरु की दया से ही एक सामान्य सा शिष्य शास्त्र-पारंगत बनता है।

गौतम ऋषि के अनुसार संसार के संचालन में दया ही सबसे उपयुक्त साधन है। क्योंकि दया मनुष्य को अति आसक्ति की ओर नहीं ले जाती है। वह सामान्य अनुबंधों के साथ-साथ मानवता की गाड़ी को खींचने में सहायक होती है। कहा जाता है कि दयावान के शासन में सारी प्रजा सुखी रहती है। वह इसलिए कि दयावान सबकी आवश्यकताओं का ध्यान रख सकता है और किसी के प्रति बहुत अधिक कारुणिक भाव या आसक्ति नहीं रखता। इसके प्रभाव में दयावान शासक अपराधी को दंड भी दे सकता है और नि:सहाय की सहायता भी कर सकता है। मतलब यह है कि दया मानवीय मूल्यों का आवश्यक अंग तो है, लेकिन यह उच्चस्थ सीमा नहीं है। इसलिए कहा जाता है कि राजा को दयावान होना चाहिए, कारुणिक नहीं।

दया अपने आप में प्रसन्नता, प्रफुल्लता का मधुर झरना है। जिस हृदय में दया हमेशा निर्झरित होती रहती है, वहाँ स्वयंसेवी आह्लाद, आनंद के मधुर स्वर निनादित होते रहते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि दयालु व्यक्ति सहज आत्म सुख से सराबोर रहता है। वस्तुत: संसार का सबसे महान धर्म दया ही है। इसके स्पर्श मात्र से ईर्ष्या, द्वेष, हिंसा आदि जैसी भीषण मानसिक संवेदनाएँ शमित हो जाती हैं। दया में ईश्वरत्व बसता है, अर्थात दया ईश्वर स्वरूप है।

महर्षि वेदव्यास ने लिखा है 'सभी प्राणियों के प्रति दया का भाव रखना ईश्वर तक पहुँचने का सबसे सरल मार्ग है।' दया का दान सबसे महान दान माना जाता है। शास्त्रों एवं अन्य नैतिक कथाओं में दयावान लोगों का वर्णन है, क्योंकि दया के माध्यम से ही हम लोगों के दिलों को जीत सकते हैं।

कुल मिलाकर दया व्यक्तित्व सुधार का एक सशक्त माध्यम है। दया हमारे स्वभाव को समाजोपयोगी बनाती है। दया संस्कृति व सभ्यताओं को चिरस्थाई बनाने का मूलाधार भी है। दया आत्मा का वह विशिष्ट गुण है, जहाँ मानव अपने व प्राणी जगत के अस्तित्व को बचाए रखने, उसका संवर्धन करने एवं भावी पीढ़ी की चिंताओं का ख्याल रखने में हमारी मदद करता है। दया के आचरण हेतु किसी बाह्य साधनों की आवश्यकता नहीं होती, बल्कि यह अपने ही अंत:स्थल में पुष्पित व पल्लवित होती है।

कुँअर जावेद की गजलें

(1)

कहाँ की मिट्टी हूँ यह ध्यान में रखना है।
मुझको मेरे हिंदोस्तान में रहना है।।
कमरों में जब तक जिंदा लाशें हैं।
घर के बुजुर्गों को दालान में रहना है।।
चाहे जलाओ या दफनाओ कुछ भी करो।
मिट्टी को तो हिंदोस्तान में रहना है।।
जान के तुमको जान बनाया है अपनी।
जान हो तुमको मेरी जान में रहना है।।
दु:ख है मेरे रामजी आखिर कब तक यूँ।
तुमको सियासत की दूकान में रहना है।।
जब तक खुद्दारी को तवज्जो मिलती नहीं।
नकली फूलों को गुलदान में रहना है।।
चाहे जीतें, चाहे हारें, कुछ भी हो।
जब तक जिंदा हैं मैदान में रहना है।।

(2)

तुम तो मत पूछो ये नजदीकियाँ होती क्या हैं।
फूल कब पूछते हैं तितलियाँ होती क्या हैं।।
चादरें तान कर सोने की है आदत तुमको।
क्या भला जानोगे ये हिचकियाँ होती क्या हैं।।
हर तरफ खून-खराबे की मची है इक धूम।
अब भी तुम पूछते हो कुर्सियाँ होती क्या हैं।।
आधा खाते हैं जो और आधा गिरा देते हैं।
क्या बताएंगे तुम्हें रोटियाँ होती क्या हैं।।
फर्जी लोगों के यहाँ फर्ज रखा है गिरवी।
इनके दरबार में ये अर्जियाँ होती क्या हैं।।
आपने कृष्ण को मजहब की नजर से देखा।
आप क्या समझोगे यह गोपियाँ होती क्या हैं।।
अपने-अपने माहौल बनाओ ऐसा।
बेटे अब जान ही लें बेटियाँ क्या होती हैं।।

(3)

लोकतंत्र की हम क्यूँ ख़ूबियाँ नहीं गिनते।
वोट गिनते हैं पर अर्थियाँ नहीं गिनते।।
हम गरीब लोग जानते हैं अपनी सीमाएँ।
हम किसी भी राजा की रानियाँ नहीं गिनते।।
हम गले नहीं मिलते इसका गम तो है उनको।
अपनी अस्तिनों की बरदियाँ नहीं गिनते।।
साफ-साफ जाहिर है उसके घर की खुशहाली।
उसके फूल से बच्चे रोटियाँ नहीं गिनते।।
वह बुझे चरागों पर उंगलियाँ उठाते हैं।
कितनी बार आई हैं आँधियाँ नहीं गिनते।।
हमको भी मुहज्जब और बाअदब कहे दुनिया।
इसलिए बड़ों की हम खामियाँ नहीं गिनते।।
बेहिसाब खुशबू की उल्फतें लुटाते हैं।
फूल अपने घर आई तितलियाँ नहीं गिनते।।

(4)

ऐ भटके बैरागी तुझको कब आएगा होश,
चेहरा है बदशक्ल तो इसमें दर्पण का क्या दोष,
जीवन का एक चक्र है प्यारे पतझड़ और बहारें,
कभी तपन से हारी भी तो हैं नदिया की धारें,
ऐ मतवाले भौंरे तुझको कब आएगा होश?
नहीं खिला कोई फूल तो इसमें मधुवन का क्या दोष?
प्रेम के तू सच्चे मोती चुन यौवन के सागर से,
शुरु कर इक प्रेम-यात्रा तू मन के अंदर से,
ऐ दीवाने प्रेमी तुझको कब आएगा होश?
बाहों में नहीं जोश तो फिर आलिंगन का क्या दोष?
खुशबू का इक धर्म है सबके घर आना-जाना,
तू भी तो इक खुशबू है बुन प्यार का ताना-बाना,
ऐ ख़ुशबू की रानी तुमको कब आएगा होश?
गर लिपटे हैं नाग तो इसमें चंदन का क्या दोष?
तूने खिले फूलों के हरगिज रंग नहीं पहचाने,
खुशबू को भी बाँटना चाहा काम किए बचकाने,
घर-मंदिर के स्वामी तुम्हें कब आएगा होश?
उठने लगी दीवार तो इसमें आँगन का क्या दोष?

(5)

कुर्सी से जिसको प्यार हो उसको न वोट दो।
दिल्ली का तलबगार हो उसको न वोट दो।।
बढ़ने का भ्रष्टाचार का खतरा उसी से है।
जिस पर बहुत उधार हो उसे न वोट दो।।
आ जाए मेरे हाथ में बस सांसद-निधि।
जिसको यह इंतजार है उसे न वोट दो।।
अपने विरोधियों को ठिकाने लगाऊँगा।
जिस पर यह धुन सवार हो उसे न वोट दो।।
पुश्तों से खानदानी सियासी है और जो।
नेता का रिश्तेदार हो उसको न वोट दो।।
टी वी के चैनलों के हसीं स्क्रीन पर।
दिखने को बेकरार है उसको न वोट दो।।
जीता अगर तो कुनबे को आगे बढ़ाऊँगा।
जिसका यही विचार है उसको न वोट दो।।

(6)

हमीं को प्यार के काबिल नहीं समझती है।
हमारे दिल को वह दिल नहीं समझती है।।
हजारों जानें गई इन हसीनों के खातिर।
यह दुनिया क्यों इन्हें कातिल नहीं समझती है।।
वह कौम जोश में आती है पूरे होश के साथ।
जो और कौमों को बुजदिल नहीं समझती है।।
खुदा का शुक्र है सुनते हैं इन दिनों मुझको।
वह अपने आप से गाफिल नहीं समझती है।।
यहाँ पे कौन और किसका कलाम पढ़ता है।
मुशायरों की यह महफिल नहीं समझती है।।

(7)

मुझको सुन लो जरा माहौल सुहाना कर दो।
कब कहा मेरे नाम जमाना कर दो।।
साफ इनकार से दिल होता है टुकड़े-टुकड़े।
तुमको मिलना न हो तो कोई बहाना कर दो।।
आपके नाम से मुझ पर कोई उंगली न उठे।
मुझसे इतना मिलो तुम मुझे पुराना कर दो।।
मेरी चाहत का कोई फैसला हो ही जाए।
या ठिकाने ही लगा दो या ठिकाना कर दो।।
दिल नहीं है न मिलो द्वार तक आ तो जाओ।
जैसा आया हूँ मुझे वैसा रवाना कर दो।।

(8)

ऐसी सियासत की जब तक अंगड़ाई बनी रहेगी।
हिंदू और मुस्लिम के बीच यह खाई बनी रहेगी।।
यारों! बिस्मिलाह खान देखो दुनिया में नहीं हैं।
लेकिन उनकी छोड़ी हुई शहनाई बनी रहेगी।।
कोई पाप करो तो पहले इतना सोच के रखना।
चाहे बस्ती छोड़ भी दो रुसवाई बनी रहेगी।।
सारे दलों के सब नेता आपस में मिले रहेंगे।
और जनता के बीच में हाथापाई बनी रहेगी।।
सरकारों का क्या सरकारें आती-जाती रहेंगी।
गजल मीर की तुलसी की चौपाई बनी रहेगी।।
मेरे पुराने कपड़े कभी फटने का नाम नहीं लेंगे।
क्योंकि माँ के हाथों की तुरपाई बनी रहेगी।।
कृष्ण का वादा है तुमसे वह चाहे कोई भी युग हो।
द्रौपदी तुम्हारे कपड़ो की लंबाई बनी रहेगी।।
आओ हम कविता वाले भारत को टूट कर चाहें।
भारत बना रहेगा तो कविताई बनी रहेगी।।

(9)

वफा का, प्यार का मंजर कहीं नहीं मिलता।
हमें तो आपसे बेहतर कहीं नहीं मिलता।।
वह जिसके कत्ल ने इंसानियत को जिंदा किया।
उसी के नाम का पत्थर कहीं नहीं मिलता।।
खुद अपने हाथ से तकदीर लिखनी पड़ती है।
कि यार मोल मुकद्दर कहीं नहीं मिलता।।
वह जिस नदी में ठहराव नजर आने लगता है।
उसी नदी को समंदर कहीं नहीं मिलता।।
वहाँ सुकून के दो पल गुजारें ऐ जावेद।
मकान मिलते हैं रहने को घर नहीं मिलता।।

- 324, गंज शहीदा
श्रीपुरा, कोटा-324006
राजस्थान
मोबाइल: +91 9414185454

डॉ मदन सैनी की कविताएँ

लड़कियाँ - (एक)

नहीं जानतीं
लड़कियाँ
कि नहीं बच पाते
बुलेट प्रूफ के
रक्षा-कवच में
शिखर पुरुष...
और...
गर्भाशय के रक्षा-कवच में
कन्या-भ्रूण
नहीं जानतीं
लड़कियाँ
कि नहीं बच पाते
रोशनी के दायरे में
मंडराते मच्छर,
काल छिपकली की
जिह्वा से...
किंतु यह सब
नहीं जानतीं
लड़कियाँ
तभी तो
बिना खाद-पानी की
परवाह किए
अनायास ही
उग आती हैं
कुकुरमुत्तों की तरह
लड़कियाँ।

लड़कियाँ (दो)

लड़कियाँ
उग आती हैं
कुकुरमुत्तों की तरह
बिना खाद-पानी की
परवाह किए
परवान चढ़ने लगती हैं
लड़कियाँ
नहीं पहचाने जाते गर्भ में
कुकुरमुत्ते।
मुक्त रहते हैं
भ्रूण-भक्षी भेड़ियों की चंगुल से
जीते हैं...
मरते हैं...
अपनी मौत।
पर,
पहचान ली जाती हैं
लड़कियाँ
पनपने से पहले ही
पेट में।
या देवी सर्वभूतेषु
मातृ-रूपेण संस्थिता:
या देवी सर्वभूतेषु
शक्ति-रूपेण संस्थिता:
या देवी सर्वभूतेषु
धरित्री रूपेण संस्थिता:
धरित्री।
जो धारण करती है
बीज
जिसे नष्ट कर दिया जाता है
अंकुरित होने से
पहले ही
पेट में।
भ्रूण-भक्षी भेड़िए
झाँकने लगते हैं
उल्लू के
युगल कोटर-सदृश
चश्माई आँखों से
देख लेते हैं
उनको...
नारियल के भीतर के
पनियाले गट-सी पनपती हुई।
लपलपाती है
उनकी जिह्वा,
बन जाते हैं
वे नाग
और...
डस लेते हैं
लड़कियों के
उदरस्थ बीज को
दीवार पर रेंगती
छिपकली की तरह
लपक लेते हैं
जैसे नन्हें मच्छरों को।
फिर भी
कुकुरमुत्तों की तरह
उग आती हैं वे
बिना खाद-पानी की
परवाह किए
परवान चढ़ने लगती हैं
बढ़ने लगती हैं
नागर बेल सी।
झूमने
इठलाने लगती हैं
कनेर की टहनियों सी
चंपकवर्णी लड़कियाँ
रूपांतरित होने लगती हैं
चंदन की लकड़ियों में
कटाक्ष करतीं
कटाक्ष सहतीं
चंदनबदनी-चंदनबालाएँ
देने लगती हैं सुवास...
यत्र नार्यस्तु पूज्यंते
रमंते तत्र देवता...
तत्र मँडराने लगते हैं
भौंरे

दौड़ पड़ते हैं
कालकूट भुजंग
लेकिन
जब गड़ा देते हैं वे
अपने विषदंत
और उतार देते हैं
दुनिया भर का गरल
गहरे तक
उनकी
चंदन-देह में
तब,
भरने से पहले ही
सूख जाते हैं
उनके युगल अमृत-घट
और लहू बन जाता है
पानी,
अबला जीवन हाय तुम्हारी यही
कहानी।
फिर भी उग आती हैं
कुकुरमुत्तों की तरह
बिना खाद-पानी की
परवाह किए
लड़कियाँ।
सुखा दिए जाते हैं
कनक की कामना में...
कनक-छड़ी-सी
कामिनियों के
चंदन-बदन
चढ़ा दिए जाते हैं
चंदन-रहित चिता पर...
पर...
फिर भी
उग आती हैं
कुकुरमुत्तों की तरह
बिना खाद-पानी की
परवाह किए
लड़कियाँ।

आस के बंध

मन रे,
आस के बंध
अनूठे।
इस दुनिया में
कहाँ चैन है
बीते जाते
दिवस-रैन हैं...
यहाँ सभी
ठगने को आतुर
हरि रूठे तो
रूठे।
मन रे,
आस के बंध
अनूठे।
जीवन
धूप-छाँह की
माया
क्यों फिरता है
तू भरमाया...
नदी-नाव
संयोग सभी का
रिश्ते-नाते
झूठे।
मन रे,
आस के बंध
अनूठे।
पंचभूत का
गोरखधंधा
क्यों होता है
इसमें अंधा...
तू अपनी
धुन में चलता चल
जग रूठे तो रूठे।
मन रे,
आस के बंध
अनूठे।

सुख के पल

जीवन में
आते हैं
कुछ ही पल
सुख के
शेष सभी
दु:ख के।
जीवन में
बजती है
पदचाप जभी
सुख के पल की
चुपचाप
चला आता है दु:ख
चुपके।
जीवन में
सतरंगे सुख का
इंद्रधनुष
जब तनता है
तब ज्ञात नहीं
प्रत्यंचा पर
चढ़ आता है दु:ख
कब कैसे
छुपके।
जीवन में
बरसाती तम के
बादल बीच
क्षणिका की-सी
क्षणिका कौंध बन
बूँद-बूँद
ढुल-ढुलता-सा
आता है सुख
धूप के।
जीवन में
आते हैं
कुछ ही पल
सुख के
शेष सभी
दु:ख के।

- अनाथालय के पीछे,
विवेकनगर, बीकानेर-334001
मोबाइल: +91 7597055150

स्वरोजगार हेतु सामर्थ्य विकास

- सुश्री वी दर्शिनी -

स्वरोजगार का अर्थ है अपना रोजगार यानि अपने बल पर खड़ा होना। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि स्वावलंबी बनना। हालाँकि इसके लिए हमें अपने सामर्थ्य को बढ़ाना पड़ेगा और मानसिकता में बदलाव लाना होगा। रहीम ने कहा भी है -

'रहीम निज संपत्ति बिना, कोउ न बिपति सहाय।
बिनु पानी ज्यों जलज को, नहिं रवि सके बचाय।।'

अर्थात अपने पास धन का अभाव हो तो विपत्ति आने पर कोई सहायता नहीं करता। जैसे बिना जल के कमल को सूरज भी नहीं बचा नहीं पाता। हम तो मनुष्य मात्र हैं। सामर्थ्य विकास के अभाव में स्वरोजगार की कल्पना कैसे कर सकते? जब आप कोई नौकरी करते हैं तो आप वह कार्य करते हैं, जो आपका रोजगार दाता आपको सौंपता है तथा बदले में आपको मजदूरी अथवा वेतन के रूप में एक निश्चित राशि देता है।

लेकिन जब आप नौकरी की जगह अपना कोई रोजगार आरंभ करते हैं, तब आप जो भी करते हैं वह अपने लिए करते हैं, अपनी आजीविका कमाते हैं। इसे ही स्वरोजगार कहते हैं। मान लीजिए, आप एक दवाइयों की दूकान चला रहे हों या फिर एक दर्जी की दूकान चलाकर अपना जीविकोपार्जन कर रहे हों। यदि एक व्यक्ति कोई आर्थिक क्रिया करता है तथा स्वयं ही इसका प्रबंधन करता है तो इसे स्वरोजगार कहते हैं।

गाँव, कस्बा या शहर में आप छोटे-छोटे स्टोर, घरेलू उपयोग के सामानों की मरम्मत करनेवाली दूकानें अथवा सेवा प्रदान करने वाली इकाइयाँ अवश्य देखी होंगी। इन प्रतिष्ठानों का मालिक प्रायः एक व्यक्ति ही होता है तथा वही उनका प्रबंध भी करता है। हालाँकि कभी-कभी वह एक-दो लोगों को वह अपने सहायक के रूप में रख लेता है। किराना स्टोर, स्टेशनरी, किताब, दवा, सिलाई, बाल काटने की दूकान के साथ-साथ टेलीफोन बूथ, ब्यूटी पार्लर, बिजली के सामानों की मरम्मत, साइकिल मरम्मत की दूकानें आदि अनेकानेक स्वरोजगार आधारित काम-धंधों के उदाहरण हैं।

कुछ व्यवसाय पेशागत योग्यताओं के आधार पर भी होते हैं, जिनके लिए पेशा संबंधी पर्याप्त प्रशिक्षण एवं अनुभव की आवश्यकता होती है। लेकिन वे भी स्वरोजगार के अंतर्गत ही आते हैं। उदाहरण के लिए पेशे में कार्यरत डॉक्टर, वकील, चार्टर्ड एकाउंटेंट, फार्मासिस्ट, वास्तुविद (आर्किटेक्ट) आदि। जब आप स्वरोजगार की योजना बनाते हैं तो इसके लिए आपको संबंधित व्यवसाय के लिए बनाए गए सरकारी विभागों द्वारा तय किए गए मानकों एवं दिशानिर्देशों का ध्यान रखना होता है।

स्वरोजगार में व्यवसायी को काम करते हुए कई चीजों को सीखना होता है, क्योंकि उसे अपने व्यवसाय से संबंधित अपने फायदे के लिए सभी निर्णय स्वयं लेने होते हैं। स्वरोजगार में सफलता प्राप्त करने के लिए सर्वाधिक अनुकूल अवसरों की पहचान करने की योग्यता आपमें होनी चाहिए है। साथ ही स्वरोजगार में लगे व्यक्ति को बाजार में हो रहे परिवर्तनों के प्रति सचेत और सतर्क होना चाहिए, जिससे कि वह बाजार के अनुसार अपने व्यवसाय के कार्यों का समायोजन कर सकें।

हालांकि भंडारों अथवा दूकानों के स्वामी, प्रबंधन करके या क्रय-विक्रय करके अथवा सेवा प्रदान करके जो आय अर्जित करते हैं, उसी में उनके लाभ-हानि से लेकर सारी सीमाएँ छिपी होती हैं। वस्तुतः उपरोक्त आजीविकाओं पर टैक्स आदि का प्रावधान अक्सर न के बराबर होता है। क्योंकि यह पारंपरिक धंधे हैं और मात्र एक या दो परिवार चलाने के लिए संसाधन उपलब्ध कराते हैं। लेकिन यदि आप कुछ बड़ा जैसे कि एक प्रिंटिंग प्रेस खोलते हैं, तब आपके सामने कुछ सरकारी प्रावधान जैसे अपनी संस्था के नाम का पंजीकरण, संस्था के विस्तार के हिसाब से आवश्यक सुरक्षा उपाय, श्रम कानूनों का अनुपालन आदि की समस्याएँ आ सकती हैं। हालाँकि ये सरकारी प्रावधान नितांत आवश्यक होते हैं। इसलिए इन्हें समस्याएँ मानना ठीक नहीं होगा।

स्वरोजगार में लगे व्यक्ति को ईमानदार, अनुशासित, काम के प्रति गंभीर तथा परिश्रमी होना आवश्यक होता है। यदि हम अपना लक्ष्य निश्चित करके परिश्रम करते हुए अपने सामर्थ्य का विकास कर लें तो स्वरोजगार में आपकी सफलता निश्चित है। साथ ही आप दिन दूनी - रात चौगुनी' तरक्की कर सकते हैं।

कविवर रामधारी सिंह 'दिनकर' ने कहा भी है,

'खम ठोक ठेलता है जब नर,
पर्वत के जाते पाँव उखड़।।'

अर्थात मानव अपने कर्मो व ज्ञान के बल पर प्रकृति को टक्कर देने में सक्षम है।

- दसवीं कक्षा
डी ए वी सेंटेनरी पब्लिक स्कूल
उक्कुनगरम, विशाखपट्टणम

प्रदूषण नियंत्रण में वैयक्तिक भूमिका

- सुश्री आकृति इशिका -

'स्वच्छ वातावरण स्वच्छ विचार,
मानवता की यही पुकार।'

पर्यावरण जीवन के प्रत्येक पक्ष से किसी न किसी रूप में जुड़ा हुआ है। अत: प्रत्येक व्यक्ति को अपने पर्यावरण के प्रति जागरूक रहना चाहिए और उनके नियमों का पालन करना ही चाहिए। मानव ही नहीं, वरन अन्य जीवों को भी सुव्यवस्थित रूप से जीने के लिए संतुलित वातावरण चाहिए। संतुलित वातावरण में जीवनोपयोगी तत्व एक निश्चित मात्रा में ही होते हैं। जब इन तत्वों की मात्रा में कमी या वृद्धि होती है, तब वातावरण प्रदूषित होता है और प्राणियों के लिए हानिकारक स्थिति बनती है।

प्रकृति हमारे जीवन के दिन प्रतिदिन की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करती है। दिन-रात, धूप, वर्षा, गर्मी व सर्दी सभी प्रकृति के ही तो रूप हैं। अर्थात हम जिस पर्यावरण में जी रहे हैं, उसे ही जनसंख्या वृद्धि, औद्योगिकीकरण के कारण प्रदूषित कर रहे हैं, जो अब हमारे लिए एक समस्या बन गई है। अनेकानेक उद्योग-धंधों, वाहनों तथा अन्यान्य मशीनों, उपकरणों द्वारा हम हर घड़ी जल, वायु, धरती आदि को प्रदूषित करते रहते हैं। पर्यावरण में जहरीली गैसें जैसे, कार्बन डाई ऑक्साइड, सल्फर डाई ऑक्साइड आदि की मात्रा बढ़ती ही जा रही है। पृथ्वी पर तीन-चौथाई भाग में पानी है पर पीने का पानी मात्र 3% है, जिसका मुख्य कारण जल-प्रदूषण है। वैज्ञानिक विकास का लाभ तो हमने पाया है, पर पर्यावरण को काफी नुकसान पहुँचाया है।

ऐसा करके हम तरक्की की होड़ में अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मार रहे हैं। इतना ही नहीं हम तरह-तरह की बीमारियों के शिकार भी हो रहे हैं। वनों की हो रही निरंतर कटाई से दिन-ब-दिन कार्बन डाई ऑक्साइड की मात्रा बढ़ती ही जा रही है, जिसे ग्रीन हाउस प्रभाव कहा जा रहा है। यदि इसी दर से इन गैसों की मात्रा बढ़ेगी तो पृथ्वी का औसत तापमान बढ़ता जाएगा और इसके फलस्वरूप पृथ्वी के ध्रुवों पर जमे हिमखंड पिघलकर समुद्र के जलस्तर को बढ़ाएँगे और कई देशों का अस्तित्व खतरे में पड़ जाएगा। हमें इस बात पर विशेष ध्यान देना है कि हम देश का विकास करते हुए पर्यावरण को क्षति न पहुँचायें। प्रदूषण निवारण के लिए हमारा मंत्र होना चाहिए कि:

'हम विकास तो करेंगे,
पर साथ ही धरती का ताप भी हरेंगे।।'

सर्वप्रथम हमको नदियों में कूड़ा एवं मलवा बहाना बंद करना चाहिए। पशुओं को भी नहलाने से रोकना चाहिए। पूजा के फूल भी पानी में न डालकर उसे वृक्ष के नीचे डालना चाहिए। सूखी पत्तियों तथा बस्तियों के कचरों को जलाना नहीं, बल्कि उससे उर्वरक बनाने का प्रयास करना चाहिए। ऐसा करके हम वायु-प्रदूषण, अम्ल वर्षा या ग्रीन हाउस गैसों के प्रभाव से बच सकते हैं।

हम जानते हैं कि वाहनों के उपयोग से हमारा बहुमूल्य समय बचता है। पर यदि हमें कम दूरी की यात्रा करनी हो तो हमें पैदल या साइकिल से यात्रा करनी चाहिए। हमें निजी वाहन की जगह, सार्वजनिक वाहनों का प्रयोग करना चाहिए। ऐसा करने से हम प्रदूषित वायु के प्रभाव से बच सकते हैं।

खेतों में उपज के लिए आजकल अनेक कीटनाशक रसायन छिड़के जाते हैं और मिट्टी की उर्वराशक्ति को बढ़ाने के लिए कई प्रकार के रसायनिक उर्वरकों एवं रसायनों का उपयोग किया जा रहा है, जो हमारे अपनी भोजन श्रृंखला के माध्यम से शरीर के भीतर प्रवेश कर तरह-तरह की बीमारियाँ फैलाते हैं। अत: हमें इससे बचने के लिए आर्गेनिक फार्मिंग पर जोर देना चाहिए।

कल कारखानों को घनी बस्तियों से दूर रखना चाहिए, जैसा हमारा इस्पात संयंत्र है। जहरीली गैसों की निकासी के लिए ऊँची-ऊँची चिमनियों के साथ-साथ उन गैसों का उपयोग किसी अन्य रूप में करने की योजना बनाई जाए। ध्वनि प्रदूषण भी मनुष्य को मानसिक रूप से बीमार करती है। अत: हमें पटाखे न जलाने का संकल्प लेना चाहिए, लाउड-स्पीकरों का प्रयोग बंद करना चाहिए। हमें अनावश्यक ऊँची आवाज में बात नहीं करनी चाहिए। हम सभी जानते हैं कि वातावरण को सुरक्षित रखने में वृक्ष बड़ी भूमिका निभाते हैं। अत: हमें वृक्षारोपण पर बल देना चाहिए।

'वृक्षों को करो न नष्ट,
वरना साँस लेने में होगा कष्ट।'

अत: हमें वनमहोत्सव, विश्व पर्यावरण दिवस आदि मनाते हुए वृक्षारोपण करना चाहिए। जिस प्रकार प्रदूषण के जिम्मेदार हम स्वयं हैं, उसी प्रकार अपने भविष्य को सुरक्षित करने के लिए अपनी गतिविधियों में सुधार करना भी हमारा ही कर्तव्य है।

- छठवीं कक्षा
डी ए वी सेंटेनरी पब्लिक स्कूल
उक्कुनगरम, विशाखपट्टणम

व्यंग्य

जुगलबंदी होली और बसंत की

- श्री पूरन सरमा -

वे लेखक थे और वह भी होली वाले। होली को जितने आयामों से उन्होंने देखा है, मैंने नहीं देखा। होली पर मैंने भी लिखा है, पर उन जैसा नहीं। इधर होली मार्च में आती है और होली लेखन वे नवंबर से ही आरंभ कर देते हैं, और दिसंबर के प्रथम सप्ताह से ही क्या मासिक, क्या पाक्षिक, क्या साप्ताहिक और क्या दैनिक, सारे पत्र-पत्रिकाओं को अपनी रचनाएँ भेज देते हैं। उसका सहयोग अयाचित होता है, वे निरपेक्ष भाव से सबको उनके स्तर के हिसाब से अपनी रचनाएँ, जो सन् 1960 से लिखी चली आ रही हैं, उनकी आपूर्ति जारी रखते हैं।

यही नहीं वे अपनी होली संबंधी कई-कई रचनाओं को पत्र-पत्रिकाओं में एक साथ भेज देते हैं। मतलब यह कि वे संपादक को खुद विकल्प देते हैं, जो अच्छा लगे छाप लें। या यूँ कहें कि कुछ न कुछ छाप दें। भाई रचना की है तो कहीं न कहीं छपना भी तो चाहिए, कोई न कोई पढ़ना भी तो चाहिए। लेखन कार्य में लगी मेहनत, रचना टाइप कराने में लगा व्यय आदि का खर्च निकालने तथा लेखक मंडली में धौंस जमाने के लिए कुछ तो चाहिए न।

स्थानीय समाचार-पत्रों के संपादकों के तो वे नाक में दम कर देते हैं। आना-जाना, टेलीफोन, कहलवाना, रचना छपवाने के लिए जो भी उपाय हो सकता है, वे अपनाते हैं। कमोवेश मैं भी इन्हीं हथकंडों को अपनाता हूँ। फर्क उनमें और मुझमें बस इतना-सा है कि वे होली के अथेंटिक राइटर हैं, तो मैं बसंत का। होली व बसंत का चोली-दामन का साथ होने से, मेरे और उनमें घनिष्ठता भी है। मिलते हैं तो अपनी कुशलक्षेम की एवज में हम लोग रचनाओं की कुशलक्षेम ज्यादा पूछते हैं।

अभी होली से पहले ही, यहीं कोई एक माह पूर्व मिले, तो मैंने पूछ दिया - 'भाई साहब! क्या पोजीशन है होली की?' वे अत्यंत निराश भाव से बोले - 'पता नहीं होली के प्रति जन-सामान्य की तरह ही न जाने क्यों समाचार-पत्रों का भी उपेक्षा भाव हो गया हैं। अब होली विशेषांक निकालना कोई उत्साहजनक नजर नहीं आता। स्वीकृति पत्र एक भी जगह से नहीं आया है। लेकिन कोई रचना इधर-उधर भेज दें, तो पुन: प्रकाशित का टैग लगने का खतरा है। मैं तो रचनाएँ भेजकर भूल गया हूँ, तुम सुनाओ बसंत कैसा रहा?'

मैं बोला - 'बसंत का तो और भी बुरा हाल है। वह कहीं आता है और कहीं आता ही नहीं... अब बसंत तो बस निराला जी पर लिखे आलेख तक सिमटकर रह गया है। 'जुही की कली' अभी भी खिलती है, लेकिन अखबारों में बसंत केवल बसंत पंचमी तक सिमटकर रह गया है। बसंत एक ऋतु है, जो पूरे फागुन तक रहती है। बस बसंत पंचमी को जो छप गया, वह छप गया। वरना बाद में तो कोई उसे पूछता भी नहीं। सच कहूँ तो... बसंत के मौसम में पतझड़ जैसा हूँ।

पहले बसंत की रचनाएँ संपादक बड़े चाव से छापते थे, लेकिन अब तो लगता है मानो बसंत को जैसे कोई जानता ही नहीं। नये से नये आयाम देकर मैं बसंत की रचनाओं में पिरोता हूँ, लेकिन सब बेकार। एक बार नहीं छपा फिर गई एक साल की।'

वे बोले - 'यही हाल होली का भी है। अस्सी रचनाओं में से आठ छपती हैं, बेहतर रचनाओं का टाइपिंग व्यय बेकार जाता है। लेकिन आदत पड़ गई है, हर साल होली वाला लिफाफा निकाला और टाइप वाले को दे देता हूँ। आठ रचनाओं से तो टाइप का खर्चा भी नहीं निकलता, लेकिन यार, तुम्हारी वह बसंत की ललित रचना जो 'कोयलिया' पत्रिका में छपी है अच्छी थी, पढ़ी तो नहीं लेकिन डिसप्ले बढ़िया था। खूब फूल-पत्ती से सजाकर छापा था उसे... बहुत आकर्षक लग रहा था।'

मैंने कहा - 'बस-बस वही छपी है, बाकी रचनाएँ बेकार हो गईं। दो सौ रुपये मिलेंगे, उससे बंटता क्या है? बस यही है कि लोग नाम देख लेते हैं। बस यह रहता है कि हम लोग भी अभी तक साहित्य सेवा में लगे हुए हैं।'

वे बोले - 'यही सोचकर तो मैं भी भेज देता हूँ। अब कई बार मन करता है कि होली को छोड़कर इधर दूसरे व्यावसायिक विषय पर ध्यान दिया जाये तो ज्यादा फलीभूत हो सकते हैं।'

मैंने कहा - 'खबरों पर सामाजिक व्यंग्य लेखन ज्यादा कारगर रहेगा। सारे दैनिकों ने व्यंग्य कॉलम शुरू कर रखे हैं। सामयिक टिप्पणी लिखकर कमाया जा सकता है। ज्यादा टेढ़ा काम भी नहीं है।'

वे बोले कुछ नहीं, शून्य में देखते रहे। मैंने कहा - 'चलिए छोड़िये, अपने लिए तो होली अैर बसंत की जुगलबंदी ही ठीक है। अच्छा अभ्यास हो रहा है। इसी को चलने देते हैं।' उन्होंने कातर दृष्टि से मुझे देखा और रवाना हो गये।

- 124/61-62, अग्रवाल फार्म
मानसरोवर, जयपुर-302020
मोबाइल: +91 9828024500

कर्ज

- डॉ अमिता दुबे -

आपको जीवन साथी की तलाश शुरू कर देनी चाहिए पापा। अवंतिका ने नाटकीय अंदाज में कहा, 'अभी इतना लंबा जीवन कैसे कटेगा अकेले।'

'तुम्हारे सहारे बेटा।' गगन की आवाज जैसे कुएँ से आ रही थी।

'पर पापा मेरा क्या सहारा? मैं तो एम बी ए करने कैलीफोर्निया जा रही थी। बीच में मम्मा बीमार हो गयीं, नहीं तो मैंने एंटरेंस टैस्ट भी क्वालीफाई कर लिया था। उस समय आप मम्मा की वजह से बहुत परेशान थे, इसलिए मैंने बताया नहीं। कल ही मेल आयी है, अभी मेरी सीट भरी नहीं है। मुझे जाने का मौका मिल सकता है कुछ लेट फीस के साथ।' अवंतिका मुख्य मुद्दे पर आ गयी।

गगन ने पत्नी गरिमा के चित्र की ओर देखकर कहा, 'तुम्हें जाना है तो जाओ अवि..., मेरी चिंता मत करो। मैं अकेला कहाँ हूँ, तुम्हारी मम्मी की यादें हैं मेरे साथ। मेरा कारोबार है, मेरे सहयोगी हैं और सबसे बढ़कर आदिल है मेरे बचपन का साथी, मेरा यार।' गगन ने सामने से आते हुए आदिल को देखकर कहा।

आदिल ने अदब से सिर हिलाया और गले में पड़े गमछे से आँसुओं को पोंछा, जो मालकिन गरिमा भाभी की याद में अनायास निकल आये थे। जब से भाभी अल्लाह को प्यारी हुई हैं, तब से घर वीरान सा हो गया है। भाभी की हँसी पूरे घर को गुलजार करती थी। बात-बात पर चुटकुले सुनाकर ठहाके लगाना उनकी आदत थी।

बिटिया अवि और गगन भइया तो घर में कम ही रहते थे। भाभी का ज्यादातर वक्त आदिल के साथ बीतता था। इसलिए सबसे अकेला तो आदिल ही हुआ था। आदिल ने भाभी की तस्वीर को देखकर ठंडी आह भरी।

वाह! रे परवरदिगार! तेरी कैसी रजा है। भाभी की उमर ही क्या थी ? अभी तो इन आँखों ने उनकी डोली देखी थी मइय्यत भी देखने की गुनहगार हो गयीं। गगन के टोकने पर आदिल ने अवंतिका से कहा - 'बिटिया रानी। आपको जहाँ भी जाना हो, जाइये। हम अपने मालिक का साथ नहीं छोड़ने वाले।'

'वह तो ठीक है अंकल! लेकिन मैं हमेशा तो इस घर में रहने वाली नहीं। पहले पढ़ाई पूरी करूँगी। नौकरी करूँगी, फिर शादी भी होगी। तब पापा अकेले कैसे रहेंगे?' अवंतिका ने बात खत्म करने से पहले दाँतों के बीच जीभ दबा ली। उसे लगा, अभी शादी की बात नहीं करनी चाहिए थी। पापा क्या सोच रहे होंगे। मम्मी को गये अभी एक महीना भी नहीं बीता है उसे शादी की पड़ी है।

गगन ने सोचा - कितनी उतावली पीढ़ी है। अपने कैरियर की दीवानी अवंतिका उल्टा-सीधा कुछ भी बोले जा रही है। यह नहीं जानती कि गरिमा की बीमारी में जो भी जमापूँजी थी, खर्च हो चुकी है। कैलीफोर्निया जाने में **20-25** लाख का खर्च आना तो मामूली बात है। घर को गिरवी रखकर पैसा तो मिल सकता है, लेकिन कर्ज कैसे चुकाना है? इस लड़खड़ाते व्यवसाय से कैसे संभव होगा? जब गरिमा थी, तो वह ऑफिस का काम ठीक से देख लेती थी। ऑर्डर आदि लाने के लिए जब गगन को महीने में **15** दिन बाहर भटकना पड़ता, तब गरिमा की कार्य कुशलता देखते ही बनती थी। उसके पिता का खड़ा किया हुआ यह व्यवसाय अपने उत्तराधिकारी को ढूँढ़ रहा है। यह सोचकर गगन की आँखें भर आयीं।

अवंतिका बहुत ही प्रेक्टिकल थी। गनन की आँखों में आँसू देख उसने कहा, 'पापा... आप भी न..., रोने से मम्मा वापस तो नहीं आ सकतीं। हमें उनका सब्स्टीट्यूट ढूँढ़ना होगा।' अवंतिका घाव पर घाव दिए जा रही थी।

गरिमा का कोई विकल्प हो सकता है क्या भला। गरिमा तो गरिमा थी। उसके पापा उसे प्यार से प्रिंसेज कहते थे। वह थी भी राजकुमारी की तरह... एकदम नाजुक, सुंदर और आकर्षक। हमेशा हँसती रहती, जब गगन उदास होता तो कहती - 'मित्र! उदास मत हो, जिंदगी चार दिन की है। जी भर जिओ, गम को पियो, मस्ती करो और सब कुछ भगवान पर छोड़ दो।'

अनजाने में गगन के मुँह से निकला - 'सब कुछ भगवान पर छोड़ दो अवि! तुम अपना काम करो, वह अपना काम करेगा... कोई रास्ता दिखायेगा।' 'पापा! आप बैठे रहो भगवान के भरोसे। मैं तो चली। पैसे का इंतजाम कर दो मुझे **15** दिन में जाना है। कुछ फॉरमेल्टी पूरी करनी है, फिर उड़ जाऊँगी।'

अवंतिका बिल्कुल भावुक नहीं थी। उसने पूरी योजना बना रखी थी। उसका मित्र प्रखर पहले ही जा चुका था। उसने ही कोशिश कर उसकी सीट रुकवायी थी। अवंतिका ने सोचा इस समय अगर कमजोर पड़ी तो जिंदगी बहुत पीछे छूट जाएगी।

प्रखर के पापा की एक ही शर्त थी कि लड़की प्रखर की तरह ही एम बी ए हो, चाहे वह किसी भी जाति बिरादरी की हो चलेगी, लेकिन पढ़ाई से समझौता नहीं। मम्मी के मरने पर प्रखर नहीं आ सका था। उसका मैसेज आया था मोबाइल पर, 'वैरी सैड, बट थिंक अबाउट फ्यूचर, कम सून।' इस संदेश के बाद अवंतिका की दिशा बदल गई थी। कल तक उसे लगता था 'पापा अकेले हो गए हैं। वह उन्हें छोड़कर कैसे जाएगी? पता नहीं उसके और मम्मी के बिना पापा कैसे रहेंगे?' लेकिन प्रखर उसका भविष्य था पापा से अलग सुनहरा भविष्य।

आदिल ने टोका - 'क्या कह रही हो बिटिया। अभी तो भाभीजान की चिता भी ठंडी नहीं हुई और तुम जाने की बात करने लगी। यह भी नहीं पूछा, पापा! तुम्हारे पास कुछ बचा भी है या नहीं।'

'बचा क्यों नहीं होगा। मेरे नाना का इतना बड़ा बिजनेस है और आप कह रहे हैं कुछ बचा भी है? 'तुम्हारी मम्मी के इलाज में बहुत खर्च हुआ', गगन ने कहा। 'तो समुद्र से कुछ बूँदें या पानी की बाल्टियाँ भी निकाल ली जाएँ तो क्या समुद्र का पानी कम होता है। डैडी लगता है आपने बिजनेस पर ध्यान नहीं दिया। मम्मी तो केवल छः महीने बीमार रहीं। बिजनेस तो 30 बरस पुराना है और आपके पास पिछले पंद्रह बरसों से है जब से नाना गुजर गए, तब से। नहीं तो नाना ही सब देखते थे।' अवंतिका गगन को याद दिला रही थी कि अब वह इस बिजनेस की मालकिन है।

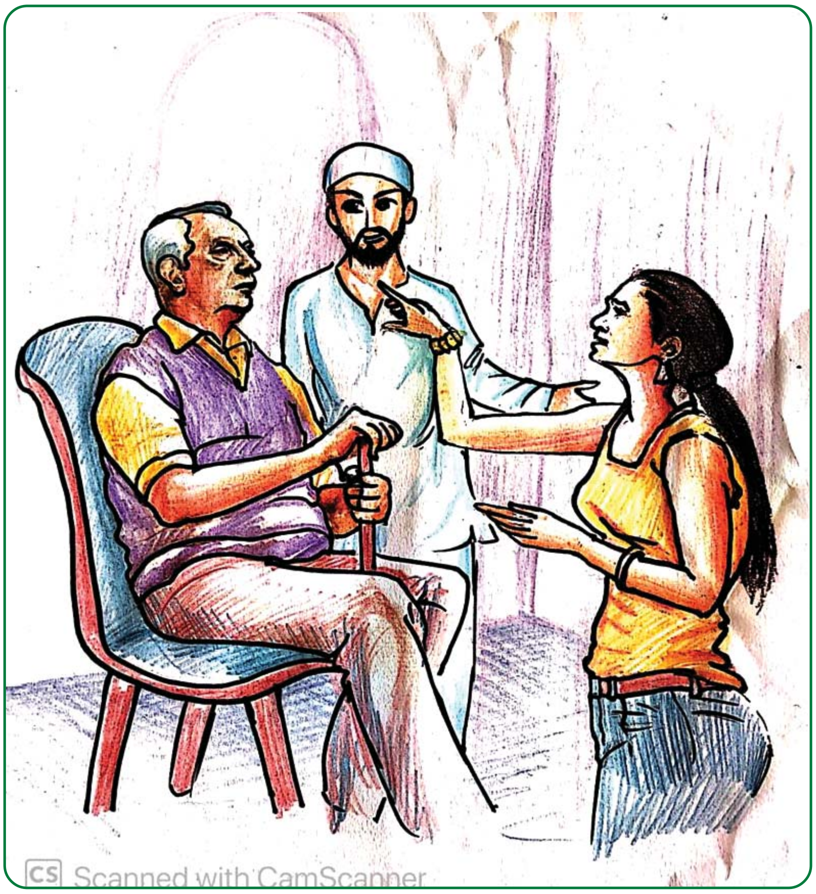

गरिमा अपने पिता की इकलौती संतान थी। गगन से शादी होने के बाद भी वह अपने पापा का हाथ बँटाने ऑफिस जाती थी। गगन अपनी नौकरी के सिलसिले में जब कभी बाहर जाता तो गरिमा अपने पापा के पास रुक जाती। अवंतिका तो स्कूल से सीधे गरिमा के पास ऑफिस ही चली जाती। देर शाम को दोनों घर लौटतीं। कभी-कभी ज्यादा थके होने पर गरिमा होटल से खाना पैक करवा लाती थी और तीनों खाकर आराम करते।

गरिमा के पापा को पैरालिसिस का अटैक पड़ा। उन्होंने गगन से बिजनेस में हाथ बँटाने का आग्रह किया। पहले तो गगन ने टाल दिया था। पर उनकी हालत दिनों-दिन बिगड़ने लगी और पुराने कर्मचारी गरिमा को सहारा देने के बजाय चकमा देने लगे। ऐसे में गगन को नौकरी छोड़ गरिमा का साथ देना पड़ा। गरिमा के पापा अपाहिज बन लगभग पाँच वर्षों तक बिस्तर पर पड़े रहे। गगन और गरिमा को अपना घर छोड़कर उनकी देखभाल के लिए वहीं उनके घर पर ही रहना पड़ा। एक दिन वकील बुलाकर गरिमा के पिता ने एक वसीयत की कि उनके मरने के बाद उनकी चल-अचल संपत्ति गरिमा की और उसके बाद अवंतिका की हो जाएगी। गगन कहीं बीच में नहीं था। गरिमा तो राजकुमारी थी अपने पापा की, लेकिन अवंतिका तो नाना की महारानी थी। धीरे-धीरे उसके अधिकार की भावना बढ़ती गयी। उसकी जायज व नाजायज माँगें पूरी होती गईं और वह मुँहफट, चिड़चिड़ी और बदतमीज होती चली गई।

नाना के बाद गरिमा ने उसे सुधारने की कोशिश की तो उसने हॉस्टल में रहने की जिद ठान ली। गरिमा के पूछने पर 'एक ही शहर में हॉस्टल में रहने का क्या मतलब?' तो बड़ी बदतमीजी से बोली - 'पढ़ाई हॉस्टल और शहर में ही हो सकती है। आप कहो तो अमेरीका, इंग्लैंड चली जाऊँ। बैंक खाते में पैसा डाल दो बस।' गरिमा सन्न रह गई थी। उसने बड़े दुःख से गगन से कहा था - 'गगन यह बेटी नहीं, मेरी दुश्मन है। देखना हमारा चैन कैसे नष्ट करेगी।' गगन ने उस समय कुछ नहीं कहा था, बस गरिमा का कंधा थपथपा कर रह गया था।

आज वही अवंतिका उसे जीवन साथी की तलाश करने का सुझाव देकर पूरे बिजनेस का मानो हिसाब माँग रही थी। पैर पटक कर घर से बाहर जाती बेटी को देख गगन ने एक निर्णय किया... गरिमा की संपत्ति से अलग होने का निर्णय। यह संपत्ति उसकी पत्नी की थी। गरिमा ने तो बहुत बार कहा - 'गगन कंपनी के शेयर मैं तुम्हारे नाम कर देती हूँ। अवंतिका के तेवर तो अभी से ठीक नहीं है।' गगन ने हँस कर कहा था - 'तुम्हारे तेवर तो ठीक हैं? पति-पत्नी का कहीं कुछ बँटा होता है? मुझे अवंतिका से क्या लेना-देना। मैं तुमसे उम्र में बड़ा हूँ, तुमसे पहले जाऊँगा। तुम माँ-बेटी निपटती रहना आपस में।'

गरिमा ने तुनक कर कहा था - 'देख लेना, तुम देखते रह जाओगे और मैं यूँ उड़ जाऊँगी...' हवाई जहाज के उड़ने का इशारा करते हुए उसने कहा। ठीक वैसा ही तो हुआ। ठगा सा ही तो छोड़कर चली गई थी गरिमा अचानक।

आदिल को याद आया पापा जी के बीमार पड़ने के बाद गगन भइया ने घर को अस्पताल बना दिया था। एक डॉक्टर एक्सरसाइज कराने आता था। उसके सुझाव पर सिरहाने से ऊपर उठने वाला पलंग खरीदा गया था। उससे पापा जी को लेटे-लेटे ही बैठा दिया जाता था। खाना वगैरह खिलाने में भी आराम हो गया था। पापा जी के बाद गगन भैया ने उस पलंग को पास के अस्पताल में दान देने को कहा तो भाभी ने कहा था - 'थोड़े दिन पड़ा रहने दो पापा की उपस्थिति का आभास करायेगा। फिर किसे पता भविष्य में जरूरत पड़ सकती है। मैं बीमार नहीं पड़ सकती क्या?' भाभी-भइया को चिढ़ा रहे थे, किसे पता था माता सरस्वती जिह्वा पर विराजमान हो गई थीं गरिमा की। लेकिन उसके बाद वह कमरा ज्यों का त्यों बंद कर दिया गया था पापा जी के कुछ सामानों के साथ। कभी-कभार भाभी अपने सामने कमरे को खुलवाकर सफाई करवातीं और हर एक चीज को छू-छूकर देख गई थीं।

इतनी तकलीफ में भी भाभी हँसती-मुस्कुराती रहती थीं। एक नर्स चौबीस घंटे उनके पास रहती थी। उसके सधे हाथों और खिंचे चेहरे के बीच वे सामंजस्य खोजते हुए कहती थीं - 'सिस्टर कामना! आपकी कौन सी कामना अधूरी रह गयी जो इतना परेशान दिखती हो।' फिर खुद ही कहतीं - 'वैसे किसी अनजान व्यक्ति का ऐसा-वैसा सारा काम करना कोई आसान बात तो है नहीं।'

कामना कहती - 'नहीं मैम। हमारी ट्रेनिंग में सिखाया जाता है कि मरीज के आराम का ध्यान रखो, फालतू बातचीत मरीज को परेशान कर सकती है।'

बातचीत से किस कम्बख्त को परेशानी होती है? न जाने कितनी सांसों की मोहलत मिली है, कम से कम हँस बोल तो लूँ। फिर तो यह संसार छूट ही जाएगा।'

बाहर खड़े आदिल और गगन रो पड़ते। अवंतिका कहती - 'मम्मा! तुम कहाँ जा रही हो। चुपचाप दवा खाओ और सो जाओ। बहुत जल्दी चंगी हो जाओगी। हॉस्टल में रहने वाली बेटी कितनी बदली-बदली लगने लगी थी गगन को।'

वही अवंतिका आज गगन को कटघरे में खड़ा कर रही थी। गगन ने अवंतिका की इच्छा के अनुसार मकान के कागज बैंक में गिरवी रखकर उसके एजुकेशनल लोन की व्यवस्था करा दी थी। इस शर्त के साथ कि यदि अवंतिका इस कर्ज को चुकाती नहीं है तो बैंक को अधिकार होगा कि वह इस घर को नीलाम कर दे या अपना कर्ज वसूलने के लिए चाहे जो भी करे। गगन का कोई लेना-देना इस डील में नहीं था।

उसे तो गरिमा के प्यार-विश्वास के कर्ज को चुकाना था। बिना टूटे, बिना रोये, बिना कुछ खोये गरिमा की स्मृतियों को संजोने का प्रयास करना था। गरिमा अक्सर कहती थी, 'एक ही बेटी है गगन। वह ससुराल चली जाएगी। हम बुड्ढा-बुड्ढी ऋषिकेश चलेंगे, जहाँ गंगा जी के किनारे एक फ्लैट लेंगे और रात-दिन गंगा जी को निहारेंगे। देखो ऐसा घर लेना, जिसकी खिड़की से गंगा जी दिखाई दें..., निर्मल-निर्मल गंगा जी... कलकल करती गंगा जी...।'

सचमुच इसी सपने को साकार करने चला है गगन। उसने आदिल को अपने गाँव लौट जाने के लिए बहुत कहा। लेकिन उसने नहीं माना। साथ रहने की जिद करता है पगला। नहीं जानता, कब किसका साथ छूट जाए, कौन कहाँ बिछुड़ जाए। भीड़ में कौन कब अकेला हो जाए। अभी दस वर्ष बहुत सारा काम किया जा सकता है। सेवानिवृत्ति की उम्र **60** वर्ष होती है, वह तो अभी **51** का ही है। गरिमा के सपने को साकार करने के लिए उसने दोबारा नौकरी करने का मन बनाया। बस, उसका निश्चय अपने जैसे एक-दो बुजुर्गों को आसरा देने के लिए गरिमा कुटीर बनाने का है। आदिल भी तो धीरे-धीरे उसी के साथ बूढ़ा होने वाला है।

- संपादक, 'साहित्य भारती'
उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान
राजर्षि पुरुषोत्तम टंडन हिंदी भवन
6, महात्मा गांधी मार्ग
हजरतगंज, लखनऊ-226001
मोबाइल: +91 9415551878

गधा गाथा

- श्री सुधीर निगम -

'गधा' शब्द दिमाग में कौंधते ही या उसकी दृष्टि के सामने साक्षात प्रकट होते ही ज्यादातर लोगों को बड़े अमंगलकारी विचार आने लगते हैं। विषय में घुसने से पूर्व आइए पहले 'गधा' शब्द पर ही विचार कर लेते हैं, फिर साक्षात गधे पर चलेंगे। हिंदी तक गधा शब्द का आगमन सीधे संस्कृत से नहीं हुआ, बीच में दो पड़ाव पार करने पड़े। संस्कृत का 'गर्दभ' (कर्कश ध्वनि करनेवाला) पालि में 'गद्दभ' बना, फिर प्राकृत में 'गद्दह' हुआ। हिंदी तक आते-आते इसने 'गदह' और 'गधा' का रूप ले लिया। इसके पर्याय हैं उपक्रोष्टा, रासभ, गदहा, वैशाख नंदन, लंबकर्ण, ग्राम्याश्य आदि। कानों की विशालता को देखते हुए गधे के लिए अरबी और फारसी में एक शब्द बना 'खर', जो सीधे संस्कृत से लिया गया। अंग्रेजी का 'ऐस' शब्द उस वैदिक प्रयोग का स्मरण दिलाता है, जब 'अश्व' का अर्थ गधा भी था। वास्तव में अश्व का अर्थ घोड़ा न होकर 'तेज चलने वाला' होता है। घोड़े से पहले गधे को ही तेज चलने वाला माना जाता था।

गधा एक अत्यंत सीधा प्राणी होता है। यह अक्सर बोझ ढोने और सवारी करने के अतिरिक्त गाली देने के काम आता है। तिकड़म से अपना काम निकालने वाले इंसान के बाप बनने में इसे कोई गुरेज नहीं। चाणक्य ने इसकी तीन अनुकरणीय विशेषताएँ बतलाई हैं, यथा: बिना विश्राम किए शर ढोना, सर्दी-गर्मी में एक-सा रहना और संतोष धारण करना। गधे की किसी अन्य विशेषता के बारे में मुझे उस दिन पता चला, जब बाजार जाते हुए रास्ते में वहाँ लोगों के एकत्र होने का कारण पूछा तो उसने सामने का मकान दिखाते हुए बताया कि यहाँ रहने वाली धोबिन की मृत्यु हो गई है। मुझे लगा धोबिन अवश्य 'नौ मन' की यानी लोकप्रिय रही होगी, तभी उसकी मृत्यु पर उसके घर के सामने पचास-साठ आदमी खड़े हैं। पूरा मामला विस्तार से मालूम करने पर ज्ञात हुआ कि धोबिन की मौत गधे की दुलत्ती खाकर हुई थी और उसके घर के सामने खड़ी भीड़ का प्रत्येक पत्नी पीड़ित व्यक्ति धोबिन-हंता गधा खरीदने या किराए पर लेने के लिए उत्सुक था।

घोड़े और गधे एक ही प्रजाति के प्राणी हैं। गधे और घोड़ी के संयोग से वर्णसंकर खच्चर पैदा हुआ, जो अपने पिता की तरह मेहनतकश निकला। प्राचीनकाल में खच्चर को अश्वतर यानी श्रेष्ठ अश्व कहा जाता था। यह शब्द आगे भी प्रयोग में आता रहा। उसके अन्य नाम हैं- खेसर, बेसरा, मिश्रज, गर्दभाश्व आदि। गाय, भैंस, बकरी, भेड़ सभी जुगाली करते हैं, परंतु घोड़े, गधे और खच्चर जुगाली नहीं करते। एक ही प्रजाति के जो ठहरे। अपनी शांतिप्रियता के कारण गधा आज भी विकासशील अवस्था में है, जबकि युद्ध में भाग लेनेवाले घोड़े विकसित हो गए। इतिहास साक्षी है कि कभी किसी गधे को घोड़े की तरह युद्ध में सक्रिय भाग नहीं लेने दिया गया।

> गर्दभराज धरती माँ के प्यारे बेटे हैं और वे खुद धरती को इतना प्यार करते हैं कि अपना पूरा शरीर ही धरती पर लोट-पोट कर माँ की गोद में निमग्न हो जाते हैं। हमारी बात का विश्वास न हो तो यह पुरानी पहेली सुन लीजिए 'ब्राह्मण प्यासा क्यों गधा उदास क्यों?' उत्तर है 'लोटा न था'।

वैदिक विवरणों से पता चलता है कि घोड़े को पालतू बनाने से पहले वैदिक जनों ने गधे को पालतू बनाया था। इसी कारण अश्वनी कुमारों का वाहन गधा है। प्राचीन काल में गधे का उपयोग गाड़ी और रथ खींचने में किया जाता था। किसी के ब्रह्मचर्य से च्युत होने पर प्रायश्चित्त के रूप में किए जाने वाले यज्ञ विशेष का नाम गर्दभयाग था। बेबीलोन में भारतीय व्यापारियों की बस्तियों में प्रचलित अश्वमेध वस्तुत: गर्दभमेध था। इतिहासकारों का मानना है कि यह प्रचलन वहाँ **2100-1800** ई.पू. के बीच प्रारंभ हुआ होगा। मुख्य शरवाही पशु होने के कारण गधे का खासा महत्व था। बंगाल में आज भी लक्ष्मी का वाहन गधा ही माना जाता है, जिसका पुतला लक्ष्मी-पूजा की रात को बस्ती के बाहर खड़ा किया जाता है, जो धनार्जन के लिए व्यापारिक यात्राओं के क्रम में उसी प्राचीन प्रयाण का सूचक है।

डॉ राधाकुमुद मुखर्जी ने लिखा है 'ऋग्वैदिक युग की अर्थ-व्यवस्था कृषि और घरेलू उद्योगों पर आश्रित थी। कृषि पशुओं पर निर्भर थी, जिनमें गाय, बैल, भैंस, घोड़े, बकरी, गधे आदि शामिल थे।' अत: स्पष्ट है कि आदिम युग से ही गधा मनुष्य के सुख-दु:ख का साथी रहा है। गधा सदैव सर्वहारा रहा है। अपने लिए उसने घोड़े की तरह सुविधाओं की माँग कभी नहीं की। घोड़े के लिए प्रतिरात्रि खरारा या मालिश जरूरी होती है, अन्यथा वह सुबह काम पर जाने से इंकार कर देगा। इसीलिए घोड़ों के लिए साईस रखने और अस्तबल बनाने की जरूरत पड़ी।

लंका के राजा रावण को गधों से बहुत लगाव था।

उसने अपने एक चचेरे भाई का नाम 'खर' यानी गधा रखा था। वाल्मीकि जी के अनुसार रावण सीता का हरण करके जिस रथ से लंका वापस गया था, उस रथ को गधे खींचे रहे थे। वाल्मीकि के शब्दों में (सीता का हरण करते समय) 'गधों से जुता हुआ और गधों के समान ही शब्द करने वाले रावण का माया निर्मित वह विशाल स्वर्णमय दिव्य रथ वहाँ दिखाई दिया।' रावण के गधे जटायु की तरह प्रगतिशील न होकर नैतिकतावादी थे। इसी कारण वे आज तक संघर्ष करते चले आ रहे हैं।

बाइबिल में ऐसी बहुत सी कहानियाँ आती हैं, जिनमें गधों का जिक्र बहुत आदरपूर्वक किया गया है। प्रभु ईसामसीह जिस समय जेरुसलम पहुँचे, वे गधे पर बैठे हुए उसे धन्य कर रहे थे। उसे 'खर-ए-ईसा' कहा गया।

खोजा (मुल्ला) नसरुद्दीन का नाम किसने नहीं पढ़ा-सुना होगा। वह बुखारा का रहनेवाला था। स्वभाव से मस्तमौला, फटेहाल और विचारों से क्रांतिकारी था। गरीबों का हमदर्द और अमीरशाही के खिलाफ था। उसे बागी घोषित कर दिया था। खोजा बुखारा से यह अपने गधे पर बैठ निकल भागा। दस साल तक तमाम मुल्कों और शहरों में भटकने के बाद वह अपने शहर वापस लौटा। उसके साथ था तो सिर्फ उसका गधा - उसका सच्चा और वफादार साथी, जो अपने मालिक के मिजाज और तौर-तरीकों से परिचित था। उसे दुनिया का सबसे चालाक और शरारती गधा माना गया है।

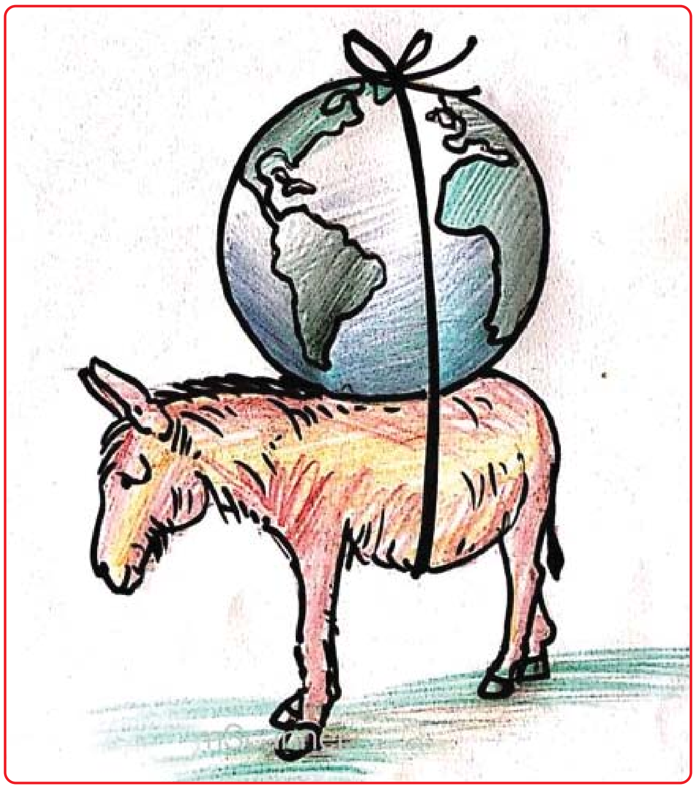

खोजा नसरुद्दीन और उसके गधे के विषय में 'अलिफ लैला की शहरजाद की 382वीं रात' में जिक्र आता है 'यह भी बयान किया गया कि वह सीधा-सादा इंसान अपने गधे की लगाम पकड़े चल रहा था और गधा पीछे-पीछे आ रहा था।' खोजा नसरुद्दीन ने ओस से नम खेत, हरे-भरे बाग और उफनती नदियाँ, नंगी बंजर पहाड़ियाँ, हँसते-मुस्कुराते चरागाह सब अपने गधे पर बैठ कर पार किए थे। बगदाद, इस्तांबूल, तेहरान, बख्शी सराय, तिफलिस, दमिश्क, तबरेज, अखमेज आदि स्थानों की यात्रा खोजा ने अपने गधे पर बैठकर संपन्न की थी। खोजा अपने गधे पर घोड़े की तरह जीन कसता था। उसके गधे को हरी तिपतिया घास बहुत प्रिय थी।

गधा साहित्य का भी विषय रहा है। उर्दू के प्रख्यात लेखक किश्न चंदर ने एक किताब लिखी थी 'गधे के सरगुजिश्त', जो हिंदी में 'एक गधे की आत्मकथा' के नाम से अनूदित हुई। इसमें एक ऐसे गधे का वर्णन किया गया है, जिसका मालिक रामू धोबी कपड़े धोते समय मगरमच्छ की पकड़ में आकर उसका शिकार बन गया था। विधवा धोबिन को पेंशन दिलाने के लिए उस गधे ने अनेक सरकारी दफ्तरों की खाक छानी, पर उसकी किसी ने सुनवाई नहीं की। अंत में उसकी मुलाकात तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरु से उनके निवास पर हो जाती है और वह लेखक किश्न चंदर का लिखा हुआ ज्ञापन पंडित जी को देने में सफल होता है। ज्ञापन देने के अलावा गधे ने पंडित जी से एक और शिकायत की, जिसे न तो लेखक ने तैयार किया था और न ही उसे बाद में उस शिकायत की जानकारी हो पाई।

मुझे यह बात पंडित जी के बगीचे के माली कुसुमाकर के अप्रकाशित संस्मरणों से पता चली। गधे की शिकायत थी कि बच्चों को पढ़ाई जानेवाली पहली किताब में 'क' से कबूतर, 'ख' से खरगोश और 'ग' से गधा दिया हुआ है। कबूतर और खरगोश जैसे निहायत डरपोक प्राणियों के साथ गधे का रखा जाना उसके लिए अपमानजनक है। यह सुनकर पंडित जी हँसे और उसे आश्वस्त किया कि भविष्य में 'ग' से 'गमला' जैसी कोई चीज कर दी जाएगी।

गधे शुरु से ही संगीतज्ञ रहे हैं। इनके गर्दभराग के सामने अच्छे-अच्छे उस्ताद नतमस्तक होते थे। उस समय मानव को 'सा रे म प नी' नामक पाँच स्वर ही प्राप्त थे। संगीतकला की अपूर्णता से क्षुब्ध होकर चोटी के संगीतकारों के एक शिष्टमंडल ने गधे से सहायता के लिए गुहार लगाई। उदार गधे ने अपने दो स्वर 'ग', 'धा' इंसान को दान कर दिए। इस प्रकार मानवीय संगीत सात स्वरों के साथ पूरा हो गया और उसी दिन से गधा बेचारा बेसुरा हो गया। गर्दभराग जिसे कृतघ्न मानव अब रेंकना

कहने लगा है, ध्यान से सुनने पर ज्ञात होगा कि स्वरों का सौंदर्य न होने पर भी 'राग' में लय विद्यमान है। गर्दभराग तीव्रलय से प्रारंभ होता है और क्रमश: नीचे आते विलंबित लय के साथ समाप्त होता है।

गर्दभराज धरती माँ के प्यारे बेटे हैं और वे खुद धरती को इतना प्यार करते हैं कि अपना पूरा शरीर ही धरती पर लोट-पोट कर माँ की गोद में निमग्न हो जाते हैं। हमारी बात का विश्वास न हो तो यह पुरानी पहेली सुन लीजिए 'ब्राह्मण प्यासा क्यों गधा उदास क्यों?' उत्तर है 'लोटा न था'। जिस दिन गधा धरती माता के अंक का आलिंगन नहीं कर पाता, उदास रहता है। इसे शास्त्रों में 'भौम स्नान' कहा जाता है। ऐसा होता है मातृभूमि का प्रेम।

सांड, बैल, भैंस, गाय अक्सर एक-दूसरे से लड़ते हुए पाए जाते हैं। घोड़े भी लड़ाई के लिए एक-दूसरे का पीछा करते हैं। परंतु गधा विशुद्ध अहिंसावादी जीव है। जब भी दो गधे साथ-साथ खड़े होते हैं, उनके मुँह एक-दूसरे से विपरीत दिशा में पाए जाएँगे। कारण मात्र यही है कि न आमने-सामने होंगे, न विवाद बढ़ेगा और न लड़ाई होगी। गधे की तरह बकरी भी अहिंसावादी होती है। पर गधे की तुलना में उसमें एक अतिरिक्त गुण यह होता है कि वह मनुष्य के पीने योग्य दूध भी देती है। इसी कारण गांधी जी ने अहिंसा के प्रतीक के रूप में गधे की जगह बकरी पाली थी।

गधी के दूध के बारे में विज्ञानियों की राय है कि इसमें गाय के दूध से अधिक मिठास और प्रोटीन की मात्रा पाई जाती है। एक गधी से औसतन चार से छ: लीटर तक दूध रोजाना निकाला जा सकता है। ऐतिहासिक सत्य है कि मिस्र की महारानी क्लियोपेट्रा अपने सौंदर्य में चार चाँद लगाने के लिए गधी के दूध से स्नान किया करती थी। गधी के दूध से बनी क्रीम का प्रयोग वह अपने सुडौल बदन पर करती थी, ताकि उसकी त्वचा में झुर्रियाँ न पड़े और वह लावण्यमयी बनी रहे। उसके महल में गधे-गधी का कितना सम्मान होता होगा, इसकी सहज ही कल्पना की जा सकती है।

गधे को मूर्ख कहना मूर्खता होगी। घोड़े और गधे की तुलना में घोड़ा किसी प्रकार गधे से बीस नहीं बैठता। घोड़े की तेज चाल उसकी स्वभावगत विशेषता नहीं है। मुँह में पड़े दहाना और उससे जुड़ी वल्गाओं के कारण घोड़े को दौड़ना पड़ता है। आज तक किसी ने गधे के मुँह में दहाना डालकर वल्गाएँ खींच कर उसे ऐड़ नहीं लगाई। फिर कैसे कहा जा सकता है गधा सुस्त होता है। घोड़े की तरह गधा कभी नहीं बिदकता। गधा योगी जैसा विचारवान होने के कारण प्राय: अपने में ही खोया रहता है। बहुत अधिक सताए जाने पर ही दुलत्ती झाड़ता है। सूखी या हरी जैसी भी घास दो खा लेता है। न भी दो तो सुबह निन्ने मुँह काम पर चल देगा। लेकिन जब गधे पर मालिक के अत्याचार की सीमा पार कर जाते हैं, तो उनमें आत्महत्या की प्रवृत्ति पैदा हो जाती है। सूडान में गधे के खान-पान पर कतई ध्यान नहीं दिया जाता, परंतु उन पर बोझ ज्यादा लाद देते हैं। बोझ नहीं ढो पाने पर उन्हें हंटर से पीटा जाता है। घायल होने पर आगे चलकर गधों को 'होमाटोमा' नामक बीमारी हो जाती है, जिससे त्रस्त होकर वे नदी में कूदकर आत्महत्या तक कर लेते हैं।

गधे को 'वैशाख नंदन' भी कहा जाता है। इस नामकरण के पीछे खुराफाती लोगों ने एक कहानी गढ़ ली है। कहते हैं वैशाख में गधे का स्वास्थ्य खूब अच्छा हो जाता है। कहानी के अनुसार वैशाख के महीने में मैदानों में घास नहीं के बराबर होती है। उस समय मैदान में छिटपुट उगी घास चरते-चरते गधा मैदान के एक छोर से दूसरे छोर पर पहुँचकर जब पलटकर देखता है, तो उसे लगता है कि उसने पूरे मैदान की घास चर ली है। अत: वह मोटा हो जाता है। इसके विपरीत सावन में मैदान घास से आच्छादित होते हैं और गधा जब मैदान देखता है तो सोचता है कि इतना चरने के बाद भी पूरी घास वैसी की वैसी है, अर्थात उसने कुछ भी नहीं खा पाया है और इसी सोच में वह दुबला हो जाता है। वास्तव में यह कहानी गधे को मूर्ख सिद्ध करने के लिए गढ़ी गई है।

वास्तविकता यह है कि वैशाख में चारे की कमी हो जाने के कारण मालिक को परेशानी से बचाने के लिए गधा अपना शरीर फुलाए रहता है, जिससे मालिक समझे उसका स्वास्थ्य ठीक चल रहा है। मेरा दावा है कि वैशाख के दौरान रात में गधे को देखने पर मालूम होगा कि उसका स्वास्थ्य वास्तव में गिरा हुआ है। अपने मालिक की मानसिक शांति के लिए वैशाख में दिन भर शरीर फुलाए रहने पर गधे को कितना कष्ट होता होगा, इसकी कल्पना वे लोग नहीं कर सकते जो गधे को मूर्ख समझते हैं।

'गर्दभ' गधे का सम्मानसूचक नाम है। प्रत्येक व्यक्ति में गर्दभत्व पाया जाता है, जो उसकी आयु के स्वर्णिम कालखंड में विद्यमान रहता है। 16 से 25 वर्ष तक की अवस्था मस्ती और नासमझी की होती है। ऐसे में कुछ भी मूर्खतापूर्ण कार्य, यहाँ तक कि प्रेम करने की छूट होती। इस कालखंड को 'गदहपच्चीसी' कहा जाता है।

- 104-ए/315 रामबाग,
कानपुर-208012
मोबाइल: +91 9839164507

समय चक्र

- श्रीमती प्रियंका पाठक -

टैक्सी स्टेशन के बाहर खड़ी थी। हमने उसे एड्वांस में बुक कर लिया था। ड्राइवर को पहले ही बता दिया था कि गाड़ी प्लेटफार्म नंबर एक पर आने वाली है। ड्राइवर भी स्मार्ट निकला, गाड़ी आते ही फोन करके बता दिया 'मैडम, मैं प्लैटफार्म के बाहर निकास द्वार के दाहिनी तरफ गुलमोहर के पेड़ के पास खड़ा हूँ। लाल शर्ट का खाकी जैकेट पहना हूँ।' हम बाहर निकले ही थे कि उसने पहचान लिया और उसके द्वारा बताई गई हुलिया के अनुसार हमसे भी उसे पहचानने में कोई चूक नहीं हुई। वह दौड़ते हुए आया, अभिवादन किया और तुरंत सूटकेस लेकर गाड़ी के पास आ गया। क्षण भर में ही हमें विश्वास हो गया कि वह बहुत ही व्यवहार कुशल है। सामान डिक्की में डालते हुए उसने गाड़ी में बैठने का आग्रह किया। मेरे पति आगे वाली सीट पर बैठ गए और मैं, अपनी बड़ी बेटी प्रतीक्षा, जो कुछ प्रतीक्षा के बाद हमारे आँगन में चहचहाई थी, वह और छोटी बेटी चीकू, जो चीकू की तरह ही बड़ी मीठी और रसीली बातें करती है, पीछे की सीट पर बैठ गये।

हम बेटी प्रतीक्षा के दाखिले के सिलसिले में भोपाल आए थे। यहाँ नेशनल लॉ इंस्टिट्यूट यूनिवर्सिटी में प्रतीक्षा का दाखिला होना था। इस विश्वविद्यालय में दाखिला मिलना बड़े गर्व का विषय था और हो भी क्यों ना, हर माता-पिता की ख्वाहिश भी तो ऐसी होती है कि उसके बच्चे अच्छा करें, आगे बढ़ें, सो हमें भी गर्व हो रहा था। क्लैट परीक्षा में प्रतीक्षा बढ़िया रैंक लाई थी। इसलिए देश के बेहतरीन लॉ कालेजों में से एक भोपाल के कॉलेज में उसे दाखिला मिल रहा था।

कॉलेज, रेलवे स्टेशन से करीब पंद्रह किलोमीटर की दूरी पर था। इस पूरी यात्रा में सबसे अधिक चीकू उत्साहित थी। उसका बाल मन बहुत कुछ जानने के लिए बेताब था। वह अनेकों सवाल पूछती, कभी-कभी तो मन झल्ला उठता। लेकिन उसके सवालों की सार्थकता व उसकी बोली का मीठापन पुन: उत्तर देने के लिए मजबूर कर देता था। पर पता नहीं क्यों टैक्सी में बैठते ही वह सो गई, शायद थक गई थी।

रास्ता कुछ शांत था। सड़क पर भीड़-भाड़ नहीं के बराबर थी। सुबह का समय था। हवा में भी थोड़ी ठंड थी। मन में मिश्रित भावनाएँ उमड़-घुमड़ रही थीं। एक ओर बेटी के दाखिले की खुशी, उसके उज्ज्वल भविष्य की अनंत संभावनाएँ, सफलता के सहस्र सपने मन-मस्तिष्क पर अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहे थे तो दूसरी ओर बेटी से दूर होने का दंश। अनजान शहर और अनजान लोगों में रहने के कारण मन में उठ रहे नकारात्मक सवाल मन को बोझिल कर रहे थे। बार-बार मन में प्रश्न उठता था 'अरे उसे फलां चीज पसंद है, यहाँ मिलेगी भी कि नहीं' या फिर 'कोई आकस्मिकता आने पर यहाँ फौरन कैसे पहुँचा जा सकता है?' कभी मन कहता, 'काश! कोई रिश्तेदार या जान-पहचान का आदमी यहाँ होता तो कम से कम उसे कुछ जिम्मेदारी सा सौंप कर मन को तसल्ली कर लेती।' अनगिनत सवालों के मेले में मेरा मन घूम रहा था। मुझे ध्यान भी नहीं था कि पति और प्रतीक्षा भी मेरे साथ गाड़ी में हैं। लेकिन जैसे ही बेटी को अच्छा कॉलेज मिलने की खुशी दिमाग में कौंधती, सारे नकारात्मक विचार उड़न-छू हो जाते थे। पर साथ छूटने की बात याद आते ही कलेजा मुँह को आ जाता। फिर अच्छे कॉलेज का उत्साह सारी आशंकाओं पर भारी पड़ जाता, मानो दिमाग में चूहे-बिल्ली का खेल चल रहा हो।

पता नहीं कैसे फिल्मों के फ्लैश-बैक जैसे ही अचानक बीते समय की यादें आँखों के सामने आने लगीं। अब यूँ लगने लगा, मानो सब कुछ हाल ही में घटित हुआ। ब्याह के बाद माँ-पिता जी के साथ-साथ भाई-बहन, सखी-सहेली सबको छोड़ आना हुआ, जो अक्सर हर लड़की के साथ होता है। माँ-पिताजी ने अपने कलेजे के टुकड़े को कैसे अलग किया होगा? संभवत: आज मैं वही महसूस कर रही थी। चुप्पी तो पूरी गाड़ी में पसरी पड़ी थी। पता नहीं मेरे पति और बेटी के मन में क्या चल रहा था। लेकिन चेहरों के रंगत तो यही कह रहे थे कि सबके मन में बिछुड़न का विषाद, कुछ हासिल करने की व्यग्रता के बीच भारी युद्ध चल रहा था।

शादी के लगभग पाँच वर्षों के बाद प्रतीक्षा ने हमारे घर किलकारी भरा था। मायके से लेकर ससुराल तक खुशियों के लहर में सभी लोग सराबोर हो गए थे। अब हमारी पूरी दिनचर्या सिमटकर बेटी के इर्द-गिर्द ही रह गयी थी। कुछ महीनों तक तो न सोने का समय होता था और न जगने का। सब कुछ यंत्रवत सा हो चुका था। कभी लगता कि जब बैठना शुरू करेगी तो थोड़ी फुरसत मिलेगी। जब बैठने लगी तो कुछ और तरह की चुनौतियों ने धर दबोचा। लगा कि अब जब वह चलने लगेगी, तभी कुछ राहत मिलेगी। लेकिन जब चलना शुरू किया तो हमेशा बस यही चिंता सताए रहती थी कि कहीं वह लड़खड़ाकर गिर न जाये।

हर सोच पर आशावादी विचार जीत जाते थे और पुन: एक आशा की किरण सामने आकर टिमटिमाने लगती थी। अब लगा जब स्कूल चालू हो जाये तो जिंदगी थोड़ी सरल जरूर हो जायेगी।

लेकिन यह क्या स्कूल के बाद तो जीवन और भी जटिल हो गया। रोज सुबह उठकर टिफिन बाक्स, यूनिफार्म, स्नान कराना,

कंघी करना, होमवर्क देखना, फिर पूरी तैयारी के बाद बस के लिये भागना। दिनचर्या कठिन से कठिन होती जा रही थी..., समय पंख लगाकर उड़ रहा था। धीरे-धीरे उसकी कक्षाओं के बढ़ने के साथ जिम्मेदारियाँ बढ़ती जा रही थीं। छठवीं कक्षा तक आते-आते तो रविवार भी हाथ से निकल गया। पढ़ाई से जो थोड़ा-बहुत समय निकलता वो स्विमिंग क्लास, स्केटिंग क्लास के हत्थे चढ़ जाता था।

इस बीच में छोटी बेटी का जन्म हुआ। बहुत ही नटखट है हमारी चीकू। प्रतीक्षा के एकदम इतर स्वभाव है इसका। वह जितनी शांत है, यह उतनी ही बातूनी। देखते ही देखते प्रतीक्षा बारहवीं कक्षा में आ गयी। अब हमारी चिंता का रुख अच्छे नंबर से पास होने और आगे की पढ़ाई की ओर मुड़ गई थी। दूसरे अभिभावकों की तरह ही इच्छा तो हमारी भी थी कि बेटी इंजीनियरिंग करे, पर उसकी सोच अलग थी। उसने कहा कि 'मैं क्लैट की परीक्षा दूँगी और लॉ की पढ़ाई करूँगी।' हमने भी झट से अपनी सहमति जता दी।

बारहवीं की परीक्षा में तो उसने कमाल ही कर दिया। वह अपने स्कूल ही नहीं, बल्कि क्षेत्र की टॉपर बनी। अब तो हमें विश्वास हो चुका था कि अगर उसने सोचा है लॉ करने का तो वो अच्छा ही करेगी। उसकी इच्छा थी कि वह देश के पाँच सर्वाधिक ख्याति वाले लॉ कॉलेजों में से किसी एक से अपनी लॉ की पढ़ाई करे। उसकी मेहनत रंग लायी और उसके रैंक के हिसाब से भोपाल का कॉलेज मिला था।

हमारी चुप्पी और चिंतन के बीच एक शालीन आवाज गूँजी 'लीजिये सर, आ गया, लॉ कालेज।' यह ड्राइवर की आवाज थी। अलसाए हुए मन से गाड़ी से उतरने का क्रम चालू हो गया। मैंने अपनी आँखों को छुआ, ममता की कुछ बूँदें बाहर आकर बिखर जाने को आतुर हो रही थीं। उन्हें लोकलाज और बेटी को मजबूत बनाने के लिए मैंने छुपा लिया। शायद ऐसे ही मेरे पापा और मम्मी ने मेरी विदाई के समय किया होगा। माँ तो आँख मिलाते हुए कई नसीहतें दे डाली थीं, लेकिन पापा तो मुझसे आँख भी नहीं मिला पाए थे।

कॉलेज का बड़ा सा गेट देखते ही मेरे अपने कॉलेज की याद आ गयी। गार्ड को पत्र दिखाने पर उसने गेस्ट हाउस का रास्ता बताते हुए हमें अंदर जाने का इशारा किया। बड़ा शानदार गेस्ट हाउस था। जरूरी औपचारिकाताएँ पूरी करने के बाद हम अपने कमरों में चले गये।

अब प्रतीक्षा का चेहरा थोड़ा उतरा हुआ सा मालूम पड़ रहा था। शायद थोड़ी देरी हुई थी, वैसे डर तो हम दोनों को भी लग रहा था। थोड़ी देर विश्राम करने के बाद हम लोग प्रवेश प्रक्रिया के लिये निकले। एक बड़े से हाल में प्रवेश प्रक्रिया चल रही थी। मेरे पति और प्रतीक्षा सारे दस्तावेजों के सत्यापन करवा रहे थे। मैं चीकू के साथ थी।

प्रवेश प्रक्रिया पूरी करने के बाद, अब यह चिंता थी कि बेटी अकेले कैसे रहेगी, क्या खायेगी? हॉस्टल में जाकर कमरा ले लिया। वार्डन से मिले और बच्ची का ख्याल रखने का अनुरोध किया। वार्डन काफी परिपक्व महिला थी। उन्होंने कहा 'आप चिंता न करें, एक हफ्ते भर में ही इसे यहाँ घर से भी ज्यादा अच्छा लगने लगेगा। मेस देखा सब ठीक ही लग रहा था, काफी साफ सुथरा और शांत कैंपस था। दो दिनों बाद जब कक्षाएँ शुरू हो गईं तो हम प्रतीक्षा को छोड़कर, घर के लिये निकल लिए।

प्रतीक्षा गेट तक हमें छोड़ने आई थी। आज पहली बार बेटी से बिछड़ने के आँसू सार्व जनिक रूप से ढुलक गए थे। मैंने झट से रूमाल निकाल कर उन्हें संभाल लिया, ताकि बेटी भी अपनी डबडबाई आँखों से झरने वाले मोतियों को संभाल ले। स्थिति ऐसी थी कि वह अपने लगाव को छुपा रही थी और मैं अपनी ममता को ढाढ़स बँधा रही थी।

गाड़ी बहुत आगे निकल आई थी, लेकिन बेटी से जुड़ी डोर हमारे साथ-साथ ही चल रही थी। उसे पहली बार छोड़कर आये थे। आज ऐसे लग रहा था कि समय का चक्र घूम कर अचानक वहीं आ गया है, जहाँ मेरे माता-पिता मेरे कॉलेज के गेट पर मुझसे बिछुड़े थे। फर्क केवल इतना है कि उस दिन मैं कॉलेज के गेट पर थी और मेरे माँ और पापा बाहर थे। लेकिन आज हमारी प्रतीक्षा गेट पर खड़ी थी और हम पति-पत्नी बाहर थे। उस दिन मेरे पापा ने भी वही कहा था, जो आज प्रतीक्षा के पापा ने कहा, 'जाओ जल्दी से अपने कमरे में जाओ, शायद वे नहीं चाहते थे कि प्रतीक्षा उनके आँसुओं को देखे, और कमजोर पड़ जाए।'

- वरिष्ठ प्रबंधक (मानव संसाधन)
राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड
विशाखपट्टणम - 530031
मोबाइल: +91 9701347102

आओ भाषा सीखें

करोनावाइरस के नाम से आज पूरा विश्व परिचित है। चीन से निकले इस वाइरस से विश्व के लगभग सभी देश संक्रमित हुए हैं। हालाँकि इटली, ईरान, दक्षिण कोरिया, अमेरीका, फ्रांस, जापान देशों पर इसका अधिक असर दिख रहा है। इस वाइरस को खत्म करने के लिए पूरे विश्व में कई प्रयोग किये जा रहे हैं। यदि कुछ सावधानियाँ बरती जाती हैं तो इस वाइरस के प्रभाव से बचा जा सकता है। हमारा प्रयास है कि 'सुगंध' के इस अंक के माध्यम से उन्हीं सावधानियों का विवरण दें, जिनसे पाठक लाभान्वित हों।

रीना : अरे वाह मीना! सुना है सिंगापुर जा रही हो?
రీనా : అరే వాహ్ మీనా! సునా హై సింగాపుర్ జా రహీ హెూ?
రీనా : అరే మీనా! సింగపూర్ వెళ్తున్నావట కదా?
रीना : अरे मीना! सिंगपूर वेल्तुन्नावट कदा?
Reena : Hi Meena! I heard that you are going to Singapore.
मीना : नहीं यार! करोना वाइरस ने सिंगापुर जाने का सपना ही तोड़ दिया।
మీనా : నహీఁ యార్! కరోనా వైరస్ నే సింగాపుర్ జానే కా సప్నా హీ తోడ్ దియా.
మీనా : లేదే! కరోనా వైరస్ సింగపూర్ వెళ్ళాలన్న నా కలను తుంచేసింది.
मीना : लेदे! करोना वैरस सिंगपूर वेल्लालन्न ना कलनु तुंचेसिंदि।
Meena : No, Corona Virus has spoiled my dream of going Singapore.
रीना : सच में यार! इस वाइरस ने पूरी दुनिया को हिला डाला।
రీనా : సచ్ మేఁ యార్! ఇస్ వైరస్ నే పూరీ దునియా కో హిలా డాలా.
రీనా : నిజమేనే! ఈ వైరస్ మొత్తం ప్రపంచాన్ని కుదిపేసింది.
रीना : निजमेने! ई वैरस मोत्तम् प्रपंचान्नि कुदिपेसिंदि।
Reena : Yes, it is true that this virus has wrecked havoc in the world.
मीना : रीना! दरअसल इस वाइरस के प्रभाव से बचा जा सकता है। बस थोड़ी सी सावधानी बरतनी होगी।
మీనా : రీనా! దర్అసల్ ఇస్ వైరస్ కే ప్రభావ్ సే బచా జా సక్తా హై. బస్ థోడీ సీ సావధానీ బరత్నీ హెూగీ.
మీనా : రీనా! నిజానికి ఈ వైరస్ ప్రభావం నుంచి బయటపడవచ్చు. కాకపోతే కొన్ని జాగ్రత్తలు పాటించవలసి ఉంటుంది.
मीना : रीना! निजानिकि ई वैरस प्रभावम् नुंचि बयटपडवच्चु। काकपोते कोन्नि जाग्रत्तलु पाटिंचवलसि उंटुंदि।
Meena : Reena, in fact there is way to save from effect of this virus. Little bit care is required to be taken.
रीना : जैसे हाथ मिलाकर किसी का अभिवादन न करें।
రీనా : జైసే హాథ్ మిలాకర్ కిసీ కా అభివాదన్ న కరేఁ.
రీనా : ఎలా అంటే కరచాలనంతో ఎవరినీ పలుకరించకూడదు.
रीना : एला अंटे करचालनंतो एवरिनी पलुकरिंचकूडदु।
Reena : Like, avoid greeting anyone with hand shaking.
मीना : इसलिए कि जब हम हाथ से चेहरा, आँख, नाक, मुँह छूते हैं तो इस वाइरस का संक्रमण हो सकता है।
మీనా : ఇస్‌లియే కి జబ్ హమ్ హాథ్ సే చెహరా, ఆంఖ్, నాక్, ముహ్ ఛూతే హైఁ తో ఇస్ వైరస్ కా సంక్రమణ్ హెూ సక్తా హై.
మీనా : ఎందుకంటే మనము చేతులతో ముఖము, కళ్ళు, ముక్కు, నోరు ముట్టుకున్నప్పుడు వైరస్ సోకవచ్చు.
मीना : एंदुकंटे मनमु चेतुलतो मुखमु, कल्लु, मुक्कु, नोरु मुट्टुकुन्नप्पुडु वैरस सोकवच्चु।
Meena : Because, when we touch our face, eyes, nose, mouth with hands, then the virus can be transmitted.
रीना : यही नहीं, कहीं बाहर से आते हैं तो कम से कम **20** सेकंड तक साबुन और पानी से अपने हाथ साफ करना है।
రీనా : యహీ నహీఁ, కహీఁ బాహర్ సే ఆతే హైఁ తో కమ్ సే కమ్ 20 సెకండ్ తక్ సాబున్ ఔర్ పానీ సే అప్నే హాథ్ సాఫ్ కరేఁ.
రీనా : అంతే కాదు, బయటికి వెళ్ళి వచ్చినప్పుడు 20 సెకన్ల వరకు చేతులు సబ్బు, ఇంకా నీళ్ళతో శుభ్రం చేసుకోవాలి.
रीना : अंते कादु, बयटिकि वेल्लि वच्चिनप्पुडु **20** सेकन्ल वरकु चेतुलु सब्बु, इंका नील्लतो शुभ्रम् चेसुकोवालि।
Reena : Not only that, we have to wash our hands with soap and water till 20 seconds after reaching home from outside.
मीना : और यदि साबुन, पानी न मिले तो सैनिटाइजर का उपयोग करें।
మీనా : ఔర్ యది సాబున్, పానీ న మిలే తో సేనిటైజర్ కా ఉపయోగ్ కరేఁ.

మీనా : ఒకవేళ సబ్బు, ఇంకా నీళ్ళు దొరక్కపోతే సేనిటైజర్ ని ఉపయోగించాలి.
मीना : ओकवेल सब्बु, इंका नील्लु दोरक्कपोते सेनिटाइजर नि उपयोगिंचालि।
Meena : If soap and water is not available, sanitizer should be used.
रीना : सरदर्द या जुकाम हो तो ठीक होने तक घर से बाहर न निकलें।
రీనా : సర్‌దర్ద్ యా జుకామ్ హెూ తో ఠీక్ హెూనే తక్ ఘర్ సే బాహర్ న నికలేం.
రీనా : తలనొప్పి, ఇంకా జలుబు ఉన్నట్లైతే నయమయ్యేంత వరకు ఇంట్లోనే ఉండాలి.
रीना : तलनोप्पि, इंका जलुबु उन्नट्लैते नयमय्येंत वरकु इंट्लोने उंडालि।
Reena : If you suffer with headache and cold, you should not go outside till you recover.
मीना : बुखार, खाँसी या साँस लेने में दिक्कत होती हो तो बिना देर किये अस्पताल में दिखा लें।
మీనా : బుఖార్, ఖాంసీ యా సాంస్ లేనే మేం దిక్కత్ హెూతీ హెూ తో బినా దేర్ కియే అస్పతాల్ మే దిఖా లేం.
మీనా : జ్వరం, దగ్గు లేదా ఊపిరాడడం కష్టంగా ఉంటే వెంటనే ఆసుపత్రిలో చూపించుకోవాలి.
मीना : ज्वरम्, दग्गु लेदा ऊपिराडडम् कष्टंगा उंटे वेंटने आसुपत्रिलो चूपिंचुकोवालि।
Meena : If you suffer with fever, cough or breathing problem, you should go to the hospital immediately .
रीना : और खाँसते समय टिश्यू पेपर या रुमाल से अपनी नाक और मुँह ढक लें।
రీనా : ఔర్ ఖాంస్‌తే సమయ్ టిష్యూ పేపర్ యా రుమాల్ సే అప్‌నీ నాక్ ఔర్ ముహ్ ఢక్ లేం.
రీనా : ఇంకా దగ్గేటప్పుడు టిష్యూ పేపర్ గాని, రుమాలు గాని ముక్కు, ఇంకా నోటికి అడ్డం పెట్టుకోవాలి.
रीना : इंका दग्गेटप्पुडु टिश्यू पेपर गानि, रुमालु गानि मुक्कु, इंका नोटिकि अड्डम् पेट्टुकोवालि।
Reena : And also while coughing you should cover your nose and mouth with tissue paper or handkurchief.
मीना : किसी को सर्दी, खाँसी या बुखार हो तो उससे कम से कम छः कदम दूरी रखें।
మీనా : కిసీ కో సర్దీ, ఖాంసీ యా బుఖార్ హెూ తో ఉస్‌సే కమ్ సే కమ్ ఛే కదమ్ దూరీ రఖేం.
మీనా : ఎవరికైనా జలుబు, దగ్గు, ఇంకా జ్వరం ఉన్నట్లైతే వాళ్ళకి కనీసం ఆరడుగుల దూరంలో ఉండాలి.
मीना : एवरिकैना जलुबु, दग्गु, इंका ज्वरम् उन्नट्लैते वाल्लकि कनीसम् आरडुगुल दूरंलो उंडालि।
Meena : If anyone is suffering with cold, cough and fever, you should maintain at least 6 feet distance from them.
रीना : वैसे यदि घर और आस-पास की जगह साफ रखते हैं तो ज्यादातर बीमारियाँ खत्म हो जाती हैं।
రీనా : వైసే యది ఘర్ ఔర్ ఆస్-పాస్ కీ జగహ్ సాఫ్ రఖ్‌తే హైం తో జ్యాదాతర్ బీమారియాం ఖత్మ్ హెూ జాతీ హైం.
రీనా : నిజానికి ఇల్లు, పరిసరాలు శుభ్రంగా ఉంచుకున్నట్లైతే చాలా జబ్బులు తగ్గిపోతాయి.
रीना : निजानिकि इल्लु, परिसरालु शुभ्रंगा उंचुकुन्नट्लैते चाला जब्बुलु तग्गिपोतायि।
Reena : In fact if you keep your house and surroundings clean, then lots of diseases can be cured.
मीना : यह बात तो सही है। थोड़ी सी सावधानी बरतेंगे तो वाइरस संक्रमण के खतरे से बच सकेंगे।
మీనా : యహ్ బాత్ తో సహీ హై. థోడీ సీ సావధానీ బర్‌తేంగే తో వైరస్ సంక్రమణ్ కే ఖత్‌రే సే బచ్ సకేంగే.
మీనా : నిజమే, కొన్ని జాగ్రత్తలు తీసుకుంటే వైరస్ బారిన పడకుండా బయటపడవచ్చు.
मीना : निजमे, कोन्नि जाग्रत्तलु तीसुकुंटे वैरस बारिन पडकुंडा बयटपडवच्चु।
Meena : It's true, if you take some precautions you can save yourself from getting infected with this virus.
रीना : तो चलो, हम अपने आस-पास के लोगों को भी जागरूक करें।
రీనా : తో చలో, హమ్ అప్‌నే ఆస్-పాస్ కే లోగోం కో భీ జాగరూక్ కరేం.
రీనా : అయితే పద, మనం మన చుట్టుపక్కల వాళ్ళకు అవగాహన కల్పిద్దాం.
रीना : अइते पद, मनम् मन चुट्टुपक्कल वाल्लकु अवगाहन कल्पिद्दाम्।
Reena : Then come, let’s make awareness amongst the people around us.
मीना : ठीक है, चलो।
మీనా : ఠీక్ హై, చలో.
మీనా : సరే పద.
मीना : सरे पद।
Meena : Ok, let's go.

जरा गौर करें

वह माँ के गर्भ में था तभी उसके पिता की मृत्यु हो गई। गरीबी इतनी कि उसे अपने पिता का फोटो देखना भी नसीब नहीं हुआ। लोगों ने माँ पर दबाव बनाया कि 'गर्भपात करा दो। एक लड़का और एक लड़की तो हैं ही तुम्हारे। क्या करोगी एक और बच्चा पैदा करके। कैसे पालोगी इतने बच्चों को?' पर माँ ने उसे जनने का निर्णय लिया। उसे जिंदा रखने का फैसला किया।

गरीबी का आलम यह कि एक वक्त का खाना मिलना भी बहुत मुश्किल था। गन्ने के खरपतवार से बनी झोंपड़ी में दस सदस्यों का परिवार गुजर-बसर करता था। उसके बचपन में चारों ओर अंधेरा ही अंधेरा था। उसके आगे-पीछे अज्ञान, अंधविश्वास, सामाजिक कुरीतियों एवं अनेक प्रकार के व्यसनों का बोलबाला था। माँ एक मजदूरनी थी। परिवार बड़ा था। दिनभर की मजदूरी दस रुपए होती थी। उससे क्या होता... जरूरतें कैसे पूरा होतीं? परिवार के सामने बड़ा प्रश्न था।

इसलिए उसकी माँ देशी शराब बेचनी शुरू कर दी। उस समय उसकी उम्र बहुत कम रही होगी। जब कभी भूख से वह तड़पता था तो रोना शुरू कर देता था। इससे ग्राहकों की सेवा में खलल होती थी। ऐसे में कभी-कभी ग्राहक ही शराब की दो-चार बूँदें उसके मुँह में डाल देते थे। क्योंकि उसके लिए दूध तो सपना था और उसे नशा हो जाता था, फिर वह नशे में सो जाता था। दादी तो सुलाने या चुप कराने के लिए अक्सर मजबूरी में यही उपाय करती थी। फिर तो कुछ ही दिनों में शराब के बूँदों की आदत सी पड़ गई। उसके व उसके परिवार के अन्य सदस्यों की छोटी-मोटी बीमारियों में शराब ही दवा थी।

जब वह थोड़ा बड़ा हुआ तो लोग उसे चखना लाने के लिए भेजने लगे। इस पर खुश होकर कुछ पैसे उसे भी देते। इन पैसों से वह किताबें खरीद लेता था। वह बहुत मन लगाकर पढ़ता था। इसीलिए तो दसवीं में उसे **95** प्रतिशत और इंटरमीडिएट में **90** प्रतिशत अंक मिले। लेकिन लोगों की धारणा थी कि यह भील का लड़का आगे चलकर शराब ही बेचेगा। एक आदमी ने तो यहाँ तक कह दिया कि 'तुम अपनी माँ से कहना कि पढ़-लिखकर क्या करेगा, जब आगे चलकर शराब ही तो बेचेगा।'

माँ, कमलाबहन को यह बात बहुत नागवार गुजरी। उन्होंने कहा कि 'मैं अपने बेटे को डॉक्टर-कलेक्टर बनाऊँगी।' लेकिन उन्हें तो संघ लोकसेवा आयोग के बारे में कुछ पता भी नहीं था। लेकिन माँ का विश्वास अटल था। उन्होंने अपनी ओर से कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी और विश्वास एवं कर्म के बल पर फिर शुरू हो गई सफलता की एक नई कहानी।

यह कहानी किसी और की नहीं बल्कि महाराष्ट्र राज्य के नंदूरबार जिले के जिलाधिकारी डॉ राजेंद्र भारुड़ की है। डॉ भारुड़ तमाम सामाजिक व आर्थिक बाधाओं के बावजूद एक होनहार विद्यार्थी रहे हैं। वे अपनी माँ की भावनाओं के अनुरूप डॉक्टर भी बने और कलेक्टर भी।

उन्होंने अपनी डॉक्टरी की पढ़ाई मुंबई के सेठ जी एस लाल मेडिकल कॉलेज से की। मेडिकल में उनका दाखिला सन् **2006** में मेरिट के आधार पर हुआ था। **2011** में उन्हें सर्वश्रेष्ठ छात्र की उपाधि से विभूषित किया गया। मेडिकल की पढ़ाई पूरा करने के बाद ही उन्होंने संघ लोकसेवा आयोग का फार्म भरा और परीक्षा पास कर ली।

उनकी माँ कमलाबहन को तब यह पता नहीं था कि उनके बेटे ने उनके सपनों को साकार कर दिया है, जब तक कि गाँव के लोग, सरकारी अफसर और नेता लोग उन्हें बधाइयाँ देने उनके पास नहीं आने लगे। जब लोग कमलाबहन को बधाइयाँ दे रहे थे तो कमलाबहन कुछ बोल नहीं पा रही थी, सिर्फ आँखों के आँसू ही उनके उद्गार को बयान कर रहे थे। जिलाधिकारी महोदय डॉ राजेंद्र भारुड़ भी अपनी सफलता के लिए अपनी माँ के विश्वास को मुख्य कारण मानते हैं।

'सुगंध' का हिंदी समर्पण, चिंतन और अन्वेषण वाक्य विन्यास अद्भुत है। उत्तरी व दक्षिणी दो विपरीत भाषाई ध्रुवों के हिंदी साहित्य के हवाले से एकीकरण का सार्थक प्रयास करता विशेषांक संग्रहणीय दस्तावेज जैसा लगा। कोटिश: बधाइयाँ। काश! यह सुगंध पुन: त्रैमासिक मिलने लगे...। अंक के सभी आलेख जानकारीपूर्ण व पठनीय हैं। परंतु डॉ भीम सिंह, डॉ सी जयशंकर बाबु, डॉ सी सत्यलता के आलेख विशेष अच्छे और महत्वपूर्ण लगे। दक्षिण भारत को समर्पित अंक में उत्तरी सामग्री के चयन में सुंदर व प्रभावी संतुलन अंक के संपादन कौशल की अतिरिक्त विशेषता है। इस भाग में राजकुमार सिंह की कहानी और आनंद पांडेय 'तन्हा' की गजलें सुख देती हैं। प्रोफेसर ऋषभ देव शर्मा की कविताएँ चिंतन को आयाम देती है।

- *डॉ राजेन्द्र तिवारी,* कानपुर

पत्रिका के सृजनात्मक स्तंभ के लेख एक से बढ़कर एक हैं। स्वाधीनता आंदोलन और साहित्य में श्रीराम परिहार का लेख सारगर्भित व ज्ञानपूर्ण है। लघुकथाएँ अच्छी लगीं। बाल-सुगंध में गीतांजली, काव्या, ऋषिता, छाया दीप्ति की रचनाएँ प्रेरणादायक लगीं। कविताओं व कहानियों ने प्रभावित किया। मानक स्तंभ, संस्थान के कार्यकलाप रंगीन छायाचित्रों के साथ खूबसूरत एवं मनमोहक लगे और प्रस्तुति दिल को भा गई। संगीत सरिता स्तंभ के लेखक को बधाई। अध्यात्म में 'वैराग्य' धर्म दर्शन के प्रति चिंतन हेतु प्रेरित किया। आओ भाषा सीखें हमें खूब अच्छा लगा। प्रतीकात्मक ही सही... संपादकीय से राष्ट्रप्रेम और राष्ट्रवाद की अवधारणाओं में अंतर को जानने का अवसर मिला, वहीं अपनी भाषा के प्रति प्रेम को प्रदर्शित किया असीम बधाई।

- *श्री छगन लाल नागवंशी,* भिलाई

आपके संपादकीय 'लोकरंजन से विश्व रंजन तक' ने नॉस्टेलजिक कर दिया। मध्य प्रदेश के मेरे पैतृक गाँव सनावद में हर साल कार्तिक मास में मेला लगता था, उसकी यादें ताजा हो गई। हम लड़कियों/महिलाओं को पूरे वर्ष में सिर्फ वहीं चाट खाने को मिला करती थी। ऊर्जा केंद्रित इस अंक की सामग्री वैज्ञानिक जानकारी से परिपूर्ण है। सभी लेखकों, कवियों का हार्दिक अभिनंदन। दक्षिण भारत के स्वतंत्रता संग्राम, लोक साहित्य, हिंदी के विकास, व्यंजन तथा संस्कृति पर केंद्रित अप्रैल-सितंबर का अंक प्रशंसनीय ही नहीं, अपितु संग्रहणीय भी हो गया है।

- *सुश्री क्रांति कनाटे,* वड़ोदरा

पत्रिका में समाहित जानकारियाँ रोचक व ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ट चित्ताकर्षक तथा मोहक है। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए यह पत्रिका पूर्णतया सहायक है। पत्रिका को इस रूप में सहेजने और सँवारने के लिए संपादन मंडल बधाई के पात्र है।

- *श्री द्वैपायन भट्टाचार्य,* बिज एंड रूफ कंपनी (इंडिया)लिमिटेड

'सुगंध' का सुरुचिपूर्ण अंक प्राप्त हुआ। दक्षिण भारत के विविध पक्षों को प्रस्तुत करनेवाले ज्ञानवर्धक लेख पढ़कर बहुत अच्छा लगा। सभी लेख एक से बढ़कर एक हैं। कहानियाँ और लघुकथाएँ मर्मस्पर्शी और प्रेरक हैं। कविताएँ मनभावन हैं। स्थाई मानक स्तंभ - आओ भाषा सीखें तथा जरा और गौर करें अद्वितीय हैं। संपादकीय प्रेरक व संपादन प्रशंसनीय है।

- *श्री विष्णु वर्मा,* अयोध्या

दक्षिण भारत की कला-संस्कृति, लोक-जीवन शैली और आचार व्यवहार से सराबोर गृह पत्रिका 'सुगंध' की प्रति प्राप्त हुई। प्रेषण हेतु धन्यवाद। पत्रिका का अवलोकन करने पर मैंने अनुभव किया कि यह वास्तव में रोचक रचनाओं और आलेखों से परिपूर्ण एक संग्रहनीय अंक है, जिसे हर कोई सहेजकर रखना चाहेगा, पत्रिका का मुखपृष्ठ, चित्रांकन और प्रस्तुतीकरण सराहनीय है।

मुझे आशा ही नहीं, अपितु पूर्ण विश्वास है कि राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड भविष्य में भी इसी प्रकार से ज्ञानवर्धक, मनोरंजक और विविध विषयों पर आधारित आलेखों से युक्त अपनी इस गृह पत्रिका का प्रकाशन जारी रखेगा।

- *डॉ आर एस झा,* एस ई सी एल

सुगंध का सितंबर अंक एक लंबे अंतराल के बाद मिला। विश्वास नहीं हुआ। मैं सोचती रही कि अंक मुझ तक नहीं पहुँच रहे हैं। अंक का मिलना मेरी रचना के साथ सुखद रहा। आभारी हूँ। इस अंक की कहानी 'कृष्णचूड़ा' खास है। प्रोफेसर ऋषभदेव जी की कविता 'घर बसे हैं' अनुपम है, सत्य के करीब है। बस इतनी ही अभी पढ़ पाई हूँ। अगले अंक की प्रतीक्षा रहेगी।

- *श्रीमती सुधा गोयल,* बुलंदशहर

भारतीय संस्कृति की मूल भावना को दर्शाते हुए 'भारत की एकता एवं अखंडता में दक्षिण भारत का योगदान' पर लेख केरल के लोक रंग का विस्तारपूर्वक वर्णन, आंध्र के लोकगीतों पर आधारित साहित्य रचना बहुत रोचक एवं ज्ञानवर्धक है। साथ ही प्रोफेसर ऋषभदेव शर्मा की कविताएँ पठनीय एवं अन्य कहानियाँ संग्रहणीय हैं। आशा करता हूँ कि ' सुगंध' के आगामी अंकों में भी विभिन्न विषयों पर रोचक जानकारियाँ हासिल करने का अवसर मिलेगा। उत्कृष्ट कार्य के लिए आपकी पूरी टीम बधाई के पात्र है।

- *श्री भारत भूषण,* गोवा

हिंदी पत्रिकाओं का प्रकाशन वास्तव में हिंदी के प्रति कर्मचारियों में जागरूकता पैदा करने का एक प्रभावशाली उपाय है। प्रकाशित सामग्री से देश की वैविध्यपूर्ण संस्कृति के महत्व को इंगित करते हुए दक्षिण भारत की कला-संस्कृति, लोक-जीवनशैली एवं आचार-व्यवहार से जनमानस को रूबरू कराने का सार्थक प्रयास किया गया है। इसके लिए पूरी टीम को बधाई।

- *श्री संजीव कुमार शर्मा,* नई दिल्ली

इस अंक को आपने दक्षिण अंक घोषित भले ही न किया हो, लेकिन यह अपने मुखपृष्ठ की अल्पना-कल्पना से स्वत: ही दक्षिण का होने की घोषणा कर रहा है एवं दक्षिण भारत की संस्कृति, सभ्यता, भाषा, धर्म-अध्यात्म, लोकगीत, लोकनाट्य, लोक-उत्सव, लोकसंस्कृति, व्यंजन, शासन आदि के रंग-बिरंगे फूलों से निर्मित एक मनमोहक दक्खिनी गुलदस्ता है। एक तरह से पाठक कृष्ण को परोसा गया बावन-भोग है।

अंक के लेखों को पढ़कर लगा, इस बार की ज्ञान संस्कृति के यज्ञ में दक्षिण भारत के विश्वविद्यालयों, हिंदी विद्वान प्रोफेसरों ने अधिक आहुतियाँ अर्पित की हैं। एक से बढ़कर एक लेख हैं। इन सभी विद्वान लेखकों को अकिंचन की ओर से विशेष बधाई। डॉ भीमसिंह, डॉ सी जयशंकर बाबु, डॉ कृष्णकुमार पासवान, डॉ डी सत्यलता के लेखों मे उनकी विद्वता और शोधपूर्ण विवेचन झलकते हैं। डॉ गुर्रमकोंडा नीरजा ने अपने लेख में तेलंगाना राज्य में देवी पूजन की प्रथा का सांगोपांग वर्णन किया है तो वहीं विगुल्ल बाबु के लेख से हमें निजाम के शासन की परिस्थितियों एवं स्वतंत्रता की लड़ाई की सूक्ष्मता से जानकारी मिलती है। डॉ रश्मिशील का लेख 'नकटौरा' में विषयवस्तु के तकाजा के अनुरूप काफी विस्तार से समझाया गया है। उत्तर भारत में इसे स्वांग या खोरिया भी कहते हैं। प्रोफेसर ऋषभदेव शर्मा की कविताओं ने जितना ही खुश किया, डॉ आनंद पाण्डेय तनहा की गजलों ने उतना निराश।

- *श्री ओम प्रकाश पाण्डेय 'मंजुल',* पीलीभीत

'सुगंध' का मुखपृष्ठ आकर्षक, संपादकीय चिंतनपूर्ण और 18 वर्षो की यात्रा सराहनीय है। दक्षिण भारत की बहुरंगी संस्कृति से परिचय कराने वाली यह पत्रिका भारत की एकता और अखंडता के लिए बहुत ही उपयोगी है। डॉ भीमसिंह का लेख भी उसी दिशा में संकेत करता है। डॉ नाथन के लेख को पढ़कर मुँह में पानी आ गया। हालाँकि दक्षिण का व्यंजन चखने का अवसर नहीं मिला। इस लेख से पता चला कि बंदरु लड्डू विदेशियों तक को पसंद है।

- *श्री ऋषि मोहन श्रीवास्तव,* ग्वालियर

श्रीमती वी सुगुणा, श्री वी अप्पाजी कुमार के तकनीकी आलेख बहुत ही जानकारीपूर्ण व शोधपूर्ण हैं। अन्य रचनाकारों ने अपने सशक्त रचना कौशल का परिचय दिया है। पत्रिका में तकनीकी आलेखों की भाषा में प्रवाह और सरलता का प्रयोग हुआ है, जो किसी भी संपादक के लिए अनुकरणीय है।

- *डॉ राजनारायण अवस्थी,* हैदराबाद

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड के गठन दिवस के अवसर पर
वाइजाग स्टील द्वारा आयोजित वाकथॉन

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस समारोह 2020 के अवसर पर अतिथिगण द्वारा दीप-प्रज्वलन

इस्पात गलन शाला-2 : एक अवलोकन

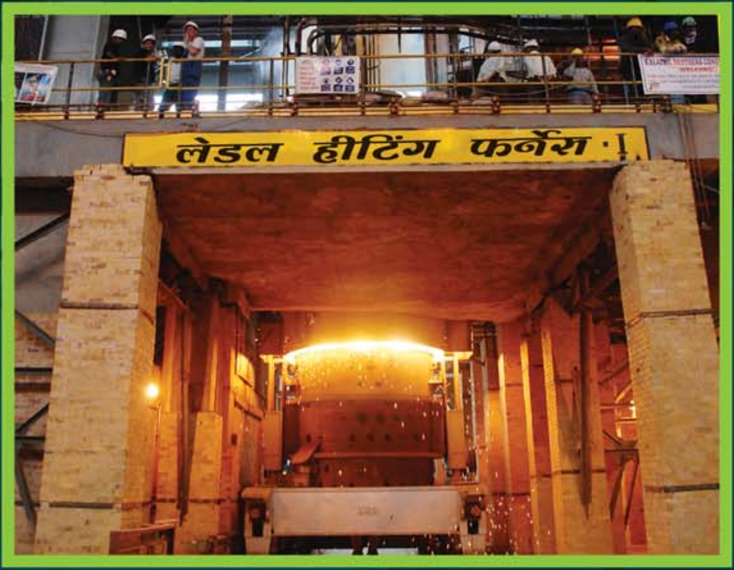

इस्पात गलन शाला-2 की विशेषताएँ

- तीन कन्वर्टर क्षमता 150 टन प्रत्येक
- दो लेडल हीटिंग फर्नेस
- एक ट्विन लेडल हीटिंग फर्नेस
- एक 6-स्ट्रैंड कांबिकॉस्टर (कंटिन्युअस बिल्लेट-कम-राउंड कॉस्टर)
- एक 5-स्ट्रैंड कांबिकॉस्टर (कंटिन्युअस बिल्लेट-कम-राउंड कॉस्टर)
- दो 6-स्ट्रैंड बिल्लेट कॉस्टर
- हॉट मेटल डीसल्फराइजेशन प्लांट (HMDP)
- आर एच डीगैसर